# सरस्वती सिरीज़

# रूपान्तर

दस आना

p Rs. a. p.

cat- 25030

@ 11-12-12

सरस्वती-सिरीज़ नं० ४७

Roopanter

# रूपान्तर

kanti chandramadhs.

कान्तिचंद्र सौनरिक्सा, बी० ए०



Indian press
prayag

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

# सरस्वती-सिरीज़

**स्थायी परामर्शदाता**—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिका-प्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्यौहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी; डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी; डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश-प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्र-नाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारा-यण चतुर्वेदी; रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत; पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्या-सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'; डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि; इत्यादि।



रहस्य-रोमांच

# रूपान्तर

अँगरेज़ी साहित्य के "प्रिंस डार्लिंग" स्टीवेन्सन की अमर कहानी—डा० जेकिल और मि० हाइड का छायानुवाद।

## कान्तिचंद्र सौनरिक्सा, बी० ए०

Printed and Published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd. Allahabad.

१

## वह दरवाज़ा

मिस्टर अटरसन बड़ी रूखी तबियत के आदमी थे। रूखापन उनके चेहरे से टपकता था। कभी किसी ने उन्हें मुस्कराते नहीं देखा। बातचीत करते थे तो बहुत कम और वह भी रूखी-रूखी, जी उकता देनेवाली। भावुकता और सरसता तो उन्हें छू तक नहीं गई थी। वे लम्बे और दुबले-पतले थे, मैले-कुचैले रहते थे। इतना सब होते हुए भी न जाने क्यों वे अच्छे लगते थे। जब वे अपने यार-दोस्तों में मिलकर बैठते और जी भरकर शराब पीते, तब उनकी आँखों में जैसे मानवता साकार होकर प्रति-बिम्बित हो जाती थी, उनमें चमक आ जाती थी। कुछ विशेषता उनमें थी अवश्य. जो उनकी बातचीत में तो व्यक्त नहीं होती थी, किन्तु उनके नेत्रों की मौनता में ही चमक उठती थी। परन्तु इससे भी अधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति होती थी उस विशेषता की उनके कार्यों में, जहाँ वह जैसे बोलने लगती थी। स्वयं अपने प्रति वे बड़े कठोर और गम्भीर थे। अंगूरी शराब पीने को मन होता, तो अकेले में जिंजर बियर पीकर ही सन्तोष कर लेते थे; और यद्यपि थियेटर देखने का उन्हें बहुत शौक़ था, फिर भी इधर बीस बरस से उन्होंने किसी थियेटर-घर में भूठमूठ को भी पैर नहीं रक्खा था।

वे वकालत करते थे। उनके हृदय में अपने लिए तो नहीं किन्तु दूसरों के लिए बहुत सहनशीलता और क्षमा थी। चाहे कुछ भी हो, अपराधियों को सज़ा देने की अपेक्षा वे बचाना अधिक उचित समझते थे और इसके लिए सहायता करने को वे सदैव प्रस्तुत रहते थे।

वे प्रायः कहा करते थे—"मैं किसी से कुछ कहना नहीं चाहता, किसी के काम पर रोक नहीं लगाना चाहता, जिसका जो जी चाहे सो करे—चाहे मेरा सगा भाई ही क्यों न हो, मेरे जान वह अपने आप जहन्नुम चला जाय!"

मिस्टर अटरसन अपनी इस बात के लिए बदनाम थे और पतनोन्मुख लोगों के जीवन पर उनका कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता था। किंतु इन सब बातों की वकील साहब कोई परवा भी नहीं करते थे।

इस प्रकार का रुख़ अख़्तियार किये रहना केवल मिस्टर अटरसन के लिए ही सम्भव था; क्योंकि वे अपने मन की बात को प्रकट नहीं करते थे। और उनके इसी स्वभाव की अच्छाई पर उनकी मित्रताएँ बनती और टिकी रहती थीं। सुअवसर द्वारा बने-बनाये मित्र स्वीकार कर लेना अच्छे आदमी की पहचान है। जिस अवसर पर जैसा भी व्यक्ति आपके सम्पर्क में आये, आप उसे उसी रूप में अपना लीजिए और किसी क़दर उसके अनुकूल बन जाइए—वकील साहब का यही सिद्धान्त था। यही कारण था कि उनकी एक बार की जुड़ी मित्रता फिर कभी टूटती न थी। उनकी मित्र-मण्डली में थे उनके अनेक सगे रिश्तेदार और वे लोग जिनसे उनका बहुत पुराना परिचय था। उनका स्नेह एकाएक नहीं फूट पड़ता था। अमरबेल की तरह ही वह समय के साथ बढ़ता था।

नगर के सुप्रसिद्ध व्यक्ति मिस्टर रिचार्ड ऐनफ़ील्ड से मिस्टर अटरसन की अटूट प्रगाढ़ मित्रता थी। मिस्टर ऐनफ़ील्ड उनके दूर के नातेदार भी होते थे। परन्तु बहुत से लोगों के लिए यह एक पहेली थी, एक समस्या थी कि आख़िर इन दोनों व्यक्तियों में मित्रता हो कैसे गई। रुचि-अरुचि, स्वभाव, कुछ भी तो एक-सा नहीं है। एक दूसरे से बिलकुल भिन्न, इनकी मित्रता का आधार क्या है?—लोग सोचा करते थे। इतवार के दिन मिस्टर रिचार्ड और मिस्टर अटरसन साथ-साथ टहलने जाते थे। लोग देखते थे कि दोनों गुमसुम चुपचाप साथ चले जा रहे हैं, न बात करते हैं, न चीत! फिर भी लगते हैं बड़े गहरे दोस्तों

की तरह, और ऊपर से तारीफ़ यह थी कि इतवार के दिन अपने टहलने के इस प्रोग्राम को दोनों जने एक न्यामत समझते थे, जिसे छोड़ना किसी मूल्य पर उन्हें स्वीकार नहीं था। इसके लिए—केवल इसी के लिए वे अपने ज़रूरी से ज़रूरी काम तक छोड़ देते थे।

इसी टहलने में एक बार वे दोनों लंदन की एक गली में जा पहुँचे। यह गली लंदन के एक बड़े कोलाहल-पूर्ण तथा व्यापार में व्यस्त बाज़ार के पिछवाड़े थी। गली तंग थी और प्रायः सुनसान पड़ी रहती थी, किन्तु शनीचर को उसमें पैंठ लगती थी और इस कारण वह कोलाहल से भर जाती थी। उस गली के रहनेवाले सब सुखी दिखाई देते थे और ऐसा मालूम पड़ता था कि वे इससे भी अधिक सुख की आशा में हैं; अपनी सप्ताह भर की आमदनी की बचत वे अपने को एक दूसरे से बढ़-चढ़कर दिखाने के लिए फ़ैशन बनाने में ख़र्च कर देते थे। यही कारण था कि वहाँ फ़ैशनेबिल सामान की दुकानें अधिक थीं। सजी-सजाई वे दुकानें मुस्कराती नवयुवतियों की तरह आकर्षित और आमंत्रित करती-सी लगती थीं। यहाँ तक कि इतवार के दिन भी जब कि दुकानों की चमचमाती सुन्दरता छुट्टी के कारण ढकी पड़ी रहती थी और बहुत कुछ फिर वही सुनसान छा जाता था, वह गली अपने पास-पड़ोस में ऐसी दमकती थी जैसे जङ्गल में आग। दुकानों की ताज़ी रँगी हुई खिड़कियाँ, साफ़ किये हुए खिड़कियों और किवाड़ों के शीशे तथा पीतल की चीज़ें और गली का समूचा साफ़-सुथरापन—ये सब तुरन्त ही राहगीर की आँखें अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें सुख-सा देने लगते थे।

उसी गली में पूरब की तरफ़ जाने पर एक कोना पड़ता था जहाँ दो दरवाज़े थे, और उनके बाद खुला हुआ एक छोटा-सा मैदान। बस, ठीक उसी जगह पर एक बड़े मकान का छज्जा निकला हुआ था। मकान दुमंज़िला था और उसमें खिड़की एक भी नहीं थी। नीचे की मंज़िल में सिर्फ़ एक दरवाज़ा था और दूसरी मंज़िल में एक सपाट मटमैली दीवार खड़ी दिखाई देती थी। इस सबसे यह प्रत्यक्ष था कि मकान

की देख-भाल और मरम्मत बरसों से नहीं हुई है। किवाड़ों में न तो कुंडी ही थी, और न घंटी ही, और उस पर चितकबरे दाग़-से पड़े थे। किवाड़ों पर सिगरेट पीनेवाले आवारे दियासलाइयाँ रगड़कर जलाते थे। सीढ़ियों पर छोटे लड़के छोटी-छोटी दूकानें रक्खे हुए थे। दीवार के पलास्तर को स्कूल के लड़कों ने चाकुओं से खरोंच डाला था। किन्तु लगभग पच्चीस बरस से मकान ख़राब करनेवाले इन सब लोगों का रास्ता बन्द करने और उसकी मरम्मत कराने के लिए कोई नहीं आया।

मिस्टर ऐनफ़ील्ड और वकील साहब गली के दूसरे किनारे पर थे, किन्तु जब इस मकान के सामने आये, तब मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने अपनी छड़ी उठाकर उसकी ओर संकेत करते हुए पूछा—

"क्या तुमने कभी इस दरवाज़े पर ध्यान दिया ?"

मिस्टर अटरसन ने कहा,—"हाँ हाँ।"

तब मिस्टर ऐनफ़ील्ड बोले—"इस दरवाज़े के बारे में मुझे एक अजीब कहानी याद है।"

"सच ?" मिस्टर अटरसन ने स्वर कुछ बदलकर कहा—"वह क्या ?"

"वह कहानी यों है कि" मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने कहना शुरू किया—"जाड़े की अँधेरी रात थी। तीन बज रहे थे। मैं कहीं से लौटकर आ रहा था। मैं शहर के एक ऐसे रास्ते में होकर आ रहा था जो बिल्कुल वीरान था और जहाँ टिमटिमाते लैम्पों के सिवाय और कुछ नज़र नहीं पड़ता था। एक सड़क के बाद दूसरी सड़क मैं पार किये चला जा रहा था। सारा शहर गहरी नींद में सो रहा था। और हर सड़क पर रोशनी हो रही थी, जैसे किसी जुलूस की तैयारी हो रही हो। लेकिन सभी सड़कें सुनसान थीं। मैं चलता चला गया, पर मेरा जी कुछ सुनने के लिए और, कम से कम, पुलिस के सिपाही को देखने के लिए बेचैन हो उठा; क्योंकि इनसे मुझे कुछ ढाढ़स बँधता और घबराहट कम होती। एकाएक मुझे दो मूर्तियाँ दिखाई पड़ीं—एक ठिगना आदमी पूरब की तरफ़ तेज़ क़दम से चला जा रहा था। और दूसरी एक आठ या दस

बरस की लड़की भरसक तेज़ी से गली के मोड़ की तरफ़ दौड़ी जा रही थी। इसलिए स्वाभाविक ही था कि वे दोनों गली के नुक्कड़ पर लड़ जाते। दोनों ने ज़ोर की टक्कर खाई। लड़की गिर पड़ी और चीख़ने लगी। आदमी उसके ऊपर होकर निकल गया; रुका नहीं और उसे वैसी ही चीख़ती-चिल्लाती छोड़ गया। मुझे उसका यह ढङ्ग आदमी का-सा नहीं, शैतान का-सा मालूम पड़ा। यह देखकर मैं उसकी तरफ़ भागा और उसकी गर्दन पकड़ ली। गर्दन पकड़े-पकड़े ही मैं उसे उस लड़की के पास ले आया, लेकिन तब तक वहाँ काफ़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। उस आदमी ने कोई आपत्ति नहीं की और बिल-कुल शांत रहा, लेकिन मेरी तरफ़ ऐसी टेढ़ी नज़र से देखा कि मेरे बदन से एकदम पसीना छूटने लगा। लड़की के पास जो लोग इकट्ठे हो गये थे, वे उसके घरवाले ही थे।

थोड़ी देर बाद ही डाक्टर भी आ गया जिसे लड़की के घरवालों ने बुला भेजा था। ख़ैर, लेकिन लड़की के बहुत चोट तो लगी नहीं थी, पर वह डर बहुत गई थी। ऐसा साबोन्स का कहना था; पर मामला वहीं ख़त्म नहीं हो गया।

वहाँ एक और बड़ी अजीब बात हुई। उस ठिगने आदमी को देखते ही मेरे मन में उसके लिए बड़ी घृणा पैदा हो गई थी, और इसी तरह लड़की के घरवालों के दिल में भी और यह स्वाभाविक ही था। लेकिन डाक्टर की सूरत मुझे कुछ लग गई। मामूली डाक्टरों की तरह ही वह रूखा-रूखा नीरस-सा था; देखने में बिलकुल साधारण रङ्ग का, लेकिन उसकी बोली में ऐडिनबर्ग की बोली का लहज़ा बहुत साफ़ सुनाई पड़ता था, और साथ ही वह बहुत जल्दी आवेश में भर जाता था। वह हमीं लोगों की तरह जब-जब उस ठिगने आदमी को देखता था, तब-तब वह जैसे उसे मार डालने के लिए व्यग्र हो उठता था। मैं जानता था कि साबोन्स के मन में क्या है, और वह भी जानता था कि मेरे मन में क्या है। पर, क्योंकि उस आदमी की जान तो ली नहीं जा सकती,

इसलिए कोई दूसरा तरीक़ा अपनाना था। हमने उससे कहा कि हम तुम्हारी इतनी बदनामी करेंगे, इतनी बदनामी करेंगे कि लन्दन के एक छोर से दूसरे छोर तक तुम बदनाम हो जाओगे। राह-चलते लोग तुम पर उँगली उठायेंगे। तुम्हारे दोस्त तुम्हारा साथ छोड़ देंगे! बाज़ार में तुम्हें सौदा मिलना बन्द हो जायगा।

इधर हम लोग उसे इस तरह कोंचे जा रहे थे, उधर औरतें उस पर चीलों की तरह झपटी पड़ रही थीं, जैसे उसकी बोटी-बोटी नोच डालना चाहती हों। अपनी ज़िन्दगी में आज से पहले कभी मैंने इतने लोगों को एक साथ किसी एक आदमी की लानत-मलामत करते नहीं देखा था। पर वह ठिगना आदमी इस भीड़ और गालियों की बौछार के बीच में बिल्कुल चुप अन्यमनस्क बना खड़ा था, जैसे बड़ी बहादुरी से सबका सामना कर रहा हो, और यह दिखा रहा हो कि मुझे तुम्हारे इन वारों की परवा नहीं है।

"अगर आप लोग इस दुर्घटना के कारण मुझसे कुछ झपटना चाहते हों, तब तो दूसरी बात है। मैं मजबूर हूँ। वैसे कोई भला आदमी जान-बूझकर तो किसी रास्ता-चलते को चोट पहुँचाता नहीं। कहिए, आप लोग क्या चाहते हैं?" ठिगने आदमी ने पूछा।

हम सबने मिलकर सलाह की और कहा—'इस लड़की के घरवालों को आप सौ पौंड दीजिए।" संभव था कि वह इस माँग को स्वीकार न करता, लेकिन उसने समझ लिया कि ये लोग परेशान किये बिना मानेंगे नहीं, इसलिए उसने हमारी माँग पूरी करके अपनी जान छुड़ाना ही ठीक समझा।

इसके बाद पौंड देने का सवाल उठा; सौ पौंड वह अपनी जेब में तो साथ लिये नहीं फिरता था, इसलिए उसके घर पर जाना ज़रूरी था। और जानते हैं आप वह हमें कहाँ ले गया?—इसी मकान पर।

फ़ौरन एक चाबी निकालकर उसने दरवाज़े का ताला खोला और अन्दर गया।

शीघ्र ही वह दस पौंड लेकर बाहर आया और शेष नब्बे पौंड के लिए कुट्स बैंक का एक 'बेयरर चेक' काट दिया और उस पर दस्तख़त कर दिये। दस्तख़त करने में उसने जो नाम लिखा, वह मैं जानते हुए भी अभी नहीं बतला सकता; क्योंकि मेरी कहानी की वह जान है। लेकिन इतना ज़रूर बतला सकता हूँ कि वह ऐसा नाम था जिसे सब लोग अच्छी तरह जानते थे और जो अक्सर छपता भी रहता था।

वह ठिगना आदमी देखने में तो बड़ा कड़ा जान पड़ता था; लेकिन उसके दस्तख़त अगर बनावटी नहीं थे, तो बहुत ख़ूबसूरत थे। और मैं कह ही तो बैठा -"यह सब काम मुझे जाली मालूम होता है; क्योंकि सुबह चार बजे कोई आदमी इस तरह एक कोठरी में घुसकर दूसरे आदमी के नाम का सौ पौंड का चेक लाकर नहीं दे सकता।"

किन्तु मेरे इस कहने का उस पर कोई असर नहीं पड़ा, वह जैसा का तैसा शान्तचित्त बना रहा और बड़ी सहूलियत के साथ बोला—"आप घबरायें नहीं। जब तक बैंक खुले, मैं आपके साथ रहूँगा और इस चेक को आपके सामने ही ख़ुद भुनाकर आपको दे दूँगा।"

मैं डाक्टर, लड़की के पिता और उस ठिगने आदमी को लेकर अपने घर लौट आया और सुबह तक सब लोग वहीं रहे।

दिन निकलने पर हम सब लोग नाश्ता करने के बाद बैंक गये। वहाँ काउंटर पर मैंने अपने हाथ से चेक देते हुए क्लर्क से कहा—"यह चेक मुझे सरासर जाली मालूम होता है।"

क्लर्क ने चेक को देखा और उसके दस्तख़तों को जाँचकर कहा—"नहीं, चेक बिलकुल असली है।"

और चेक भुन गया!

"छिः, छिः!" मिस्टर अटरसन ने कहा।

"तुम भी मेरी ही तरह सोचने लगते हो।" मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने कहा।

"हाँ, यह बहुत बुरी कहानी है; क्योंकि जिस आदमी से मेरा वास्ता पड़ा था, वह एकदम कम्बख़्त है और जिस आदमी के उस चेक पर

दस्तख़त थे, वह एकदम भला है और सुविख्यात भी और सबसे बुरी बात तो यह है कि वह तुम्हारे उन्हीं लोगों में से एक है, जिनके लिए तुम कहते फिरते हो कि वे दूसरों की भलाई किया करते हैं। मैं तो समझता हूँ कि यह सब छिपा-चोरी चौथ चलती है। हो सकता है कि कोई ईमानदार आदमी अपने जवानी के दिनों के शौक़ों का क़र्ज़ा किसी और आदमी के जरिए छिप-छिपकर चुका रहा हो। इसी लिए मैं उस एक ही दरवाज़ेवाले मकान को चौथ-घर कहता हूँ, यद्यपि उसका रहस्य इससे बिलकुल नहीं के बराबर ही प्रकट होता है।" मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने आगे चलकर कहा और फिर चुप होकर जैसे मन ही मन ख़ुश होने लगे।

किंतु एकाएक मिस्टर अटरसन के नये प्रश्न ने मिस्टर ऐनफ़ील्ड का ध्यान भङ्ग किया—"और तुम यह नहीं जानते थे, चेक भुनानेवाला उस घर में रहता भी है या नहीं?"

"हो सकता है कि रहता हो," मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने उत्तर दिया—"लेकिन इत्तफ़ाक़ से उसका पता देख लिया था कि वह किसी और मुहल्ले में रहता है।"

"और तुमने उस एक दरवाज़ेवाले मकान के बारे में उससे कुछ नहीं पूछा?" मिस्टर अटरसन ने प्रश्न किया।

"नहीं तो", मिस्टर ऐनफ़ील्ड का उत्तर था, "इस मामले में मैं ज़रा कुछ संकोच करता हूँ। सवालों की झड़ी लगा देना मुझे पसंद नहीं है; क्योंकि ऐसा लगने लगता है जैसे वकील जिरह कर रहा हो। आपका सवाल पूछना पत्थर मारने की तरह ही तो है। आप मज़े से पहाड़ी की चोटी पर बैठे हैं और वह फैला हुआ पत्थर दूसरे लोगों को चौंकाता हुआ चला जा रहा है कि एकाएक पिछवाड़े अपने बाग़ में बैठी हुई किसी पुरानी सीधी चिड़िया के—जिसके बारे में शायद तुमने अभी-अभी सोचा हो—सिर से जा टकराया और नतीजा यह हुआ कि उसके कुटुम्ब को अपना नाम ही बदल देना पड़ा। नहीं, जनाब, मैंने तो अपना

नियम बना लिया है कि कोई बात जितनी ही मुझको आश्चर्यजनक लगती जाती है, उसके बारे में उतने ही कम सवाल मैं करता हूँ।"

"यह तो सचमुच बहुत बढ़िया नियम है!" वकील साहब ने प्रशंसा की।

"लेकिन इस जगह की जाँच मैंने ख़ुद की है।" मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने कहा—"यह मकान तो मालूम ही नहीं पड़ता। इसमें कोई दूसरा दरवाज़ा नहीं है और उस दरवाज़े में से एक आदमी को छोड़कर कोई भी दूसरा आदमी नहीं आता-जाता और वह है वही ठिगना आदमी। पहली मंज़िल में आँगन की तरफ़ तीन खिड़कियाँ हैं, जो हमेशा बन्द रहती हैं लेकिन साफ़ रहती हैं। नीचे की मंज़िल में एक भी खिड़की नहीं है। इसके सिवाय एक चिमनी भी है, जिसमें से धुआँ निकला करता है, और इसका यह मतलब है कि वहाँ कोई न कोई रहता ज़रूर है। फिर भी यह बात निश्चित नहीं है; क्योंकि उस आँगन के चारों तरफ़ इतने ज़्यादा कमरे एक दूसरे से सटे हुए हैं कि यह समझना असंभव है कि एक कमरा कहाँ ख़त्म होता है और दूसरा कहाँ शुरू होता है।"

दोनों जने कुछ देर तक चुप टहलते रहे। फिर मिस्टर अटरसन ने कहा—"ऐनफ़ील्ड, तुम्हारा नियम बहुत ठीक है।"

"हाँ, ख़याल तो मेरा भी यही है।" मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने उत्तर दिया।

"फिर भी," वकील साहब बोले—"एक बात मैं पूछना चाहता हूँ। उस आदमी का नाम क्या है, जो उस लड़की से टकरा गया था?"

ऐनफ़ील्ड ने उत्तर दिया—"नाम बता देने में कोई बुराई नहीं है। उसका नाम था हाइड।"

"अच्छा," मिस्टर अटरसन ने कहा—"वह देखने में कैसा है?"

"सो तो ठीक-ठीक बतलाना ज़रा मुश्किल है। वह देखने में कुछ अजीब-सा लगता है। उसे देखकर तबियत बिगड़ जाती है। मन में घृणा-सी पैदा हो जाती है। इतनी घृणा पहले मुझे किसी आदमी से

नहीं हुई थी, पर फिर भी इसकी वजह नहीं जानता। मुझे ऐसा लगता है कि या तो उसका कोई अंग विकृत है या कुछ और; क्योंकि उसे देखते ही न जाने क्यों ऐसी भावना मन में घर कर लेती है; फिर भी मैं यह ठीक-ठीक नहीं बतला सकता कि उसके शरीर में क्या दोष है। वह असाधारण व्यक्ति मालूम होता है, पर उसकी एक भी विशेषता बतला सकना मेरे लिए कठिन है। मुझे उसकी सूरत याद है और इस समय भी उसकी सूरत मेरी आँखों के सामने घूम रही है।"

जैसे कुछ सोचते हुए मिस्टर अटरसन कुछ क़दम और आगे बढ़ गए, लेकिन बिलकुल चुप रहे।

"तुम्हें अच्छी तरह याद है कि उसने चाबी से ताला खोला?" आख़िर वकील साहब ने फिर पूछा।

"हाँ, हाँ, कहा तो कि...," मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने चौंककर ताज्जुब से कहा।

"हाँ, मैं यह भी समझता हूँ कि यह सवाल अजीब है। लेकिन सच बात तो यह है कि अगर मैं दूसरे आदमी का नाम आपसे नहीं पूछता, तो इसका मतलब है कि मैं उसे पहले से ही जानता हूँ। तुम चाहते ही हो रिचार्ड, कि तुम्हारी यह कहानी अब सबको मालूम हो, इसलिए इसमें अगर कहीं कोई भूल रह गई हो तो अच्छा है कि तुम उसे अभी सुधार लो।"

"तो तुमने पहले से ही क्यों नहीं कहा!" मिस्टर अटरसन ने किंचित् बिगड़कर कहा—"फिर भी मैं किसी क़दर ठीक हूँ, जैसा तुम कहते हो। उस आदमी के पास एक ताली थी और अब भी है। अभी एक हफ़्ते पहले ही मैंने उसे उस चाबी को काम में लाते देखा है।"

मिस्टर अटरसन ने गहरी साँस ली, लेकिन फिर एक शब्द भी नहीं कहा।

फिर तुरन्त ही ऐनफ़ील्ड साहब कहने लगे, "चुप रहने के लिए यह एक और सबब मिल गया आज। सचमुच मेरी जीभ बहुत लम्बी है। मैं

बहुत बातें करता हूँ। इसके लिए मैं शर्मिन्दा हूँ। अब फिर कभी मैं यह चर्चा नहीं चलाऊँगा।"

"राज़ी," वकील साहब ने कहा, "आओ इसी बात पर हाथ मिलायें रिचर्ड।"

---

२

## मिस्टर हाइड की खोज

मिस्टर अटरसन के पत्नी नहीं थी। उस दिन शाम को वे कुछ भारी मन लिये अपने घर लौटकर आये और बेमन से खाना खाने बैठ गये।

वैसे हर इतवार को मिस्टर अटरसन का यह नियम था कि वे खाना खाने के बाद अँगीठी के पास बैठकर कोई नीरस धार्मिक पुस्तक पढ़ने लगते थे और जब रात को गिरजा का बारह का घण्टा बजता, तभी उठकर चुपचाप शान्तिपूर्वक सोने चले जाते थे। किन्तु आज खाना खा चुकने के बाद मिस्टर अटरसन धर्म-पुस्तक पढ़ने नहीं बैठे, वरन् सीधे उठे और मोमबत्ती लेकर अपने द.फ्तर में पहुँचे।

दफ़्तर में पहुँचकर मिस्टर अटरसन ने एक तिजोरी खोली और उसके एक गुप्त ख़ाने में से एक लिफ़ाफ़ा निकाला, जिस पर लिखा हुआ था—'डाक्टर जैकिल की वसीयत'। और फिर कुर्सी पर बैठकर उसे पढ़ने लगे। इस वक्त़ उनका दिमाग़ साफ़ नहीं था।

वह वसीयत पूरी की पूरी डाक्टर ने .खुद अपने हाथ से ही लिखी थी; क्योंकि मिस्टर अटरसन ने उन्हें क़तई मदद देने से इन्कार कर दिया था, पर उसके लिख जाने पर उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर ज़रूर ले लिया था।

उस वसीयत में सिर्फ़ यही नहीं लिखा था कि डा० हेनरी जैकिल, एम० डी०, डी० सी० एल०, एल् एल० डी०, एफ़० आर० एस० आदि के मरने के बाद मेरी सारी मिल्कियत "मेरे दोस्त और मेरे साथ भलाइयाँ करनेवाले एडवर्ड हाइड" को मिले, बल्कि यह भी कि अगर डाक्टर जैकिल "किसी तरह ग़ायब हो जायँ और तीन महीने तक उनका पता न लगे," तो एडवर्ड हाइड को यह हक़ होगा कि वे फ़ौरन ही डाक्टर जैकिल की मिल्कियत पर क़ब्ज़ा कर लें और डाक्टर के घरवालों को कुछ रुपया देने के अलावा अपने को बाक़ी सभी बातों से बरी कर लें।

यह वसीयत बहुत दिनों से वकील साहब की आँखों का काँटा थी—एक तो वकील होने के नाते, दूसरे यह कि वे बेढङ्गा जीवन नापसन्द करते थे और कल्पना तथा भावुकता की बातों से उन्हें चिढ़ थी। मामूली भले आदमियों की तरह अक़्लमन्दी के साथ रहना उन्हें अच्छा लगता था। अभी तक तो उन्हें मिस्टर हाइड के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, इसलिए रह-रहकर झुँझलाहट आती थी, किन्तु अब जानकारी हो जाने की वजह से वे झुँझलाते थे। यही क्या कम बुरी बात थी कि अभी तक उन्हें डाक्टर जैकिल का नाम भर मालूम था, और कुछ नहीं; लेकिन अब जो कुछ मालूम भी हुआ, उसमें बुराई के सिवाय एक भी अच्छी बात नहीं; और जिसके विषय में वे अभी तक तरह-तरह की कल्पनाएँ कर रहे थे और परेशान हो रहे थे, वह निकला एक राक्षस—कुत्सित व्यक्ति।

"मैंने पहले ही सोचा था कि यह पागलपन है," मिस्टर अटरसन वसीयत को तिजोरी में बन्द करते हुए बोले—और "अब तो मुझे लग रहा है कि यह अपमान भी है।"

तिजोरी बन्द करने के बाद उन्होंने अपना ओवरकोट पहना और मोमबत्ती बुझाकर बाहर कैवेंडिश स्क्वायर की तरफ़ चल दिये। कैवेंडिश स्क्वायर में अधिकतर दवाइयों की दुकानें थीं। वहीं मिस्टर अटरसन के

एक और दोस्त डाक्टर लैनियन की दुकान थी और घर भी। डाक्टर लैनियन के यहाँ मरीज़ों की भीड़ लगी रहती थी।

चलते-चलते मिस्टर अटरसन ने सोचा,—"इस वसीयत के बारे में अगर कोई कुछ जानता होगा तो डा० लैनियन ही।"

डा० लैनियन का नौकर मिस्टर अटरसन को पहचानता था। उनके पहुँचते ही उसने उनका स्वागत किया और बाहर बिठालकर प्रतीक्षा कराये बिना ही वह उन्हें सीधे अन्दर डाक्टर साहब के खाने के कमरे में ले गया। डाक्टर लैनियन अपनी खाने की मेज़ पर बैठे शराब पी रहे थे।

डाक्टर लैनियन बड़े तन्दुरुस्त और ख़ुशदिल आदमी थे, पर उनके बाल असमय ही सफ़ेद हो चले थे। जमकर काम करने के लिए उनमें उत्साह था और क्षमता भी।

मिस्टर अटरसन को देखते ही वे अपनी कुर्सी से उछल पड़े और अपने हाथों में उनके दोनों हाथ लेकर स्वागत किया। डाक्टर जो अपनापन प्रदर्शित करते थे, वह देखने में कुछ नाटकीय-सा लगता था। लेकिन सच बात यह है कि उसमें रत्ती भर भी बनावट नहीं होती थी। फिर मिस्टर अटरसन तो उनके पुराने मित्र थे। दोनों साथ-साथ स्कूल और कालिज में पढ़े-लिखे और खेले-कूदे थे। दोनों ही स्वाभिमानी थे और एक दूसरे का आदर करते थे और संसर्ग का पूरा आनन्द उठाते थे।

इधर-उधर की कुछ बातें होने के बाद वकील साहब ने अपनी वही बात छेड़ दी जो उन्हें इतनी देर से परेशान कर रही थी।

"लैनियन, मैं समझता हूँ कि हेनरी जैकिल के सबसे पुराने दोस्तों में हमीं-तुम तो हैं?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"अच्छा होता अगर हम लोग सबसे नये होते," डाक्टर लैनियन ने हँसकर कहा, "हाँ, लेकिन हमीं लोग सबसे पुराने दोस्त थे उसके। लेकिन इससे क्या होता है? आजकल तो वह दिखाई भी नहीं पड़ता।"

"ठीक-ठीक!" मिस्टर अटरसन ने कहा, "मैं समझता था कि तुम भी यही बात सोचते होगे।"

"हाँ, सोचते थे," डाक्टर लैनियन ने उत्तर दिया, "लेकिन दस साल से ज़्यादा हो गये जब से कि हेनरी जैकिल मेरे लिए बड़ा दुरूह हो उठा। मेरी समझ में उसकी कोई बात नहीं आती। उसका दिमाग़ दिन पर दिन बिगड़ता ही चला जाता था। और यद्यपि मैं आज भी उसकी बातों में काफ़ी दिलचस्पी लेता हूँ, सो भी सिर्फ़ इसी ख़ातिर कि भई पुराने साथी हैं, लेकिन मैंने देखा है और अब भी देखता हूँ कि उस आदमी में कुछ शैतानियत है। ऐसा उजबक आदमी मैंने कहीं नहीं देखा।"

यह कहते-कहते डाक्टर को कुछ जोश आ गया, जिससे मिस्टर अटरसन को कुछ ढाढ़स बँधा, लेकिन जब तक डाक्टर लैनियन का जोश ठण्डा नहीं हुआ, वे चुप रहे। इसके बाद उन्होंने डाक्टर से पूछा—"क्या कभी तुमने उसी की तरह का एक दूसरा आदमी देखा है—जिसका नाम है हाइड?"

"हाइड?" डाक्टर लैनियन ने बात दोहराई—"नहीं, कभी नहीं। अपनी ज़िन्दगी में आज पहली बार यह नाम सुन रहा हूँ।"

बस यही एक नई ख़बर लेकर मिस्टर अटरसन अपने घर लौट गये और अपने अँधेरे कमरे में पलँग पर पड़े-पड़े करवटें बदलते रहे। सबेरा होने के समय उन्हें कुछ नींद आई।

इस प्रकार मिस्टर अटरसन की वह सारी रात परेशानी में बीती; तरह-तरह के बे-सिर-पैर के सवाल उनके मन में उठते रहे।

मिस्टर अटरसन के घर के समीपवाले गिरजे के घण्टे ने सुबह के छः बजाये, लेकिन वे अभी तक अपनी उधेड़बुन में लगे हुए थे। अभी तक तो वे समस्या पर सोच-विचार ही करते रहे थे; लेकिन अब उन्होंने कल्पनाएँ भी करनी शुरू कर दी थीं। बन्द कमरे में अपने पलँग पर पड़े-पड़े वे ऐनफ़ील्ड से सुनी हुई कलवाली कहानी के दृश्य देखने लगे।

कहानी की सब घटनाएँ उनकी आँखों के सामने से चल-चित्र की भाँति आने लगीं—रात के अँधेरे सुनसान में शहर की सड़कों पर जलते हुए लैम्पों की क़तारें—धीरे-धीरे चलता हुआ एक आदमी—एक दौड़कर आती हुई लड़की—और फिर एक ज़ोर की टक्कर और उस शैतान का लड़की को पैरों से रौंदते हुए निकल जाना—लड़की की चिल्ल-पुकार—लोगों की भीड़—और...या फिर उन्हें एक बड़े आलीशान मकान में एक कमरा दिखाई देता, जहाँ उनका मित्र सोचा हुआ स्वप्न देख रहा है और मुस्करा रहा है; फिर उस कमरे का दरवाज़ा एकाएक खुलता है, पर्दा उठता है, और कोई उसे जगने के लिए आवाज़ देता है—और अरे! उसके सम्मुख एक ऐसी आकृति खड़ी है जिसमें कुछ अद्भुत शक्ति है, और जिसकी आज्ञा मानकर उसे उठना ही पड़ेगा और वह जो कुछ कहे, करना ही पड़ेगा।

रात भर एक आकृति मिस्टर अटरसन को इस प्रकार दो रूपों में दिखाई पड़ती रही, और जब कभी उनकी आँख झपक जाती, तो वे देखते कि वही आकृति समस्त सुप्त नगर में जैसे बड़ी तरलता के साथ तिरती सी चली जा रही है, और प्रत्येक गली के कोने पर एक लकड़ी को कुचल-कर रोती-चिल्लाती छोड़ती चली जा रही है।

फिर भी उस आकृति का कोई मुख मिस्टर अटरसन को दिखाई नहीं दिया, जिससे कि वे उसे पहचान सकते। स्वप्न में ही उसका मुख दिखाई नहीं देता था और अगर दिखाई भी देता था तो इतना धुँधला कि वह शीघ्र ही उनकी आँखों के सामने से ओझल हो जाता था और इसी लिए वकील साहब के मन में मिस्टर हाइड की असली सूरत देखने की आकांक्षा बड़ी उत्कट हो गई और असाधारण रूप से प्रबल थी। वे उतावले होने लगे। उनकी यह धारणा थी कि अगर मैं एक बार पल भर को भी एक नज़र भरकर उसका मुख देख पाऊँ, तो सारा रहस्य या तो बिल्कुल ही प्रकट हो जाय या कुछ कम ही हो जाय; क्योंकि रहस्यमय बातों की परीक्षा होने पर प्रायः यही फल निकलता है। और

हो सकता है कि तभी मुझे उसकी अद्भुत वसीयत के भेद भी मालूम हो जायँ। जो भी हो, कम से कम उस आदमी की शक्ल देखने योग्य अवश्य होगी--ऐसे आदमी की शक्ल जिसके दिल में दया तो नाममात्र को भी नहीं थी--और ऐसी सूरत जिसका ध्यान आते ही मिस्टर ऐनफ़ील्ड जैसे ठस आदमी के मन में भी एकदम घृणा उमड़ आती है।

इस घटना के बाद से मिस्टर अटरसन ने लगातार उस गली में जाकर उस दरवाज़े पर चक्कर काटने शुरू कर दिये। सवेरे आफ़िस जाने से पहले, दोपहर को जब बाज़ार ख़ूब भरा होता, और रात को जब सारा शहर सो जाता, आसमान में सिर्फ़ कोहरे के धुंध में लिपटा हुआ चाँद दिखाई देता और नीचे ज़मीन पर सुनसान, तब मिस्टर अटरसन उसी मकान के इर्द-गिर्द चक्कर काटते हुए दिखाई पड़ते थे।

"अगर वह मिस्टर हाइड है," मिस्टर अटरसन ने सोचा, "तो मैं मिस्टर सीक* बनूँगा।"

आख़िर उनके धीरज का पुरस्कार मिला ही। रात स्वच्छ थी। हवा में कुछ ठंडक थी। सड़कें साफ़-सुथरी थीं। हवा चल नहीं रही थी, इसलिए लैम्पों का प्रकाश स्थिर था और परछाईं तथा प्रकाश के एक के बाद एक होने से एक-तरह की बेल-सी बन गई थी। दस बज चुके थे। दुकानें बन्द हो चुकी थीं। गलियों में सन्नाटा छाया हुआ था और यद्यपि व्यस्त लंदन का कोलाहल बिलकुल शान्त नहीं हुआ था और एकाध आवाज़ रह-रहकर अब भी आ जाती थी, फिर भी चारों तरफ़ निःस्तब्धता छाई हुई थी।

मिस्टर अटरसन अपने ठिकाने से खड़े ताक रहे थे उस दरवाज़े की ओर कि उन्हें एकाएक किसी के पैरों की आवाज़ दूर से अपने समीप आती

---

* हाइड ऐंड सीक—अर्थात् अगर वह छिपनेवाले बनते हैं, तो मैं उन्हें ढूँढ़नेवाला बनूँगा।

मालूम हुई। पर रोज़ अपनी रात की घुमाई में ऐसी दूर से आती हुई पदध्वनियों के सुनने के वे आदी हो गये थे, किंतु आज से पहले कभी उनका ध्यान इतनी जल्दी और निश्चयपूर्वक किसी और पदध्वनि की ओर आकर्षित नहीं हुआ था। और अनायास ही न जाने कैसे उन्हें इस समय सफलता मिलती मालूम पड़ी, इसलिए वे खुले हुए मैदान में एक ओर हटकर खड़े हो गये।

वह पदध्वनि धीरे-धीरे समीप आई और गली के मोड़ पर वह एकाएक तेज़ हो गई। वकील साहब ने अपनी जगह पर खड़े-खड़े ही आगन्तुक को देखा। वह ठिगने क़द का था और बहुत सादा कपड़े पहने था और यद्यपि उस समय वह काफ़ी दूर था फिर भी उसकी मुद्रा देखने को वकील साहब का मन नहीं चाहा। वह व्यक्ति सड़क पार करके सीधा उस दरवाज़े की तरफ़ आया और वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते ही उसने अपनी जेब से एक ताली निकाली, उसी स्वभाविक ढंग से जिससे कि लोग अपना घर समीप आने पर निकालते हैं।

मिस्टर अटरसन आगे बढ़ आये और उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले—"आप ही हैं शायद, मिस्टर हाइड ?"

मिस्टर हाइड चौंककर ज़रा पीछे हटे, जैसे डर गये हों, लेकिन दूसरे ही क्षण सँभल गये और बिना वकील साहब की ओर देखे हुए ही बोले—"हाँ, मेरा यही नाम है। कहिए, आप क्या चाहते हैं।"

वकील साहब ने उत्तर दिया—"आप अन्दर जा रहे हैं न ? मैं डाक्टर जैकिल का बहुत पुराना दोस्त हूँ। मेरा नाम है मिस्टर अटरसन। मैं गाँट स्ट्रीट में रहता हूँ और मेरा नाम तो आपने सुना ही होगा। इस तरह मौके से मिल जाने पर मैंने सोचा था कि आप मुझे अन्दर ले जाकर डाक्टर जैकिल से मिला देते तो अच्छा था।"

"लेकिन इस वक्त डाक्टर जैकिल घर पर नहीं हैं," मिस्टर हाइड ने ताले में चाबी लगाते हुए कहा—"वे बाहर गये हैं।" फिर एकाएक, किन्तु बिना वकील की तरफ़ देखे हुए ही, वे बोले—"आप मुझे कैसे जानते हैं ?"

"क्या आप मेरे लिए कुछ तकलीफ़ करेंगे ?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"हाँ, हाँ, ख़ुशी से। कहिए।" मिस्टर हाइड का उत्तर था।

"क्या आप मेहरबानी करके मुझे अपनी शक्ल अच्छी तरह देख लेने देंगे ?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

इस सवाल पर मिस्टर हाइड कुछ हिचकिचाते मालूम हुए। फिर एकाएक जैसे कुछ सोचकर वकील साहब के सामने मुँह करके खड़े हो गये। कई क्षणों तक दोनों एक दूसरे की ओर टकटकी लगाकर निहारते रहे।

तत्पश्चात् आँखें फेरकर मिस्टर अटरसन ने कहा—"अब मैं आपको पहचान लूँगा। मुमकिन है कभी ज़रूरत पड़े।"

"हाँ, ठीक है।" मिस्टर हाइड ने जवाब दिया—"यह बहुत अच्छा हुआ कि हमारी-आपकी भेंट हो गई; अच्छा तो फिर यह मेरा पता भी लेते जाइए।"

यह कहकर मिस्टर हाइड ने मिस्टर अटरसन को सोहो की गली में एक मकान का नम्बर बतलाया। "हे भगवान् !" मिस्टर अटरसन ने सोचा—"क्या यह भी वसीयत के बारे में कुछ सोचता होगा ?'

लेकिन मन की बात उन्होंने मन में ही रक्खी और पता देने के लिए मिस्टर हाइड को धन्यवाद दिया।

"अच्छा, तो अब यह बतलाइए कि आप मुझे कैसे जानते हैं।" मिस्टर हाइड ने पूछा।

"एक साहब ने आपका हुलिया बताया था।" मिस्टर अटरसन ने उत्तर दिया।

"किसने ?"

"हमारे-आपके कुछ एक ही दोस्त हैं।" मिस्टर अटरसन ने कहा।

"एक ही दोस्त !" मिस्टर हाइड ने ज़रा भारी आवाज़ में बात दोहराई—"वे कौन हैं ?"

"जैसे, जैकिल।" मिस्टर अटरसन ने बताया।

"लेकिन उन्होंने तो आपसे यह बात कही नहीं थी।" मिस्टर हाइड क्रोधित हो गये—"मैं नहीं समझता था कि आप झूठे भी हैं!"

"ख़ैर, जाने दीजिए; पर ज़रा तमीज़ से बात कीजिए।" वकील साहब ने सहूलियत से कहा।

मिस्टर हाइड ठहाका मारकर हँस पड़े और दूसरे ही क्षण दरवाज़ा खोलकर मकान के भीतर चले गये।

मिस्टर हाइड के चले जाने पर वकील साहब हक्के-बक्के-से बाहर खड़े रह गये। फिर धीरे-धीरे वे लौटकर चलने लगे। लेकिन हर दो क़दम पर वे रुक जाते थे और माथे पर हाथ रखकर कुछ सोचने-से लग जाते थे, जैसे बहुत परेशान हों। जो समस्या सुलझाने में वे लगे थे, वह ऐसी थी जो शायद ही सुलझती। मिस्टर हाइड पीले-पीले और ठिगने हैं और देखने में ऐसे मालूम होते हैं जैसे उनके शरीर का कोई भाग बिगड़ा हुआ हो, लेकिन कौन-सा भाग है वह, यह नहीं मालूम पड़ता। उनकी हँसी देखकर मन में घृणा पैदा हो जाती है।

वकील साहब के प्रति मिस्टर हाइड के व्यवहार में एक अजीब तरह का संकोच और निर्भीकता का सम्मिश्रण था. कुछ-कुछ वैसा जैसा कि हत्यारे व्यक्ति में होता है। उनकी आवाज़ टूटी-टूटी, भारी और भर्राई हुई थी। ये सब बातें मिस्टर हाइड की बुराइयाँ थीं तो, पर इनमें कोई ऐसी बात नहीं थी जो उनके लिए मिस्टर अटरसन की कुत्सित घृणा का कारण हो।

"कोई और बात ज़रूर होनी चाहिए।" परेशान मिस्टर अटरसन ने सोचा—"कोई बात और है ज़रूर, लेकिन मैं कह नहीं सकता कि वह है क्या! हे भगवान्! यह आदमी है कि शैतान! कुछ अजीब वहशत-सी और जङ्गलीपन! या यह किसी पापात्मा की प्रकाशित छाया भर है जो अपनी इस मिट्टी की काया में घूमती फिरती है!...और हाय

बेचारा हेनरी जैकिल !...तुम्हारे नये दोस्त की सूरत में तो मुझे शनैश्चर नज़र आता है।"

गली के मोड़ पर ही एक चौक था, जिसमें कुछ पुरानी खूबसूरत इमारतें खड़ी थीं, पर ये अब यों ही पड़ी थीं, और इनके छोटे-छोटे हिस्सों में बहुत-से छोटे-छोटे किरायेदार बसे हुए थे, जिनमें बहुत-सी तरह के लोग थे—नक़शानवीस, राज, मुख्तार, और तरह-तरह के गुप्त व्यवसायों के दलाल आदि। लेकिन मोड़ पर जो दूसरा मकान था, उसमें केवल एक ही कुटुम्ब रहता था। इस मकान के दरवाज़े से ही रईसी टपकती थी। यद्यपि इस समय वहाँ द्वारी में एक चिराग़ टिमटिमा रहा था और बाक़ी मकान में अँधेरा पड़ा था।

इसी मकान पर आकर मिस्टर अटरसन रुक गये और किवाड़ खटखटाये।

निहायत साफ़-सुथरा एक बूढ़ा-सा नौकर अंदर से आया।

"पूल, क्या डाक्टर जैकिल घर पर हैं?" वकील साहब ने पूछा।

"देखकर अभी बतलाता हूँ।" पूल ने उत्तर दिया और उन्हें एक बड़े कमरे में लिवा लाया। इस कमरे की छत नीची थी, फ़र्श पर ग़लीचे बिछे थे और बढ़िया फ़र्नीचर रक्खा था। एक तरफ़ कोने में आग जल रही थी। कमरा बहुत आरामदेह था।

"आप यहीं तशरीफ़ रखिएगा, या मैं आपको डाइनिंग रूम में अँगीठी के पास ले चलूँ?"

"नहीं, नहीं। यहीं ठीक है।" वकील साहब ने अँगीठी के पास पड़ी हुई आरामकुर्सी पर बैठते-बैठते कहा।

यह कमरा डाक्टर जैकिल को बहुत प्रिय था और अटरसन भी इसे लंदन का सबसे अधिक सुख देनेवाला कमरा कहा करते थे। लेकिन आज इस कमरे में बैठकर उन्हें वैसा ही आनंद नहीं आ रहा था। उनकी नस-नस जैसे काँप रही थी। हाइड का चेहरा बराबर उनकी आँखों के सामने नाच रहा था। उनका मन भारी था और जी घबरा-सा

रहा था। उन्हें अपना सारा जीवन सूना-सूना-सा मालूम पड़ने लगा। उनके मन की ऐसी दशा पहले कभी नहीं हुई थी।

अपने मन के इस भारीपन और उदासी में मिस्टर अटरसन को अँगीठी की लपटों से मंद आलोकित इस कमरे की सभी वस्तुएँ कुछ हीन और ओछी लग रही थीं।

वे इसी विचित्र-सी अवस्था में डूबे-से बैठे थे कि पूल ने आकर कहा—"डाक्टर साहब बाहर गये हैं।"

मिस्टर अटरसन चौंक पड़े; बोले—"पूल, मैंने मिस्टर हाइड को उस चीड़-फाड़ के कमरे में होकर अंदर जाते देखा है। क्या उनका ऐसा करना ठीक है, जब कि डाक्टर जैकिल घर से बाहर हों ?"

"हाँ, हाँ, ठीक है मिस्टर अटरसन," नौकर ने उत्तर दिया—"मिस्टर हाइड के पास भी एक ताली रहती है।"

"मुझे मालूम पड़ता है कि तुम्हारे मालिक उस नवयुवक पर बहुत विश्वास करते हैं, पूल।" वकील साहब ने कुछ हँसकर कहा।

"हाँ, साहब, करते तो हैं," पूल ने कहा—"और हम लोगों को भी उनका हुक्म मानना पड़ता है।"

"शायद मैं तो कभी मिस्टर हाइड से मिला नहीं हूँ, क्यों ?" नौकर से मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"नहीं, कभी नहीं साहब। वे यहाँ कभी खाना नहीं खाते," नौकर ने जवाब दिया—"और बात यह है कि वे मकान के इस तरफ़ तो बहुत कम आते हैं; ज़्यादातर लैबोरेटरी में ही आते-जाते रहते हैं।"

"अच्छा, गुड नाइट, पूल !"

"गुड नाइट, मिस्टर अटरसन !"

मिस्टर अटरसन घर की ओर चल दिये। उनका मन अब भी बहुत भारी था।

'बेचारे हैनरी जैकिल—न जाने क्यों, मेरा मन कह रहा है कि—बड़ी मुसीबत में हैं।" मिस्टर अटरसन ने चलते-चलते सोचा—"अपनी जवानी

में तो उनमें बड़ा जोश और अक्खड़पन था। पर अब तो यह सब बातें पुरानी हो गईं। इस संसार में सब कुछ संभव है। जो न हो जाय, सो थोड़ा है। न जाने किस पुराने पाप—किसी अनजाने अपमान—का यह फल है। इतने बरसों बाद यह फल मिल रहा है, जब कि सब बातें याद से उतर गई हैं और अपने स्वार्थ ने सब बातें माफ़ भी कर दी हैं!" इस विचार से व्यथित होकर वकील साहब अपने अतीत की बात सोचने लगे जिससे कि स्मृति के कहीं किसी कोने में से ही कुछ एकाएक निकल पड़े। उनका अतीत बहुत कुछ उज्ज्वल था—पाप की कालिमा उसमें कदाचित् ही कहीं हो। संसार में बहुत कम मनुष्य अपने अतीत को इतनी कम निर्भयता से याद कर सकते थे, जितनी से कि मिस्टर अटरसन। फिर भी अनेक छोटी-मोटी बुराइयाँ करने से वे अपने को धूल के बराबर तुच्छ समझते थे; किन्तु अनेक बुराइयाँ करते-करते रह भी गये थे, जिससे कि आज उन्हें कुछ गर्व भी होता है।

थोड़ी देर बाद वे फिर मिस्टर हाइड की बात सोचने लगे और इस बार उन्हें कुछ आशा भी मालूम पड़ी—अगर हाइड का अध्ययन किया जाय, तो इस आदमी के बहुत से रहस्य मालूम पड़ जायँगे; क्योंकि इसकी सूरत से ही मालूम पड़ता है कि यह बड़ा रहस्यमय है। और उन रहस्यों के सामने बेचारे जैकिल का गूढ़ से गूढ़ रहस्य भी स्पष्ट होगा। लेकिन ये बातें इसी तरह कब तक चल सकती हैं! हैरी की चारपाई के पास इस आदमी के चोर की तरह जाने की बात सोचकर तो मेरा ख़ून जमने लगता है। बेचारा हैरी! कितना कमज़ोर है वह! इसी लिए तो ख़तरा है! अगर इस हाइड को उसकी वसीयत का पता लग जाय तो फिर वह उसे हथियाने के लिए अधीर हो उठेगा। लेकिन इस मामले में मैं जैकिल की मदद कर सकता हूँ, पर वह कहे तब तो—बस उसके कहने भर की देर है।

एक बार और स्पष्ट रूप से डाक्टर जैकिल की वसीयत की विचित्र बातें मिस्टर अटरसन की आँखों के सामने घूम गईं।

---

## ३

# डाक्टर जैकिल से भेंट

पन्द्रह दिन बाद डाक्टर जैकिल ने अपने पाँच-छः पुराने मित्रों को दावत दी। उनके सभी मित्र पुरानी शराब के शौक़ीन थे और पढ़े-लिखे मशहूर आदमी थे।

दावत समाप्त होने के बाद मिस्टर अटरसन ने ऐसी तरकीब की कि सबके चले जाने पर भी वे स्वयं रुके ही रहे, पर यह कोई नई बात तो थी नहीं। ऐसा अनेक बार हो चुका था। क्योंकि अक्सर ऐसा होता था कि बहुत से बातूनी और हल्के दिल के मेहमानों के चले जाने पर भी नीरस और रूखे मिस्टर अटरसन को मेज़बान लोग रोक लिया करते थे। बात यह थी कि जहाँ कहीं लोग मिस्टर अटरसन को पसन्द करते थे, वहाँ फिर उनकी अच्छी ख़ातिर और इज्ज़त होती थी। बहुत से हँसी-मज़ाक़ के बाद वे थोड़ी देर तक मिस्टर अटरसन के साथ ख़ामोशी से बैठकर कुछ आराम करना चाहते थे।

इस नियम के लिए डाक्टर जैकिल कोई अपवाद नहीं थे। वे भी और लोगों की तरह वकील साहब का साथ पसंद करते थे। पचास बरस के लम्बे-तगड़े आदमी थे वे। दया और सहानुभूति उनकी मुद्रा पर छाई रहती थी। इस समय अँगीठी के पास बैठे हुए थे, जिसके उजाले में उनका साफ़ चिकना चेहरा चमक रहा था और उनकी आँखों में चमक रही थी मिस्टर अटरसन के प्रति सचाई और स्नेह।

मिस्टर अटरसन ने बात शुरू की—"जैकिल, मैं तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करना चाहता था। अपनी उस वसीयत का ख़याल है न तुमको ?"

इस परिस्थिति को ध्यान से देखने पर कोई भी समझदार आदमी जान लेता कि बातचीत का प्रसंग डाक्टर को रुचिकर नहीं प्रतीत हुआ, फिर भी उन्होंने उसे हँसकर ही टालना चाहा—"अरे भाई अटरसन,

तुम्हें भी कैसा मुवक्किल मिला है। तुम्हारी तक़दीर ही ख़राब है, तो मैं क्या करूँ। पर तुमसे ज़्यादा कोई और उस वसीयत के बारे में परेशान नहीं है; वैसे वे बातून डाक्टर लैनियन भी मेरी वैज्ञानिक करतूतों से काफ़ी परेशान हैं। पर मैं जानता हूँ कि वह आदमी निहायत अच्छा है। बस, एक ही आदमी समझो उसको; लेकिन फिर भी कुछ बेवकूफ़ी और सनक उसे है ज़रूर। जितना अफ़सोस मुझे अपने इस दोस्त को देखकर होता है, उतना किसी दूसरे को देखकर नहीं होता।"

किंतु डाक्टर जैकिल के इस नये प्रसंग पर कोई उत्तर न देकर, मिस्टर अटरसन ने वही वसीयतवाली बात फिर छेड़ दी—"तुम जानते ही हो कि मुझे वह बिलकुल पसन्द नहीं है।"

"क्या मेरी वसीयत? हाँ, मुझे यह मालूम है।" डाक्टर ने तनिक तीखे स्वर में उत्तर दिया—"तुम मुझसे पहले भी कह चुके हो।"

"लेकिन मैं फिर कहता हूँ," वकील साहब ने अपनी बात का सिलसिला जारी रक्खा—"और अब तो मुझे मिस्टर हाइड के बारे में भी कुछ-कुछ मालूम हो रहा है।"

यह सुनकर डाक्टर जैकिल का मुख एकदम फीका पड़ गया; होंठ सूख-से गये, आँखों के चारों तरफ़ कालापन सा छा गया।

"मैं इस बात के बारे में कुछ और सुनना नहीं चाहता। इसे यहीं ख़त्म करो।"—डाक्टर ने परेशान होकर कहा।

"मैंने जो कुछ सुना है, वह तो बहुत ही बुरा है।" मिस्टर अटरसन ने डाक्टर की बात पर बिना कोई ध्यान दिये हुए फिर कहा।

"पर, अब जो हो गया, सो हो गया। वह बदला नहीं जा सकता।" डाक्टर ने किञ्चित् विचलित होकर उत्तर दिया—"इन नई-नई बातों से मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। और तुम मेरी परिस्थिति नहीं समझ रहे हो। अटरसन, मैं बड़ी परेशानी और दुविधा में हूँ। मेरी हालत बहुत अजीब है—बेहद अजीब! पर वह ख़ाली इस तरह की बातों से नहीं सुधर सकती।"

"जैकिल," अटरसन ने कहा—"तुम मुझे जानते हो कि मुझ पर विश्वास किया जा सकता है। मुझे अगर अपनी यह अजीब परेशानी बतला दो तो मैं उसे दूर करने का कोई तरीक़ा बतलाऊँ।"

"यह तो तुम्हारी भलमनसाहत है। तुम मेरे ऊपर बहुत मेहरबान रहते हो, पर मैं अच्छी तरह समझता हूँ और इसके लिए मैं तुम्हारा बहुत आभारी भी हूँ।" डाक्टर जैकिल ने उत्तर दिया—"मैं तुम्हारे ऊपर अपने से भी ज़्यादा विश्वास करता हूँ, लेकिन बात वैसी है नहीं जैसी तुम समझते हो। फिर भी मैं तुम्हें एक बात बतलाये देता हूँ जिससे तुम्हारी फ़िक्र कुछ मिट जाय—मैं जिस समय भी चाहूँ, उसी समय मिस्टर हाइड का साथ छोड़ सकता हूँ। यह मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ और अगर तुम बुरा न मानो, तो यह भी समझ लो कि यह मेरा एक ऐसा निजी मामला है, जिसे खोलना मैं चाहता नहीं।"

अँगीठी में अपनी नज़र गड़ाकर मिस्टर अटरसन कुछ देर तक सोचते रहे। फिर एकाएक उठते हुए बोले—"तुम बिलकुल ठीक कहते हो। मैं मानता हूँ।"

"लेकिन हाँ, मैं तुम्हें एक बात और भी बतला देना चाहता हूँ; क्योंकि जब बात छिड़ ही गई है तो पूरी हो जाने दो और फिर कभी हम लोग इसकी चर्चा नहीं करेंगे। बेचारे हाइड से मेरा बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है, और अनुराग भी। तुम उससे मिले थे। उसी ने मुझसे कहा था। और शायद वह तुम्हारे साथ बड़ी बदतमीज़ी से पेश आया। पर मैं अब मजबूर हूँ। मैं उससे अलग नहीं हो सकता। अगर मैं मर जाऊँ, तो मैं चाहता हूँ कि तुम उसे वसीयत दिलाने में पूरी पूरी मदद करो और इसका वादा अभी करो। मेरी बहुत-सी परेशानी अभी एकदम दूर हो जायगी। बोलो, वादा करते हो?"

"लेकिन मुझे झूठ बोलना नहीं आता।" वकील साहब ने कहा—"मैं साफ़ कहता हूँ कि वह आदमी मुझे कभी अच्छा नहीं लग सकता।"

"तो मैं यह कब कहता हूँ कि वह तुम्हें अच्छा लगे ही।" डाक्टर जैकिल ने मिस्टर अटरसन के कंधे पर हाथ रखकर ख़ुशामद-सी करते हुए कहा—"अच्छे-बुरे से कुछ मतलब नहीं। मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम मेरी ही ख़ातिर उसकी सब तरह से मदद करो।"

मिस्टर अटरसन ने एक ठंडी आह खींची और कहा—"अच्छा, तो मैं वादा करता हूँ।"

——

# ४

# कैर्यू हत्याकांड

लगभग एक वर्ष बाद अक्टूबर १८—ई० में एक भयानक हत्याकांड से लन्दन चौंक उठा। जिस व्यक्ति की हत्या की गई थी वह एक बड़ा आदमी था, इसलिए हत्या की सनसनी और भी अधिक तेज़ी के साथ फैल गई थी।

हत्या का विन्यास कम है, किन्तु आश्चर्य अधिक।

नदी के पास एक मकान है। उसकी नौकरानी रात को ग्यारह बजे ऊपर छत पर अपने कमरे में सोने गई थी। यद्यपि रात्रि के अन्तिम पहर में आकाश में कोहरा छा गया था, पर पहले पहर में वह नितान्त स्वच्छ था, और जिस गली की ओर नौकरानी के कमरे की खिड़की थी, उसमें चाँदनी का ख़ूब उजाला था।

उस दिन रात को नौकरानी के मन में कुछ उन्माद था और शरीर में कुछ आवेश-सा, सिहरन-सी। प्रेम की मधुर भावनाओं में खोई-सी लगती थी वह; क्योंकि वह अपने बिस्तर पर लेटकर सोने के बजाय खुली खिड़की के पास कुर्सी पर बैठ गई और बाहर मादक ज्योत्स्ना-स्नात झिल-मिल तारक-जटित अम्बर को देखने लगी और न जाने कैसी-कैसी मृदुल

कल्पनाओं में बहने लगी। उसने हत्या का वृत्तान्त सुनाते समय कहा था कि अपने जीवन में मैंने संसार का इतना सुख कभी पहले नहीं पाया था जितना कि उस रात की मीठी कल्पनाओं में।

इस प्रकार वह खुली खिड़की के पास बैठी थी कि एकाएक उसे गली में समीप आता हुआ एक वयस्क किन्तु सुन्दर पुरुष, जिसके बाल भी श्वेत थे, दिखाई दिया और साथ ही उससे मिलने के लिए एक और ठिगने क़द का आदमी उसकी ओर बढ़ा। जब वे दोनों बिलकुल समीप आ गये, तब वयस्क पुरुष ने दूसरे ठिगने व्यक्ति का बड़ी विनम्रता से अभिवादन किया। यह सब दृश्य अब नौकरानी को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। हाँ, तो उनकी बातचीत के संकेतों से ऐसा नहीं मालूम पड़ता था कि वे कोई आवश्यक बात कर रहे हैं, बल्कि केवल इतना ही प्रतीत होता था कि उक्त वयस्क सज्जन उससे रास्ता पूछ रहे हों।

वयस्क सज्जन का मुख चाँदनी में चमक रहा था, जिसे देखकर दासी को बड़ी प्रसन्नता हुई; क्योंकि उनके मुख पर ऐसी भलमनसाहत, संतोष और शालीनता छाई हुई थी कि वे एक बड़े सम्मानित व्यक्ति और कुलीन घराने के मालूम पड़ते थे।

किंतु जब लड़की की दृष्टि ठिगने व्यक्ति पर पड़ी, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि उसे तो वह एक बार अपने ही घर में देख चुकी थी। वह ठिगना उसके मालिक से मिलने आया था और उसका नाम हाइड था। और देखते ही तभी नौकरानी के मन में हाइड के प्रति बड़ी घृणा उत्पन्न हो गई थी।

हाइड के हाथ में उसने एक छड़ी देखी थी, जिसे वह हिला रहा था। वह वयस्क सज्जन की किसी भी बात का उत्तर नहीं दे रहा था, और जो कुछ सुन भी रहा था, सो भी बहुत अधीर होकर। फिर एकाएक वह क्रोध से आगबबूला हो गया, पैर पटकने लगा और छड़ी फटकारने लगा, जैसे पागल हो गया हो। वयस्क सज्जन जैसे सहसा डरकर एक क़दम पीछे हट गये थे। उनके पीछे हटते ही हाइड उन पर बिजली की तरह

टूट पड़ा और घूँसे मार-मारकर उन्हें ज़मीन पर गिरा दिया। फिर उन्हें पैरों से कुचलने लगा और उनके पेट और पसलियों में ज़ोर-ज़ोर से घूँसों और छड़ी के वार करने लगा। पसलियों के टूटने की आवाज़ दासी को सुनाई पड़ी थी और उनका शरीर सड़क पर तड़फड़ाता भी उसे दिखाई दिया था। बस यह दृश्य देखते ही वह मूर्च्छित हो गई थी।

जब दासी को होश आया तब रात के दो बज रहे थे। उसने उठकर पुलिस को ख़बर दी।

हत्यारा फ़रार हो चुका था, लेकिन घावों से भरी लाश बीच सड़क पर अब भी पड़ी थी। जिस छड़ी से यह हत्या की गई थी, वह बड़ी मज़बूत और भारी लकड़ी की थी, फिर भी लगातार कड़ी मार देने से बीच से दो टुकड़े हो गई थी; उसका एक टुकड़ा पास की नाली में जा गिरा था और दूसरे को स्वयं हत्यारा अपने साथ लेता गया था। शव की जेब में एक सोने की घड़ी और पर्स निकली, पर कोई काग़ज़ या डायरी अथवा पते का कार्ड नहीं निकला। हाँ, एक बंद टिकिट लगा लिफ़ाफ़ा ज़रूर था जो अभी लेटरबक्स में डाला जानेवाला था। उस पर मिस्टर अटरसन का नाम और पता लिखा हुआ था।

दूसरे दिन सुबह मिस्टर अटरसन सोकर बिस्तर से उठे भी नहीं थे कि एक सिपाही उनके घर पर वही लिफ़ाफ़ा लेकर पहुँचा और उसने उन्हें सारा हाल कह सुनाया।

सब हाल सुनकर मिस्टर अटरसन ने गंभीर होकर कहा—"जब तक मैं लाश न देख लूँ, तब तक कुछ नहीं कह सकता। यह मामला बहुत ख़तरनाक हो सकता है। इसलिए आप ज़रा देर इंतज़ार कीजिए। मैं तब तक कपड़े पहन लूँ।" इसके बाद मिस्टर अटरसन की मुद्रा गंभीर ही बनी रही। उन्होंने कपड़े पहने, नाश्ता किया और पुलिस थाने के लिए रवाना हो गये।

लाश थाने में पहले से पहुँच चुकी थी। जिस कोठरी में वह रक्खी थी, वहाँ मिस्टर अटरसन ले जाये गये।

"हाँ, मैं इन्हें पहचानता हूँ। ये सर डोवर्स कैर्यू हैं।" मिस्टर अटरसन ने लाश को पहचानकर दारोग़ा से कहा।

"हे भगवान्!" दारोग़ा चीख़ पड़ा—"क्या यह सच है?"

और दूसरे ही क्षण उसकी आँखों में ऐसी चमक आ गई जैसी कि कोई बड़ा मामला पकड़ लेने पर पुलिस के आदमियों की आँखों में अक्सर आ जाती है, अपनी तरक़्क़ी की आशा में।

"उफ़! तब तो इस क़त्ल का बड़ा शोर मचेगा।" दारोग़ा बोला—"और आप शायद हमें मुजरिम को पकड़ने में मदद कर सकेंगे।"

यह कहकर उसने मिस्टर अटरसन को सारा क़िस्सा कह सुनाया जैसा कि उस नौकरानी ने बतलाया था और फिर उन्हें वह टूटी हुई छड़ी का आधा टुकड़ा भी दिखाया।

मिस्टर अटरसन ने पहले ही अनुमान कर लिया था कि हत्यारा हाइड ही होगा, किन्तु जब वह छड़ी उनके सामने पेश की गई, तब तो उन्हें निश्चय ही हो गया; क्योंकि यह वही छड़ी थी जो उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व डाक्टर जैकिल को भेंट में दी थी।

"क्या यह मिस्टर हाइड ठिगने क़द का है?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"हाँ, ठिगना भी है और देखने में बदमाश भी लगता है,—ऐसा उस नौकरानी ने कहा है।" दारोग़ा ने जवाब दिया।

मिस्टर अटरसन ने सोचकर कहा—"अगर आप मेरे साथ गाड़ी में चलें, तो मैं आपको उसके मकान पर पहुँचा सकता हूँ।"

इस समय नौ बजनेवाले थे और कोहरा छाने लगा था। कत्थई रंग का एक घटाटोप सा आसमान में छाया हुआ था। लेकिन हवा के तेज़ झोंके उसे छितराये दे रहे थे। इसलिए एक सड़क पर से दूसरी सड़क पर गाड़ी जैसे-जैसे जाती थी, वैसे-वैसे ही मिस्टर अटरसन को आसमान में रंग-बिरंगी रोशनी दिखाई पड़ती थी। कहीं पर बिलकुल रात की तरह काला अँधेरा था, तो कहीं पर मटमैला लाल उजेला, जैसे

कहीं आग लग गई हो, और कहीं पर कोहरे का नाम-निशान तक नहीं था, बल्कि दिन की तरह धूप का उजेला था। ऐसे विचित्र रंग-बिरंगे उजाले में सोहो का उदासीन मुहल्ला, उसकी कीचड़ से भरी हुई सड़कें, उन पर चलनेवाले तरह-तरह के मुसाफ़िर और उसके लैम्प, जो सबेरा होने पर न तो बुझाये ही गये थे, और न दुबारा इस अँधेरे को दूर करने के लिए साफ़ करके फिर से जलाये ही गये थे—यह सब देखकर मिस्टर अटरसन को ऐसा लगा जैसे वे डरावने सपने में किसी अजीब-से जादूभरे शहर को देख रहे हों।

इसके अतिरिक्त मिस्टर अटरसन के मन में भी बड़े उदासीन और भाराक्रान्त विचार उठ रहे थे; और जब वे अपने साथी पुलिस-दारोग़ा को देखते थे, तो सरकारी क़ानून और उसके रक्षकों का ऐसा ध्यान उनके मन में समा जाता था, जैसा कि कभी-कभी सच्चे, ईमानदार और निर्दोष व्यक्ति के मन में भी इन लोगों को देखकर आ जाता है।

गाड़ी जब मिस्टर हाइड के मकान के सामने पहुँची तब कोहरा कुछ-कुछ हल्का हो गया था। और उस धुँधले प्रकाश में से गाड़ी की सवारियों को एक तंग गली दिखाई दी, जिसमें एक बड़ा मकान था। इस मकान में एक दुकान तो मशीनरी की थी और दूसरी में, जो कुछ नीची थी, फ्रेंच भोजनालय था, जिसमें पैसे-धेले की भी चीज़ मिल जाती थी। वहाँ अनगिनती फटे कपड़े पहने मैले-कुचैले बच्चे घुसे रहते थे और नाश्ता करने के लिए विभिन्न देशों की बहुत-सी स्त्रियाँ आती-जाती रहती थीं।

किंतु थोड़ी देर बाद ही कोहरा फिर घना हो उठा और सब कुछ उसके कत्थई पर्दे में छिप गया। यही हेनरी जैकिल के मित्र का मकान था—वह मित्र जो दस लाख स्टर्लिंग* का वारिस था। किवाड़े खटखटाने पर एक बूढ़ी औरत ने आकर दरवाज़ा खोला, जिसके बाल

---

* गिन्नी।

और मुख हाथीदाँत की तरह सफ़ेद थे। उसके मुख पर कुटिलता छाई हुई थी, लेकिन उस पर बनावट की क़लई फिरी हुई थी। वह बहुत तमीज़दार थी। उसने कहा—"हाँ, मिस्टर हाइड का यही मकान है, पर इस वक्त. वे घर पर नहीं हैं। रात वे बहुत देर से लौटे थे और अभी-अभी कोई घंटा भर मुश्किल से हुआ होगा कि फिर कहीं बाहर चले गये। कोई ताज्जुब की बात नहीं, उनकी आदतें ही ऐसी हैं कि कभी घर पर नहीं टिकते। हमेशा घूमते ही रहते हैं। कल तो दो महीने बाद मैंने उनकी सूरत देखी थी।"

"ख़ैर, कोई बात नहीं। हम घर की तलाशी लेना चाहते हैं।" वकील साहब ने कहा।

"नहीं, यह नहीं हो सकता। वे घर पर नहीं हैं, जब आ जायँ, तो उनसे पूछकर आप जो चाहें कर सकते हैं। पर बिना उनकी इजाज़त के मैं आपको कैसे घर में घुसने दे सकती हूँ!"

इस पर मिस्टर अटरसन ने नौकरानी से कहा,—"अच्छा, तो मैं तुम्हें बतला दूँ—मेरे साथ हैं स्कॉटलैंड यार्ड के इन्स्पेक्टर मिस्टर न्यूकॉसिन्।"

यह सुनकर स्त्री के मुख पर एक विचित्र विकृत-सी प्रसन्नता खिल उठी।

वह बोली—"अच्छा, तो वे किसी मुसीबत में फँस गये हैं! क्या किया है उन्होंने?"

मिस्टर अटरसन और इंस्पेक्टर साहब ने यह सुनकर एक दूसरे की ओर देखा।

"तो हाइड बहुत काफ़ी बदनाम आदमी मालूम पड़ते हैं।" इंस्पेक्टर ने कहा—"अच्छा तो तुम बड़ी भली औरत हो। हम लोगों को ज़रा उनके कमरे देख लेने दो।"

वह इतना बड़ा समूचा घर ख़ाली पड़ा था। इस समय उसमें इस बुढ़िया को छोड़कर और कोई नहीं था। मिस्टर हाइड कुछ ही कमरे

अपने काम में लाते थे, जो बहुत शान और सुरुचि के साथ सजे हुए थे। एक अलमारी शराब की भरी बोतलों से भरी हुई थी। कमरे के बीचों-बीच एक चाँदी का तख्त रक्खा था। मेज़ों पर बड़े-बड़े .खूबसूरत मेज़पोश बिछे हुए थे। एक तरफ़ दीवार पर एक बड़ा चित्र टँगा था। मिस्टर अटरसन का ख़याल था कि इसे हेनरी जैकिल ने हाइड को भेंट किया होगा; क्योंकि मिस्टर जैकिल चित्रकला के अच्छे ज्ञाता थे। फ़र्श पर तरह-तरह के .खुशनुमा क़ालीन बिछे हुए थे। लेकिन इस वक्त. यह मालूम होता था कि सभी कमरों में अभी-अभी कोई भागदौड़ हुई हो, क्योंकि फ़र्श पर कपड़े उल्टे-सीधे बिखरे पड़े थे। तालेदार ड्राअर्स भी खुले पड़े थे। अँगीठी के पास कुछ राख पड़ी थी, जो बहुत से जले हुए काग़ज़ों की मालूम होती थी। राख के इस ढेर में से इन्स्पेक्टर ने एक हरे रंग की चेक-बुक उठाई, जो अधजली रह गई थी। उस छड़ी का दूसरा आधा टुकड़ा भी किवाड़ों के दुबीचे में पड़ा था, जिससे दारोग़ा का संदेह पक्का हो गया और .खुश होकर वह कहने लगा—"अब क्या है! मैदान मार लिया। सबूत भी मिल गया!"

दारोग़ा ने यह भी सोचा कि बैंक में इस हत्यारे के हज़ारों पौंड जमा होंगे ही और चेक-बुक मेरे पास ही है ही। अब क्या है, अच्छा माल हाथ लगेगा।

"अब आप यक़ीन रखिए," मिस्टर अटरसन से दारोग़ा बोला कि "मैं उसे ज़रूर पकड़ लूँगा—अब आप उसे पकड़ा ही समझिए। वह ज़रूर पागल हो गया होगा। अन्यथा वह यह छड़ी यहाँ न छोड़ जाता और न चेक-बुक ही जलाता। आख़िर, दौलत ही तो इंसान की ज़िंदगी है—वही तो उसे अपनी जान से भी ज़्यादा प्यारी होती है...अब तो हमें सिर्फ़ यह करना है कि उसकी तलाश के लिए कुछ पर्चे छपवाकर बँटवा दें और .खुद बैंक में उसके आने का इंतज़ार करें।"

लेकिन पर्चे बँटवाकर उसकी तलाश करना आसान काम नहीं था, क्योंकि मिस्टर हाइड ने अपनी जान-पहचान नहीं के बराबर बढ़ाई थी; गिनती के कुछ दो-एक लोग उसे पहचानते थे—यहाँ तक कि उसकी

नौकरानी के मालिक ने भी उसे सिर्फ़ दो ही बार देखा था; दूसरे, उसके घर का कोई पता-ठिकाना नहीं था; तीसरे, उसने कभी अपना फोटो नहीं खिंचाया था। जिन लोगों ने उसे देखा भी था तो यों ही चलती हुई नज़रों से पर अच्छी तरह नहीं। इसी से जब वे उसका हुलिया बताते थे, तो तरह-तरह का। पूरी तरह से किन्हीं दो का बताया हुआ हुलिया भी एक-सा नहीं होता था; पर एक बात ज़रूर थी और जिसे सभी कहते थे कि उसके शरीर में कुछ ऐसा विचित्र-सा दोष है, जो स्पष्ट तो दिखाई नहीं पड़ता, पर मालूम ज़रूर होता है और उसका ध्यान एक बार देखनेवाले के भी मन से हटाये नहीं हटता था, वरन् बराबर जमा ही रहता था।

——

## ५

## एक पत्र

दोपहर के बाद शाम होते-होते मिस्टर अटरसन डाक्टर जैकिल के दरवाज़े पर पहुँच गये। वहाँ पहुँचते ही पूल उन्हें अन्दर ले गया।

रसोईघर में होकर पूल के साथ मिस्टर अटरसन एक आँगन में पहुँचे, जहाँ कभी बग़ीचा था। आँगन पार करके फिर वे उस बिल्डिंग में पहुँच गये, जो लैबोरेटरी या डिसैक्टिंग रूम* कहलाती थी। डाक्टर जैकिल ने यह मकान एक मशहूर सर्जन के वारिसों से मोल लिया था; क्योंकि उनकी रुचि शरीर तथा चिकित्सा-विज्ञान में न होकर रसायन-विज्ञान में थी। इसलिए उन्होंने मकान के उस बग़ीचेवाले हिस्से में अपनी रसायनशाला बना ली थी। आज पहली बार मिस्टर अटरसन मकान के इस भाग में आये थे, जिसमें कोई खिड़की भी नहीं थी और जो सीलन से भरा हुआ था। मिस्टर अटरसन ने इसे बड़ी जिज्ञासा पूर्ण

* वैज्ञानिक प्रयोगशाला अथवा चीर-फाड़-घर।

दृष्टि से देखा। अन्दर घुसने पर वे थियेटर* में पहुँचे, जो क़भी विज्ञान के जिज्ञासु विद्यार्थियों से भरा रहता था; किन्तु आज वह ख़ाली सुनसान पड़ा था, जिसकी मेज़ों पर रसायन-क्रिया संबंधी मेज़ आदि रक्खे थे। फ़र्श पर इधर-उधर सामान की ख़ाली पेटियाँ लुढ़क रही थीं, और फूस के तिनके बिखरे हुए थे। ऊपर कोहरे से आच्छन्न गोल रोशनदान में से उजाले की मलिन किरणें आ रही थीं। इसी थियेटर के दूसरे कोने पर कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर एक दरवाज़ा था, जिस पर लाल फ़लालैन का पर्दा पड़ा था। इसी दरवाज़े में होकर मिस्टर अटरसन अन्त में डाक्टर जैकिल के कमरे में पहुँचे। यह कमरा बहुत बड़ा था। इसमें चारों दीवारों में शीशे की अलमारियाँ लगी थीं और तीन लोहे के सीख़चोंवाली खिड़कियाँ थीं, जो धूल से अटी हुई थीं और बाहर चौक की तरफ़ खुलती थीं। इसके अतिरिक्त वहाँ बहुत-सा और ज़रूरी फ़र्नीचर भी था, जिसमें एक आफ़िस-टेबिल भी शामिल था। लोहे की अँगीठी में आग जल रही थी और एक ताख़ में रक्खा लैम्प जल रहा था; क्योंकि घर में अन्दर भी घना कोहरा छाया हुआ था।

अँगीठी के पास डाक्टर जैकिल बैठे थे। देखने से वे बहुत बीमार मालूम पड़ते थे। मिस्टर अटरसन का स्वागत उन्होंने उठकर नहीं किया। बैठे-बैठे ही बड़े बेमन से उनसे हाथ मिला लिया और अभिवादन किया, पर आज उनका स्वर बदला हुआ था।

मिस्टर अटरसन को कमरे में पहुँचाकर पूल चला गया।

पूल के जाने के बाद मिस्टर अटरसन ने डाक्टर से पूछा—"कहो, कुछ सुना ?"

डाक्टर काँप उठे। कहने लगे—"मैं डाइनिङ्ग रूम में बैठा था, तब मैंने कुछ लोगों को बाहर चौक में चिल्लाते सुना था।"

"अच्छा, तो फिर एक बात सुनो।" वकील साहब ने कहा—"कैयू मेरा मुवक्किल था और तुम भी हो, इसलिए मैं जानना चाहता हूँ कि

* एक विशेष ढङ्ग से बना हुआ हॉल जिसमें विज्ञान पढ़ाया जाता है।

इस मामले में मैं क्या करूँ। तुमने उस हत्यारे को अपने पास छिपाने का पागलपन तो नहीं किया है ?"

"अटरसन, मैं परमात्मा की क़सम खाकर कहता हूँ" डाक्टर ने विचलित होकर तीव्र स्वर में कहा--"कि मैं अब उसका मुँह भी फिर कभी नहीं देखूँगा। अपनी इज्ज़त की क़सम खाकर मैं तुमसे कहता हूँ कि अब इस दुनिया में मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। अब सब बातें ख़त्म हो गईं और उसे अब मेरी मदद की कोई ज़रूरत भी नहीं रह गई। तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह मैं उसे जानता हूँ। वह ख़तरे से एकदम बाहर है अब, और अब फिर कभी उसकी शक्ल भी नहीं दिखाई देगी।"

वकील साहब ने डाक्टर की बात उदास मन से सुनी और डाक्टर का उतावलापन उन्हें बिलकुल अच्छा नहीं लगा।

वे कहने लगे--"तुम्हें पूरा विश्वास है न कि वह बिलकुल सुरक्षित है, फिर भी अगर मुक़दमा चला, तो हो सकता है कि तुम्हें भी अदालत में आना पड़े।"

"नहीं, नहीं, मुझे पूरा विश्वास है और इस विश्वास के कई कारण हैं। मैं किसी को भी नहीं बतला सकता।" डाक्टर ने उत्तर दिया--"हाँ, लेकिन एक बात पर तुम मुझे सलाह ज़रूर दे सकते हो। मुझे आज ही एक ख़त मिला है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं उसे पुलिस को दिखा दूँ या नहीं। अब यह मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम वही करोगे, जो उचित और ठीक होगा। मुझे तुम पर पूरा-पूरा विश्वास है।"

"शायद तुम्हें यह डर है कि इस ख़त से कहीं हाइड का पता न लग जाय ?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"नहीं, सो बात तो नहीं है," डाक्टर जैकिल ने उत्तर दिया--"मुझे अब उसकी कोई परवा नहीं है। वह चाहे जहन्नुम में जाय, मैं तो

अब हमेशा के लिए उसे छोड़ चुका। पर मैं सोच रहा था कि मेरा नाम इससे कितना बदनाम होगा।"

मिस्टर अटरसन कुछ देर के लिए विचार-निमग्न हो गये। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि डाक्टर इतनी जल्दी इतना स्वार्थी कैसे हो गया, पर इससे उन्हें ख़ुशी हुई।

"अच्छा", आख़िर वे कहने लगे—"तो मुझे वह ख़त दिखाओ।"

डाक्टर ने एक पत्र निकालकर उन्हें दिखाया। वह खड़े हैंड-राइटिंग में कुछ विचित्र प्रकार से लिखा हुआ था और उसके नीचे हस्ताक्षर थे "एडवर्ड हाइड।" अत्यन्त संक्षेप में उस पत्र का अभिप्राय यही था कि डाक्टर जैकिल ने लेखक के साथ अनेक भलाइयाँ की हैं, जिनका बदला वह नहीं दे सका, या दिया भी तो बुराइयाँ करके और अब डाक्टर को उसके लिए चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि अपनी रक्षा का प्रबन्ध उसने स्वयं कर लिया है।

वकील साहब को यह पत्र बहुत जँचा; क्योंकि इससे डाक्टर जैकिल और मिस्टर हाइड की दोस्ती की असलियत खुल गई और फिर उनके जो शक थे, वे भी दूर हो गये।

"और इसका लिफ़ाफ़ा कहाँ है?" वकील साहब ने पूछा। "उसे तो मैंने जला डाला," डाक्टर जैकिल ने उत्तर दिया, "पर जला देने पर मुझे ख़याल आया कि मैं कैसी ग़लती कर बैठा, लेकिन उस पर कोई डाक की मोहर नहीं लगी थी; क्योंकि इसे कोई आदमी दे गया था।"

"क्या मैं इस ख़त को अपने पास रख लूँ?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"मैं अब कुछ नहीं कह सकता। मैं अपना आत्म-विश्वास खो चुका हूँ। अब आपका जो जी चाहे, सो समझ-सोचकर कीजिए।" डाक्टर जैकिल ने उत्तर दिया।

"अच्छा, तो मैं सोचूँगा।" वकील साहब ने उत्तर दिया—"पर एक बात और—तुम्हारी वसीयत में तुम्हारे ग़ायब हो जाने की जो बात लिखी गई थी, वह शायद मिस्टर हाइड की ही लिखाई हुई थी।"

डाक्टर को जैसे मूर्च्छा-सी आ गई। आँखें बन्द किये हुए बैठे रहे और मिस्टर अटरसन के प्रश्नोत्तर में केवल सिर हिला दिया।

मिस्टर अटरसन फिर बोले—"मैं जानता हूँ कि वह तुम्हारा क़त्ल करना चाहता था, पर चलो तुम ख़ूब बचे!"

"पर मुझे एक बड़ा भारी सबक़ मिल गया।" डाक्टर ने गंभीर होकर उत्तर दिया—"उफ़! कैसा सबक़ मिला है मुझे अटरसन!" और यह कहकर उन्होंने अपने हाथों से अपना मुँह ढक लिया।

मिस्टर अटरसन उठकर चल दिये। दरवाज़े पर पहुँचकर वे पूल से दो बातें करने के लिए तनिक ठहर गये।

"अच्छा, यह तो बताओ" वकील साहब ने पूल से पूछा—"कि आज जो आदमी एक ख़त लेकर आया था, वह देखने में कैसा था?"

किंतु पूल ने उत्तर दिया—"आज तो डाक के सिवा और कोई ख़त नहीं आया और डाक में भी सिर्फ़ कुछ सरकुलर ही थे।"

यह सुनकर मिस्टर अटरसन के मन में फिर शंका उत्पन्न हो गई। रास्ते में उन्होंने सोचा—"हो सकता है वह ख़त लैबोरेटरी की खिड़की में से डाल दिया गया हो। पर यह भी मुमकिन है कि वहीं कमरे में डाक्टर के पास बैठकर हाइड ने उसे लिखा हो और अगर यही बात है तब तो इसे होशियारी से रखना चाहिए और इससे बहुत काम निकाला जा सकता है।"

जाते-जाते रास्ते में मिस्टर अटरसन ने पेवमैंट* पर अख़बार बेचनेवाले छोकरों को चिल्ला-चिल्लाकर कहते सुना—

"ख़ास ख़बर! ख़ास ख़बर—बिलकुल ताज़ी ख़बर—एम० पी०† की सनसनीदार हत्या!"

यह सुनकर मिस्टर अटरसन को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने सोचा—'मेरे एक दोस्त और मुवक्किल के मरने पर कैसी आवाज़ें लग रही हैं!—

---

* सड़क के किनारे-किनारे पैदल जानेवालों के लिए पटरी।

† पार्लियामेंट का सदस्य (मेम्बर आफ़ पार्लियामेंट)।

और वहीं एक दूसरे अच्छे दोस्त और मुवक्किल का नाम भी इसी तरह न पुकारा जाय !"

अब जो निर्णय करने का उत्तरदायित्व मिस्टर अटरसन के ऊपर था, उसका पालन करना उनके लिए बड़ा कठिन हो उठा। वे अद्भुत स्वावलम्बी थे और उन्हें कभी किसी की सहायता लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी; पर इस निर्णय के विषय में उन्हें परामर्श अनिवार्य मालूम हुआ। पर उचित परामर्श मिले कहाँ से और किससे, इसी की खोज उन्हें करनी थी।

अपने घर पहुँचकर मिस्टर अटरसन अँगीठी के पास बैठ गये। इतनी देर में ही उनके हेड मुहर्रिर मिस्टर गैस्ट भी आ गये। वे भी उन्हीं के पास बैठ गये और दोनों मिलकर पुरानी शराब पीने लगे। वह शराब मिस्टर अटरसन के घर में बरसों से गड़ी रक्खी थी। शहर के ऊपर कोहरा अब भी छा रहा था। शाम हो चुकी थी। सड़कों पर लैम्प जल रहे थे और ऐसे लगते थे जैसे कार्बंकल फोड़े हों। तेज़ हवा की तरह शोर करती हुई भीड़ की भीड़ सड़कों पर चल रही थी।

जो शराब वे लोग पी रहे थे, उसका तीखापन मिट चुका था और रंग भी उड़ चुका था।

लन्दन के कोहरे को उड़ा देने के लिए अंगूर की पहाड़ियों पर से पतझर के मौसम की दोपहर की गरम हवा के झोंके आनेवाले थे।

अनजाने ही मिस्टर अटरसन पसीज उठे। मिस्टर गैस्ट से वे अपनी बहुत कम बातें छिपाते थे और फिर भी जितनी बातें छिपाना चाहते थे, उतनी छिपा नहीं पाते थे। मिस्टर गैस्ट अक्सर ही काम से डाक्टर जैकिल के यहाँ जाया करते थे। वे पूल को भी जानते थे, इसलिए यह कैसे हो सकता था कि मिस्टर हाइड की बात का उन्हें पता न चलता और फिर उस पर वे स्वयं कुछ न सोचते। "इस-लिए अच्छा तो यह होगा कि इस पत्र के विषय में इनकी राय ले ली जाय", मिस्टर अटरसन ने सोचा—"संभव है उसका भेद ये खोल सकें। और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि मिस्टर गैस्ट हैंडराइटिंग पहचानने

में बहुत होशियार हैं और वैसे भी अक़्लमन्द हैं। इनकी सलाह हमेशा उचित होती है। यह ख़त देखकर ये कुछ न कुछ ज़रूर बतलायेंगे और उससे मुझे मदद मिल सकती है।"

इस प्रकार सोचने-विचारने के बाद मिस्टर अटरसन ने मिस्टर गैस्ट से कहा, "सर डैनवर्स की हत्या सचमुच बहुत बुरी हुई!"

"क्यों नहीं जनाब! और इससे शहर में भी काफ़ी सनसनी फैल गई है।" मिस्टर गैस्ट ने उत्तर दिया, "हत्यारा एकदम पागल था?"

"इस मामले में आपकी राय जानना चाहूँगा", मिस्टर अटरसन ने कहा—"मिस्टर हाइड का ही लिखा हुआ मेरे पास एक ख़त है, लेकिन यह बात हमारे आपस के बीच में ही रहनी चाहिए। हाँ, तो मेरी समझ में नहीं आता कि इस ख़त से मैं क्या फ़ायदा उठा सकता हूँ। यह सब है तो बड़ा ज़लील काम, पर क्या किया जाय; फिर भी करना तो है ही," कहकर मिस्टर अटरसन ने वह ख़त निकालकर मिस्टर गैस्ट को दिखाया—"देखो ये रहे हत्यारे हाइड के दस्तख़त।"

मिस्टर गैस्ट की आँखें पत्र को देखकर चमक उठीं। उसे हाथ में लेकर वे बड़े ध्यान से देखने लगे।

"नहीं, जनाब! यह आदमी पागल नहीं हो सकता। पर हाँ, राइटिंग कुछ अजीब ज़रूर है।" मिस्टर गैस्ट ने पत्र की जाँच करके कहा।

"और लिखनेवाला भी कुछ कम अजीब नहीं है", मिस्टर अटरसन ने उत्तर दिया।

इतने में ही नौकर एक चिट्ठी लेकर आया।

"क्या डाक्टर जैकिल के पास से आई है?" मिस्टर गैस्ट ने पूछा—"मैं उनका भी राइटिंग पहचानता हूँ। कोई प्राईवेट बात न हो, तो लाइए इसे भी देखूँ।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। शाम को खाने के लिए निमंत्रण भेजा है। क्यों? देखना चाहते हो?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"हाँ, बस ज़रा एक मिनिट," कहकर मिस्टर गैस्ट ने मिस्टर अटरसन के हाथ में से वह चिट्ठी ले ली और पहले पत्र के बराबर रखकर उन दोनों की राइटिंग का मिलान करने लगे।

"बस, ठीक है, लीजिए," मिस्टर गैस्ट ने वह निमंत्रणपत्र वकील साहब को लौटाते हुए कहा—"दोनों दस्तख़त काफ़ी दिलचस्प हैं।"

दोनों कुछ क्षण चुप रहे। इस मौन में मिस्टर अटरसन कुछ उद्विग्न से दिखाई पड़े। फिर सहसा उन्होंने पूछा—"मिस्टर गैस्ट, आपने इन दोनों का मुक़ाबला क्यों किया?"

"सुनिए, जनाब," मिस्टर गैस्ट ने कहा—"दोनों राइटिंग बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं—एक ही हाथ के लिखे मालूम होते हैं, सिर्फ़ झुकाव में फ़र्क़ है।"

"ताज्जुब है।" मिस्टर अटरसन ने कहा।

"जैसा आप कहते हैं, सचमुच ताज्जुब की बात है।" मिस्टर गैस्ट ने उत्तर दिया।

"मैं इस चिट्ठी की बात किसी से नहीं कहूँगा।" वकील साहब ने कहा।

"नहीं, नहीं। ठीक है। अभी ज़रूरत ही क्या है? मैं सब समझता हूँ।" हेड मुहर्रिर ने वकील साहब की बात का समर्थन किया।

मिस्टर गैस्ट के चले जाने पर मिस्टर अटरसन ने उस चिट्ठी को अपनी तिजोरी में बंद कर दिया और सोचा—"क्या हेनरी जैकिल एक हत्यारे के लिए जाल रच सकता है! उफ़!"

और यह सोचकर उनकी नसों का ख़ून जैसे जमने लगा।

---

६

## डाक्टर लैनियन की मृत्यु

समय बीतता गया।

सर डैनवर्स की मृत्यु एक सार्वजनिक हानि समझी गई थी, इसलिए हत्यारे को पकड़ने के लिए हज़ारों पौंड का पुरस्कार सरकार ने घोषित किया

था; पर मिस्टर हाइड का कहीं कोई पता नहीं चला। वह ऐसा ग़ायब हो गया, जैसे कभी पैदा ही न हुआ हो। उसके बहुत कुछ पुराने कारनामे खुले—उसकी अमानुषिक और हिंसक निर्दयता की निर्मम कहानियाँ, उसके बदमाश दोस्त, और भी ऐसी ही बहुत-सी बातें जिनसे उसके प्रति लोगों की घृणा बढ़ती ही गई, घटी नहीं। इधर-उधर चारों तरफ़ उसके कारनामों की चर्चा सुनाई पड़ती थी, लेकिन उसके नाम-निशान का कोई पता नहीं लग रहा था। उस रात को हत्या करने के बाद दूसरे दिन सुबह से उसने अपना सोहोवाला घर छोड़ा तो वह बिल्कुल हवा हो गया।

धीरे-धीरे जैसे-जैसे समय बीतता गया, मिस्टर अटरसन की इस हत्या की परेशानी दूर होने लगी और उनका मन शान्त रहने लगा। उनका विचार यह था कि हाइड के ग़ायब हो जाने से तो सर डैनवर्स की हत्या का बदला ज़रूरत से ज़्यादा चुक गया है। इसलिए उन्हें सन्तोष हो गया था।

हाइड के रूप में अपने ऊपर से शनीचर उतर जाने पर डाक्टर जैकिल का नया जीवन शुरू हुआ। अपने एकांतवास को छोड़कर अब वे अपने सभी पुराने दोस्तों से ख़ूब अच्छी तरह मिलने-जुलने और उनकी ख़ातिर करने लगे। अभी तक तो वे अपनी दानशीलता के लिए ही प्रसिद्ध थे, किन्तु अब अपनी ईश्वर-भक्ति के लिए भी प्रसिद्ध हो गये। अब वे घर में घुसे नहीं बैठे रहते वरन् बाहर निकलकर काम किया करते हैं; दूसरों की सहायता करने में अपना समय लगाते हैं। उनका मुख फिर एक बार खिल उठा था, जैसे उनके अन्तर की सेवा-भावना उस पर चमक उठी हो! दो महीने से अधिक तक डाक्टर इसी प्रकार शान्त-चित्त रहे।

आठ जनवरी को मिस्टर अटरसन डाक्टर के घर एक छोटी-सी दावत में खाना खाने गये थे। डाक्टर लैनियन वहाँ मौजूद थे। डाक्टर जैकिल अपने दोनों मित्रों को उसी स्नेह-दृष्टि से देख रहे थे, जिससे वे अपनी परस्पर घनिष्ठता के दिनों में देखा करते थे।

किन्तु बारह और चौदह जनवरी को जब अटरसन उनके घर पर मिलने गये, तब डाक्टर ने मिलने से इन्कार कर दिया।

"डाक्टर साहब फिर अकेले रहने लगे हैं," पूल ने कहा—"और आजकल किसी से नहीं मिलते।"

पन्द्रह तारीख़ को मिस्टर अटरसन फिर उनके घर गये, लेकिन फिर डाक्टर जैकिल ने मिलने से इन्कार कर दिया।

इधर पिछले दो महीने से वे डाक्टर जैकिल से रोज़ मिलते थे, इसलिए उनकी मिलने की आदत भी पड़ गई थी। पर इस तरह तीन बार मुलाक़ात न होने से मिस्टर अटरसन का मन अकेलेपन के भार से व्यथित हो उठा। किसी भी तरह चैन पाने के लिए उन्होंने फिर सोलह तारीख़ की रात को मिस्टर गैस्ट को अपने साथ खाना खाने के लिए बुला लिया और सत्रह तारीख़ को स्वयं डाक्टर लैनियन के घर चले गये।

डाक्टर लैनियन के घर पर उन्हें अंदर जाने की अनुमति तो मिल गई, लेकिन अंदर कमरे में पहुँचकर जब उन्होंने लैनियन की सूरत देखी, तो दङ्ग रह गये। उनके मुँह पर मुर्दनी सी छाई हुई थी। गुलाब-सा लाल चेहरा पीला पड़ गया था। शरीर पर मांस का नाम नहीं था, हड्डियाँ ही हड्डियाँ रह गई थीं। सिर के बाल गिर गये थे और जो बचे थे, वे सफ़ेद हो गये थे!

फिर भी डाक्टर लैनियन के इस परिवर्तन की ओर मिस्टर अटरसन का ध्यान इतना नहीं गया, जितना उनकी आँखों की ओर, जिनमें से यह साफ़ झलकता था कि उनके मन में कोई भयानक डर समा गया है। डाक्टर का मौत से डर जाना तो संभव नहीं; फिर भी मिस्टर अटरसन ने सोचा कि हो सकता है यही बात हो—'आख़िर वह डाक्टर है। अपनी हालत ख़ुद जानता है। किसी तरह जान गया होगा कि मुझे अब गिनती के दिन जीना है और इसी बात का ज्ञान उसे घुलाये दे रहा होगा।"

"तुम्हारी तबियत बहुत ख़राब है!" मिस्टर अटरसन ने कहा।

"हाँ, अब मेरी मौत आ पहुँची है।" डाक्टर लैनियन ने उत्तर दिया। उनके स्वर में दृढ़ता थी, घबराहट नहीं।

"मुझे एक बड़ा भारी धक्का लगा है और उससे अब मैं बच नहीं पाऊँगा। बस, कुछ ही दिनों और ज़िंदा हूँ। वैसे मैंने ज़िंदगी का बहुत सुख उठाया और मुझे ज़िंदगी प्यारी थी। मैं सोचा करता हूँ कि अगर हम लोगों को इसकी सब कुछ असलियत मालूम हो जाय, तो हम जल्दी से जल्दी मर जाना पसंद करेंगे।"

"जैकिल भी तो बीमार है," मिस्टर अटरसन ने कहा—"क्या तुम देखने गये थे?"

यह सुनते ही डाक्टर लैनियन की मुद्रा बदल गई। उनके हाथ काँपने लगे, जिन्हें उठाकर वे कहने लगे—"मैं जैकिल की सूरत तो सूरत उसका नाम भी सुनना नहीं चाहता। उससे मैं अब सब नाता तोड़ चुका हूँ। अब कभी फिर उसकी बात मत करना। मेरे लिए वह मर गया!"

"यह क्या कहते हो!" मिस्टर अटरसन ने कहा, फिर कुछ चुप रहकर बोले—"क्या मैं कुछ नहीं कर सकता? लैनियन, हम तीनों ही बड़े पुराने दोस्त हैं और अब कोई नई दोस्तियाँ करने तो जायँगे नहीं।"

"नहीं! नहीं! अब कुछ नहीं हो सकता।" डाक्टर लैनियन ने उत्तर दिया—"उसी से जाकर पूछो न!"

"लेकिन वह तो मुझसे मिलता भी नहीं!" वकील साहब ने कहा।

यह तो कोई ताज्जुब की बात नहीं!" लैनियन का उत्तर था, "मेरे मरने के बाद अटरसन तुम्हें सब भला-बुरा मालूम होगा। पर अभी मैं तुम्हें कुछ नहीं बतला सकता। अगर बैठकर कुछ और बातें करनी हों, तब तो ठहरो, वरना ईश्वर के लिए अभी चले जाओ।"

घर पहुँचते ही मिस्टर अटरसन ने डाक्टर जैकिल को एक चिट्ठी लिखी, जिसमें अपने से न मिलने की शिकायत थी और लैनियन से झगड़े की वजह पूछी थी।

दूसरे दिन डाक्टर जैकिल का एक लम्बा-सा उत्तर आया, जिसके शब्दों में बड़ी करुणा भरी थी पर कहीं कहीं कुछ रहस्यमय सा भी था। लैनियन के झगड़े का अब कोई इलाज नहीं है। लेकिन उसमें उसका कोई क़सूर नहीं है, पर वह मुझसे मिलना नहीं चाहता और मैं भी यही ठीक समझता हूँ। अब आगे से मैं बिल्कुल अकेला ही जीवन बिताना चाहता हूँ, लेकिन इससे तुम्हें कोई ताज्जुब नहीं होना चाहिए और न यही समझना चाहिए कि अगर मैं तुमसे नहीं मिलता तो हमारी दोस्ती में कोई फ़र्क़ आ गया। मुझे अकेले ही मरने दो। मैंने ऐसा पाप किया है, जिसका मैं कठोर दंड भोगना चाहता हूँ, पर मैं तुम्हें बता नहीं सकता। अगर मैं बड़ा पापी हूँ, तो उन पापों का कठोर दंड भी मैं ही भुगत रहा हूँ। मैं नहीं जानता था कि दुनिया में ऐसे दुःख और डर भी हैं, जो आदमी को निर्बल कर देते हैं। और अटरसन, अगर सच्चे दोस्त के नाते तुम मेरे साथ कोई भलाई करना चाहते हो, मेरा दुःख हल्का करना चाहते हो, तो मुझसे फिर कभी मिलने न आना और न कुछ लिखना ही।"

यह पत्र पढ़कर मिस्टर अटरसन हक्के-बक्के-से रह गये। डाक्टर जैकिल पर से हाइड का कटुभाव दूर होने से और उनके फिर अपनी पहले की-सी हँसी-ख़ुशी और कामकाज में लौट आने से अटरसन ने समझा कि वे अब शेष जीवन बहुत सुख और आनन्द से बिता देंगे, परन्तु क्षण भर में ही यह दोस्ती—यह ख़ुशी—सब कुछ कैसे नष्ट हो गया। "ऐसा अकस्मात् और भयानक परिवर्तन पागलपन की निशानी है; लेकिन इस पत्र में तो जैकिल पागल मालूम नहीं होता—ज़रूर कोई और भेद है।" वकील साहब ने सोचा।

इसी घटना के लगभग एक सप्ताह बाद डाक्टर लैनियन बिलकुल चारपाई से लग गये और पन्द्रह दिन बाद चल भी बसे।

जिस दिन अटरसन अपने दोस्त को दफ़नाकर लौटे, उसी दिन रात को उन्होंने अपने दफ़्तर का ताला अन्दर से बन्द कर लिया और वहीं एक टिमटिमाती मोमबत्ती के उजाले में बैठकर उन्होंने अलमारी में से एक

लिफ़ाफ़ा निकाला जिस पर उनके स्वर्गीय मित्र के हाथ का लिखा हुआ था—"प्राइवेट—केवल मिस्टर जे० जी० अटरसन ही इसे खोलें और यदि उनकी मृत्यु हो जाय, तो इसे बिना खोले और पढ़े ही जला दिया जाय।"

यह पढ़कर मिस्टर अटरसन को उसे खोलकर पढ़ने में डर लगने लगा। उन्होंने सोचा—"आज ही तो मैं एक दोस्त को दफ़नाकर लौटा हूँ और क्या ताज्जुब कि इस ख़त की वजह से मुझे दूसरे को भी दफ़नाना पड़े।"

परन्तु, फिर उन्हें अपना यह भय अपने मृत मित्र के प्रति विश्वासघात प्रतीत हुआ और उन्होंने लिफ़ाफ़ा खोल डाला। इसके भीतर एक और वैसा ही बन्द लिफ़ाफ़ा निकला, जिस पर लिखा हुआ था—"इसे डाक्टर हेनरी जैकिल के मरने या ग़ायब होने के बाद खोलना।"

अटरसन को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। यहाँ फिर वही जैकिल के मर जाने या ग़ायब होने की बात थी, जो कि उस वसीयत में भी थी, जो अब उन्होंने जैकिल को लौटा दी थी। पर वसीयत में डाक्टर के ग़ायब होने की बात उन्होंने हाइड की दिखाई हुई समझी थी, और वहाँ उसका मतलब भी साफ़ ज़ाहिर था—हाइड जैकिल की हत्या करना चाहता था। परन्तु इसी बात को लिखने से लैनियन का क्या मतलब है? इस समस्या ने मिस्टर अटरसन को फिर परेशान कर दिया। उनके जी में आया कि इसे अभी खोलकर पढ़ लूँ और सारा रहस्य आज ही जान लूँ—किन्तु फिर दूसरे ही क्षण उन्होंने सोचा कि लैनियन की मृतात्मा के प्रति यह भयानक विश्वासघात होगा।

बस, यही विचारकर मिस्टर अटरसन ने उस लिफ़ाफ़े को भी अपनी तिजोरी में बन्द कर दिया।

जिज्ञासा को दबाना एक बात है और उस पर विजय प्राप्त करना दूसरी बात और यह सन्देह का विषय है कि फिर उस दिन के बाद मिस्टर अटरसन के हृदय में अपने जीवित मित्र डाक्टर जैकिल से मिलने की वही उत्सुकता तथा उत्कट इच्छा रही भी या नहीं।

मिस्टर अटरसन डाक्टर का बुरा नहीं चाहते थे, पर उनका ध्यान उन्हें डरा देता था और बेचैन कर देता था। वे अब भी डाक्टर के घर उनसे मिल जाते थे, पर मना होने पर बुरा नहीं मानते थे और दरवाज़े पर से ही पूल से उनका हाल पूछकर लौट आते थे। अन्दर घर में जाकर एक बन्द सुनसान कमरे में अकेले डाक्टर से बात करने की अपेक्षा मिस्टर अटरसन घर से बाहर खुले में सड़क पर खड़े-खड़े शहर का कोलाहल सुनते रहना अधिक पसन्द करते थे। दूसरे पूल के पास कोई नई और ख़ुशी की ख़बर भी मिस्टर अटरसन को सुनाने के लिए नहीं रहती थी। वह यही कह देता था कि पहले से भी ज़्यादा डाक्टर वहाँ लैबोरेटरी के ऊपर अपनी कोठरी में रहने लगे हैं। अक्सर ही रात को वहीं सो भी रहते हैं। अब वे पढ़ते नहीं हैं और बिलकुल चुप रहने लगे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वे किसी गहरे सोच में डूबे हुए हैं।

जब हर बार मिस्टर अटरसन को पूल से डाक्टर जैकिल के बारे में ऐसी ही एक-सी सूचना मिलने लगी, तब उन्होंने उनके घर अपना जाना धीरे-धीरे कम कर दिया।

——

## खिड़की की घटना

एक इतवार को फिर मिस्टर अटरसन मिस्टरऐनफ़ील्ड के साथ घूमते-घूमते पिछवाड़े उसी गली में जा निकले और जब वे उस दरवाज़े के सामने आये तो उसे देखने के लिए रुककर खड़े हो गये।

"अच्छा, तो वह कहानी अब ख़त्म हो आई। है न?" मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने पूछा, "क्योंकि अब मिस्टर हाइड का काम तमाम तो हो ही गया।"

"मैं तो यह नहीं समझता," मिस्टर अटरसन ने उत्तर दिया—"मैंने तुमसे कहा था न कि एक बार मैंने भी उसे देखा है और देखकर तुम्हारी भाँति घृणा की सी ही भावना मेरे मन में भी पैदा हुई।"

"देखने पर ऐसा ज़रूर ही होता," मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने उत्तर दिया, "और यह तो बताओ तुमने मुझे कैसा गधा समझा होगा कि मैं इतना भी नहीं जानता था कि यह दरवाज़ा डाक्डर जैकिल के पिछवाड़े का है! पर इसमें तुम्हारा भी कुछ कम क़सूर नहीं है; भला तुमने मुझे पहले से क्यों नहीं बताया था।"

"तो तुमने ही इसे ढूँढ़ निकाला न?" मिस्टर अटरसन ने कहा, "अगर यही बात है तो चलो, चौक में घुसकर खिड़कियाँ देखें। तुम्हें सच-सच बताऊँ न—मैं बेचारे जैकिल के बारे में बहुत चिंतित हूँ। यहाँ बाहर होते हुए भी मैं यह समझता हूँ कि वहाँ अंदर उन्हें किसी दोस्त की ज़रूरत तो होती ही होगी।"

चौक बहुत ठंडा था और किसी क़दर सीला हुआ भी। ऊपर आसमान में डूबते हुए सूरज की तेज़ लाली अब भी थी, पर नीचे चौक में अँधेरा हो आया था। तीनों खिड़कियों में से बीच की खिड़की अधखुली थी। इसी से बिलकुल सटे हुए डाक्टर जैकिल बैठे हुए थे। उनके मुख पर अकथनीय भयावह उदासी और दुश्चिन्ता छा रही थी।

"जैकिल!" मिस्टर अटरसन ने डाक्टर जैकिल को देखकर ज़ोर से कहा—"अच्छे तो हो न?"

"भई अटरसन, इधर मेरी तन्दुरुस्ती गिर गई है—बहुत गिर गई है," डाक्टर ने रूखेपन से उत्तर दिया, "और अब मैं ज़्यादा चलूँगा नहीं—चलो भगवान् की इच्छा!"

"तुम यार दिन-रात घर में ही घुसे रहते हो। हमारी और ऐनफ़ील्ड की तरह ज़रा घूमकर खाना हज़म किया करो। ये ऐनफ़ील्ड मेरे चचेरे भाई हैं।" मिस्टर अटरसन ने कहा—"आओ नीचे उतरकर। हम लोगों के साथ थोड़ा टहल लो।"

"भई अटरसन, तुम्हारी बड़ी मेहरबानी है," डाक्टर ने एक आह भरकर कहा,—"पर मैं मजबूर हूँ, बिलकुल मजबूर। लेकिन आज तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। मैं तुम्हें और मिस्टर ऐनफ़ील्ड को ऊपर बुला लेता, लेकिन यह जगह भले आदमियों के बैठने लायक़ नहीं है। गंदी पड़ी है।"

"अरे, तो क्या हुआ," मिस्टर अटरसन ने कहा—"हम लोग यहीं नीचे खड़े-खड़े बात कर लेंगे।"

"यही तो मैं भी अभी कहना चाहता था," डाक्टर ने मुस्कराकर कहा, लेकिन वह मुस्कान मुश्किल से उनके ओठों पर से मिटी होगी कि उनकी मुद्रा ऐसी क्रूर, भयावह और हताश हो उठी कि उसे देखकर नीचे खड़े हुए दोनों सज्जनों का ख़ून सूख गया। इस मुद्रा की उन दोनों ने बस एक झलक भर ही देखी थी; क्योंकि तुरंत ही डाक्टर ने खिड़की बंद कर ली थी, लेकिन उन लोगों को भयभीत करने के लिए वही बहुत काफ़ी थी।

चुपचाप दोनों ही लौट पड़े। वह गली भी पार कर आये, लेकिन दोनों में से किसी एक के मुँह से भी बोली नहीं निकली।

अब वे एक बड़ी आम चलनेवाली सड़क पर आ गये, जिसपर आज इतवार होते हुए भी काफ़ी चहल-पहल थी, तब मिस्टर अटरसन ने मुँह मोड़कर अपने साथी ऐनफ़ील्ड की ओर देखा। दोनों के दोनों सफ़ेद पड़ रहे थे। उनकी आँखों में भय समाया हुआ था।

"हे भगवान्! हे भगवान्! रक्षा करो! रक्षा करो!" मिस्टर अटरसन ने कहा।

किन्तु मिस्टर ऐनफ़ील्ड ने केवल अपना सिर हिलाया और चुपचाप ही अपनी राह पर चले गये।

——

# ८

# अन्तिम रात

एक दिन रात को खाना खाने के बाद मिस्टर अटरसन अँगीठी के पास बैठे ताप रहे थे कि पूल के एकाएक आ जाने से चौंक गये।

"अरे पूल! तुम कैसे? अच्छे तो हो?" पूल को देखकर मिस्टर अटरसन ने कहा—"क्यों, क्या तकलीफ़ है तुम्हें?...डाक्टर जैकिल की तबियत तो ठीक है न?"

"मिस्टर अटरसन," पूल ने उत्तर दिया—"कुछ गड़बड़ है।"

"अच्छा, पहले बैठ जाओ। लो यह शराब पिओ थोड़ी सी।" वकील साहब ने पूल को बैठने और शराब पीने का आदेश देते हुए कहा—"अब ज़रा ठीक से बतलाओ मुझे कि क्या बात है।"

"आप डाक्टर साहब की आदतें तो जानते ही हैं," पूल ने उत्तर दिया, "और कैसे वे अपने को उस कोठरी में बंद रखते हैं। हाँ, तो आजकल वे फिर उस कोठरी में बंद हैं और मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। मैं मरता भी तो नहीं!—मिस्टर अटरसन मुझे तो बड़ा डर लगता है!"

"साफ़-साफ़ बतलाओ, तुम्हें क्या डर लगता है?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

इस सवाल पर कोई ध्यान न देते हुए पूल ने कहा—"मुझे एक हफ़्ते भर से बहुत डर लग रहा है और अब मैं इसे सह नहीं सकूँगा!"

पूल की बात की सचाई उसकी सूरत से ही बोल रही थी। उसकी हालत बिगड़ी जा रही थी। आते-आते तो उसने एक नज़र मिस्टर अटरसन को देखा था, पर अब उसकी नज़र उनकी तरफ़ उठ ही नहीं रही थी। शराब का गिलास अभी तक उसके घुटने पर जैसा का तैसा

रक्खा था। उसने उसमें से अभी एक बूँद भी नहीं चखी थी। उसकी आँखें कमरे के फ़र्श पर एक कोने की ओर गड़ी हुई थीं। इसी हालत में वह फिर बोला—"मैं अब नहीं सह सकता।"

"पूल, मैं समझ रहा हूँ कि तुम्हारे डर की कोई ख़ास वजह है। जो बात हो सो मुझे ठीक-ठीक बता दो," मिस्टर अटरसन ने कहा।

पूल ने भर्राई हुई आवाज़ में जवाब दिया—"मैं समझता हूँ कि कुछ गड़बड़ है।"

"गड़बड़!" वकील साहब चीख़ पड़े और बहुत डर से गये और फिर झुँझला पड़े—"कैसी गड़बड़? क्या मतलब है तुम्हारा?"

"मुझे कुछ बताने की हिम्मत नहीं पड़ती।" पूल ने जवाब दिया—"आप ख़ुद ही चलकर देख लीजिए न!"

उत्तर में मिस्टर अटरसन स्वयं उठ खड़े हुए और ओवरकोट और टोप पहनकर चलने को तैयार हो गये। इससे उन्होंने देखा कि नौकर को बहुत ढाढ़स बँधा और शराब अब तक जैसी की तैसी अछूती रक्खी है।

वे दोनों चल दिये।

मार्च की ठंडी भयानक रात थी। आकाश में चन्द्रमा म्लान दिखाई पड़ रहा था—जैसे वायु के तीव्र झोंकों ने उसका मुख उलट दिया हो। और फटे-फटे छितरे-छितरे से बादल उड़े जा रहे थे। हवा इतनी तेज़ थी कि बात करने पर सुनाई भी नहीं पड़ती थी। मुँह पर उसके तेज़ थपेड़े ख़ून को सुन्न किये देते थे। सड़क के राहगीरों को वह जैसे उड़ा ले गई थी; क्योंकि मिस्टर अटरसन ने लंदन का वह भाग इतना सुनसान कभी पहले नहीं देखा था। पर वे उसे आदमियों से भरा हुआ देखना चाहते थे। आज न जाने क्यों अपने साथी मनुष्यों का सम्पर्क पाने की उत्कट अभिलाषा उनके हृदय में जाग उठी थी, जैसी कि जीवन में पहले कभी नहीं उठी थी। और आज उन्हें कुछ मुसीबत भी आती मालूम पड़ती थी।

अब वे चौक में पहुँचे, तब भी अंधड़ चल रहा था। सब कुछ धूल में ढका हुआ था। बग़ीचे के छोटे पतले पेड़ झुक झुककर रेलिंग से टकरा रहे थे।

रास्ते भर पूल मिस्टर अटरसन से एक-दो क़दम आगे चलता रहा था। अब पेवमैंट पर पहुँचकर वह बीच में ही खड़ा हो गया और हालाँकि सर्दी बहुत कड़ी थी, फिर भी उसने अपना टोप उतारा और जेब में से एक लाल रूमाल निकालकर माथे का पसीना पोंछने लगा, जो रास्ते में चलने के परिश्रम से नहीं निकला था, वरन् मन की परेशानी के कारण बह चला था। इस वक़्त उसका चेहरा सफ़ेद था और आवाज़ टूटी और भर्राई हुई।

"अच्छा साहब," पूल ने कहा—"तो अब हम आ पहुँचे। ईश्वर करे सब ठीक हो।"

"यही चाहिए पूल!" मिस्टर अटरसन ने जैसे आश्वासन दिया।

तत्पश्चात् नौकर ने अत्यंत सावधानी और सतर्कता से दरवाज़ा खटखटाया।

किसी ने अंदर से कुंडी खोली और पूछा—"कौन, पूल?"

"हाँ, मैं ही हूँ। सब ठीक है। किवाड़ों को खोलो।" पूल ने कहा।

दरवाज़ा खुला। जिस कमरे में उन्होंने पैर रक्खा, उसमें ख़ूब उजाला था और अँगीठी के पास घर के सब नौकर, नौकरानी और उनके बच्चे एक साथ ऐसे घुसे बैठे थे, जैसे भेड़ों का झुंड हो।

मिस्टर अटरसन को देखते ही नौकरानी सिसकने लगी और रसोइया चीख़कर कहने लगा—"ओह, मिस्टर अटरसन आ गये!" और उनकी ओर भागा जैसे उनसे चिपट जाना चाहता हो।

"यह क्या! यह क्या! तुम सब क्या कर रहे हो?" वकील साहब ने पूछा—"यह तो बहुत बदतमीज़ी है—बहुत बुरी बात है। तुम्हारे मालिक जान पायेंगे तो क्या सोचेंगे?"

"ये सब डरे हुए हैं।" पूल ने कहा।

इसके बाद सब एकदम चुप हो गये। कोई नहीं बोला, सिवाय नौकरानी के, जो ज़ोर से रोने लगी।

"अपनी ज़बान बन्द करो!" पूल ने उसे इतने ज़ोर से डाँटा कि वह स्वयं अपने तीखेपन से डर गया।

"अच्छा, अब एक मोमबत्ती जलाकर लाओ।" पूल ने एक बच्चा नौकर से कहा।

मोमबत्ती आ गई। पूल ने मिस्टर अटरसन से कहा—"आप मेरे पीछे-पीछे बग़ीचेवाले आँगन में चले आइए बहुत दबे पाँवों से। हाँ, और देखिए, अगर वे आपको अंदर बुलायें भी तो आप जाइएगा नहीं।"

ऐसी अप्रत्याशित घटना से मिस्टर अटरसन विचलित हो गये, परन्तु उन्होंने अपना साहस बटोरा और नौकर के पीछे-पीछे चले। लैबोरेटरी और चीर-फाड़ के कमरे में होकर, जहाँ काठ-कबाड़ बिखरा पड़ा था, वे थियेटर की सीढ़ियों पर पहुँचे। यहाँ पर पूल ने उन्हें हाथ हिलाकर रुककर सुनने का संकेत किया और स्वयं साहस करके ऊपर चढ़ता चला गया। वहाँ दरवाज़े पर पहुँचकर, जिस पर लाल फ़लालैन का वही पर्दा पड़ा था, उसने किवाड़ खटखटाये।

"मिस्टर अटरसन आपसे मिलना चाहते हैं।" पूल ने ज़ोर से कहा। ऐसा करते वक्त उसने फिर वकील साहब को कान लगाकर ध्यान से सुनने का इशारा किया।

अंदर से रोष-भरा उत्तर आया—"उनसे कहो, मैं किसी से भी नहीं मिल सकता!"

"अच्छा सरकार," पूल ने जैसे ख़ुश होकर उत्तर दिया और सीढ़ियों से उतरकर मोमबत्ती उठा ली और मिस्टर अटरसन को लौटाकर बड़ी रसोई में ले चला, जहाँ चूल्हा बुझ चुका था और फ़र्श पर चूहे दौड़ लगा रहे थे।

"सरकार," मिस्टर अटरसन की आँखों में अपनी दृष्टि गड़ाते हुए पूल ने कहा—"वह क्या मालिक की आवाज़ थी?"

मिस्टर अटरसन अब तक पीले पड़ गये थे, फिर भी पूल से नज़र मिलाकर उन्होंने उत्तर दिया—"नहीं तो! यह बहुत बदली हुई मालूम होती है।"

"बदल गई है न? ठीक! यही तो मैं भी सोचता था।" पूल ने समर्थन किया—"मैं तो मालिक के साथ बीस बरस से रहता हूँ। क्या उनकी आवाज़ भी नहीं पहचानता? नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। मैं समझता हूँ, मालिक अब उस कमरे में नहीं हैं। आठ दिन पहले ही वे ग़ायब कर दिये गये लगते हैं, जब हमने उन्हें 'भगवान्! भगवान्' चीख़ते सुना था। लेकिन अब उनकी जगह वहाँ कौन बैठा है और अभी तक क्यों मौजूद है, यह भगवान् ही जाने।"

"यह तो बड़ी अजीब बात है!" मिस्टर अटरसन ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"यह बात तो कुछ अनहोनी-सी लगती है पूल!" फिर उन्होंने अपनी उँगली को दाँतों तले चबाते हुए कहा—"अगर तुम्हारा कहना ही मान लिया जाय, तो इसका मतलब है—डाक्टर जैकिल का क़त्ल हो गया, लेकिन फिर क़ातिल अभी तक वहीं ठहरा हुआ क्यों है? यह बात तो कुछ जँचती नहीं। शायद तुम्हारा ख़याल ग़लत है।"

"ख़ैर, आपको समझाना ज़रा टेढ़ी खीर है। फिर भी मैं कोशिश करूँगा।" पूल ने उत्तर दिया—"पिछले हफ़्ते से बराबर वह, जो कोई भी हो, उस कमरे में रहता है, रात-दिन किसी दवाई के लिए चिल्लाया करता है, फिर भी अपने मन की दवा उसे नहीं मिलती। मालिक को जिस चीज़ की ज़रूरत होती थी, उसका नाम पर्चे पर लिखकर ज़ीने पर फेंक देते थे, पर इस हफ़्ते में पर्चों के सिवा और कुछ नहीं मिला। दरवाज़ा हर वक़्त बन्द रहता है, खाना भी मुश्किल से ही अंदर पहुँच पाता है। और सरकार, रोज़ दिन में तीन-चार बार उसने चीज़ें मँगाई हैं बाज़ार से और वापस की हैं—मुझे लंदन के सब कैमिस्टों* के पास दौड़ा मारा है। जब

---

* रसायन-पदार्थ बेचनेवाला।

कोई दवाई लेकर मैं लौटता, तो फ़ौरन ही उसे वापस करने के लिए मुझे दूसरा पर्चा लिखा मिलता; क्योंकि वह दवाई ख़ालिस नहीं होती थी और फिर किसी दूसरी दुकान से मँगाई जाती थी। मालूम नहीं क्यों, सरकार, उसे एक ख़ास दवाई की बहुत ज़रूरत है।"

"कोई पर्चा तुम्हारे पास है?" मिस्टर अटरसन ने पूछा। पूल ने अपनी जेबें टटोलीं और एक गुडीमुड़ी पर्चा निकालकर मिस्टर अटरसन को दिया। मोमबत्ती के उजाले में वकील साहब उसे पढ़ने लगे—

"मैसर्स मॉ को डाक्टर जैकिल का अभिवादन स्वीकार हो। वह उन्हें विश्वास दिलाता है कि जो दवाई आपने भेजी थी, वह शुद्ध नहीं है और इसलिए उसके काम की नहीं है। सन् १८–ई० में डाक्टर जे० ने यही चीज़ काफ़ी मात्रा में मैसर्स एम० से ख़रीदी थी। अब वह आपसे प्रार्थना करता है कि उसी क्वालिटी की वही दवाई तलाश करके एकदम भेज दीजिए, चाहे जितनी भी क़ीमत हो। डाक्टर जैकिल को इसकी बेहद ज़रूरत है।" यहाँ तक तो ख़त ठीक था, लेकिन अंत में जैसे एकाएक घसीटकर लिखा गया था—"ईश्वर के नाम पर मेरे लिए वही पुरानी दवाई भेज दीजिए।"

"यह तो बड़ी अजीब चिट्ठी है," मिस्टर अटरसन ने कहा और फिर एकाएक तेज़ी से पूछा—"यह चिट्ठी तुमने खोल कैसे ली?"

"वहाँ 'मॉ' की दुकान पर दुकानदार इसे पढ़कर एकदम नाराज़ हो गया और मेरी तरफ़ कूड़े की तरह फेंक दिया।" पूल ने जवाब दिया।

"यह तो डाक्टर का ही हैंड-राइटिंग है, पहिचानते हो न?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"कुछ-कुछ वैसा ही लगता तो मुझे भी था," नौकर ने सिर खुजलाते हुए कहा और फिर कुछ स्वर बदलकर बोला, "लेकिन राइटिंग से क्या होता है? मैंने तो उस आदमी को अपनी आँखों से देखा है!"

"देखा है?" मिस्टर अटरसन ने उसकी बात दोहराई—"अच्छा?"

"हाँ हाँ, कहता तो हूँ," पूल ने उत्तर दिया—"बात यों हुई कि एक बार मैं बग़ीचे में से एकाएक थियेटर में जा पहुँचा और उसी समय वह दवाई देखने के लिए सीढ़ियों पर उतरकर आया था या और किसी काम के लिए आया होगा; क्योंकि थियेटर का दरवाज़ा खुला हुआ था और वहाँ दूर एक कोने पर वह एक पेटी खखोड़ रहा था। जब मैं अंदर घुसा तो वह चीख़ पड़ा और एकदम ऊपर सीढ़ी पर चढ़कर अपने कमरे में चला गया। मुश्किल से एक मिनिट तक मैंने उसे देखा होगा, लेकिन मेरे रोएँ खड़े हो गये। सरकार, अगर वे हमारे मालिक थे, तो वे चेहरा लगाये क्यों थे? और मुझे देखते ही चूहे की तरह 'चीं', करके भाग क्यों खड़े हुए? मैं बीस बरस से उनकी सेवा कर रहा हूँ। और फिर........." कहते-कहते वह रुक गया और मुँह पर हाथ फेरने लगा।

"ये सब बातें तो और भी अजीब हैं," मिस्टर अटरसन ने कहा—"लेकिन अब मेरी समझ में कुछ-कुछ बात आ रही है। तुम्हारे मालिक ऐसे रोग से पीड़ित हैं जो रोगी को बहुत कष्ट भी देता है और उसे विकृत भी कर देता है। इसी से मैं समझता हूँ कि उनकी आवाज़ भी बदल गई है। और इसी लिए वे अब अपने दोस्तों से भी बचे-बचे रहते हैं और चेहरा लगाये रहते हैं और उन्हें उस दवाई की तलाश है जिससे बेचारे बिलकुल अच्छे हो जायँ! ईश्वर उनकी इच्छा पूरी करे!—मुझे तो इन सब अजीब बातों का यही मतलब समझ में आता है!"

"सरकार," नौकर ने कहा—"लेकिन वह आदमी तो मालिक नहीं थे। मेरे मालिक तो—" उसने रुककर अपने चारों तरफ़ देखा और फिर धीरे से कहा—"लम्बे-तगड़े तन्दुरुस्त आदमी हैं और जो आदमी मैंने देखा था, वह तो बिलकुल बौना है!"

अटरसन ने बीच में ही टोकना चाहा, लेकिन पूल अपनी बात कहे ही चला गया—"उफ़! आप क्या समझते हैं कि बीस बरस साथ

रहकर भी मैं अपने मालिक को नहीं पहचानता ? आप समझते हैं कि मैं इतना भी नहीं जानता कि उस कमरे के दरवाज़े को उनका सिर छूता है ? नहीं जनाब, वह चेहरेवाला आदमी कोई और था—मालिक नहीं और मेरा दिल कहता है कि मालिक को तो क़त्ल कर दिया गया !"

वकील साहब ने उत्तर दिया—"अगर तुम ऐसा कहते हो, तब तो मेरा यह कर्तव्य हो जाता है कि मैं मामले की तहक़ीक़ात अभी करूँ। यद्यपि मुझे अब भी यही विश्वास है कि यह चिट्ठी तुम्हारे मालिक के ही हाथ की लिखी हुई है, और मैं उन्हें परेशान भी नहीं करना चाहता, फिर भी दरवाज़ा तोड़कर मैं उनकी तलाश करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

"जैसा आप उचित समझें !" नौकर ने उत्तर दिया।

"और अब दूसरा सवाल यह उठता है कि" मिस्टर अटरसन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—"यह काम करे कौन ?"

"क्यों ? हम और आप मिलकर," नौकर ने निर्भीकता-पूर्वक उत्तर दिया।

"बस यही ठीक है। और अगर कोई बात गड़बड़ हुई तो इसका ज़िम्मा मैं लेता हूँ कि मैं तुम्हें फँसने नहीं दूँगा !" मिस्टर अटरसन ने पूल को विश्वास दिलाया।

थियेटर में एक कुल्हाड़ी पड़ी है, उसे मैं ले लूँगा और आप रसोई में से पोकर* ले लीजिए।"

रसोई में से वकील साहब ने वह भारी पोकर उठा लिया और पूल से कहा—"तुम जानते हो कि हम-तुम एक ख़तरनाक काम में हाथ डालने जा रहे हैं ?"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं, सरकार !" नौकर ने जवाब दिया।

---

* आँच खखोड़ने के लिए लोहे की एक छड़—जैसे हमारे यहाँ चिमटा।

"अच्छा, तब ठीक है। हम लोगों को आपस में दिल खोलकर बातें करनी चाहिएँ।" मिस्टर अटरसन ने कहा—"हम लोग जो कुछ कह रहे हैं, उससे भी अधिक जानते हैं। इसलिए सब बातें कर लेनी चाहिएँ पहले ही। तुम उस आदमी को पहचानते हो ?"

"सरकार, बात यह है कि वह इतनी जल्दी सीढ़ियों पर चढ़कर भागा कि मैं क़सम खाकर तो कह नहीं सकता कि मैं उसे अच्छी तरह पहचानता हूँ। जल्दी में ही मैंने उसे देखा था"। पूल ने उत्तर दिया—"और आप समझते हैं कि वह हाइड था ?—तो मैं कह सकता हूँ कि हाँ, वही था। क्योंकि वह उसी के बराबर लम्बा था और उसी की तरह फुर्तीला भी और फिर भला उस लैबेरेटरी के दरवाज़े से और दूसरा आदमी कौन घुस सकता था ! आपको शायद याद नहीं है कि सर डैनवर्स की हत्या करने के बाद जब वह भागा था, तब भी लैबेरेटरी की ताली उसी के पास थी। लेकिन, यही नहीं, मुझे यह भी तो मालूम नहीं कि आपने भी उसे कभी देखा है या नहीं ?"

"हाँ, देखा ही नहीं है, एक बार बातचीत भी की है।" अटरसन ने उत्तर दिया।

"तब तो और सबकी तरह आप भी जानते होंगे कि उस शख्स में कुछ बड़ी अजीब सी बात थी—ऐसी जिसे देखकर आदमी चकरा जाता था। सरकार, इससे और ज़्यादा अच्छी तरह मैं उसके उस अजीबपन को नहीं समझा सकता।" पूल ने कहा।

"मैं मानता हूँ। कुछ ऐसा ही मुझे भी लगा था।" मिस्टर अटरसन ने उत्तर दिया।

"बिलकुल ठीक, सरकार।" पूल ने कहा—"और जब वह चेहरेवाला आदमी बंदर की तरह कूदकर कमरे में घुसा, तो मेरा तो जैसे ख़ून जम गया ! मैं आपसे झूठ नहीं कहता मिस्टर अटरसन, मैं भी कुछ पढ़ा हूँ, और आदमी के अपना दिल भी होता है—मैं आपसे बाइबिल की क़सम खाकर कहता हूँ कि वह हाइड ही था !"

"एं, एं !" वकील साहब ने कुछ चौंककर कहा—"मुझे भी यही डर था ! उफ़—कुछ न कुछ बुरा होनेवाला है—आफ़त आनेवाली है ! और क्या बुराई का फल बुरा ही होगा। मैं अब तेरी बात मानता हूँ, बेचारा हैरी मारा गया ज़रूर। और भगवान् ही जाने, उसका हत्यारा उसी के कमरे में छिपा क्यों अब भी बैठा है ! अच्छा तो अब हमें बदला लेने के लिए कमर कस लेनी चाहिए। ब्रैडशा को बुलाओ।"

काँपता हुआ दरबान पुकार सुनकर आया। "ब्रैडशा, अब तुम भी तैयार हो जाओ," वकील साहब का आदेश हुआ, "मैं समझ रहा हूँ कि यह सब अजीब-सी बातें तुम्हें डरा रही हैं, लेकिन आज हम इनको हमेशा के लिए ख़त्म कर देंगे। पूल और मैं डाक्टर के कमरे का दरवाज़ा तोड़ने जा रहे हैं। अगर सब ठीक होगा तो सारा दोष मैं अपने सिर पर ले लूँगा। लेकिन अगर सचमुच कोई गड़बड़ हो और क़ातिल पीछे खिड़की से कूदकर भागने की कोशिश करे तो तुम लोग उसकी राह में बाहर लैबोरेटरी के द्वार पर मोटे-मोटे डंडे लेकर खड़े हो जाओ। जाओ, दस मिनट में अपनी जगह पर तैयार होकर पहुँच जाओ।"

ब्रैडशा के चले जाने पर वकील साहब ने अपनी घड़ी देखी और पूल से कहा—"चलो, अब हमें भी चल देना चाहिए।"

यह कहकर उन्होंने पोकर अपनी बग़ल में दाबा और आँगन की तरफ़ चल दिये।

ऊपर आसमान में चाँद को काली घटाओं ने बिल्कुल ढक लिया था और बिल्कुल निपट अँधेरी छाई हुई थी। हवा के झोंके रह-रहकर अंदर आते थे और उनकी मोमबत्ती की लौ को कँपा-कँपा देते थे।

थियेटर में पहुँचकर वे दोनों चुपचाप बैठकर इंतज़ार करने लगे।

लंदन का कोलाहल चारों तरफ़ से आता सुनाई पड़ रहा था; किन्तु आस-पास जो निःस्तब्धता छाई हुई थी, उसे ऊपर कमरे में किसी के इधर से उधर टहलने की पदध्वनि ही भंग कर रही थी।

पूल ने धीरे से कहा—"सरकार, यह इसी तरह दिन भर टहला करता था और रात को भी बहुत देर तक। जब कैमिस्ट के यहाँ से कोई नई दवाई का नमूना आता है, तभी इसका टहलना ज़रा रुकता है—पर इस हत्यारे की आत्मा बड़ी नीच होगी, तभी तो यह चैन से रहता है—इसके हर क़दम में मुझे ख़ून बोलता लगता है!—हाँ, सरकार ज़रा ध्यान से कान लगाकर सुनिए तो सही...........क्या यह मालिक के पैरों की आवाज़ है?"

क़दम धीमे, हल्के और उखड़े-उखड़े से पड़ रहे थे और डाक्टर जैकिल का क़दम भारी था। अटरसन ने यह आवाज़ सुनकर आह खींची और पूल से पूछा—"इसके सिवाय भी कोई और बात है?"

पूल ने सिर हिलाया—"हाँ, एक बार मैंने इसे रोते भी सुना है!"

"रोते? सो कैसे?" वकील साहब ने पूछा और एकाएक भयभीत हो उठे।

"औरत के रोने की सी आवाज़ थी, जिसे सुनकर मेरा भी जी रोने को हो आया।" पूल ने जवाब दिया।

दस मिनिट हो आये थे।

पूल ने फूस के नीचे से एक कुल्हाड़ी निकाली, और समीप की एक मेज़ पर मोम से मोमबत्ती चिपका दी, जहाँ से वह उन्हें अच्छी तरह उजाला दे सकती थी। अब वे साँस रोककर उस कमरे की ओर बढ़े जहाँ रात को उस सुनसान में कोई अनजान आदमी इधर से उधर बड़े इतमीनान के साथ टहलता मालूम होता था।

"जैकिल!" अटरसन ने ज़ोर से पुकारा—"मैं अभी तुमसे मिलना चाहता हूँ।"

किन्तु कोई उत्तर नहीं आया। एक क्षण बाद वकील साहब फिर ज़ोर से चिल्लाये, "मैं तुम्हें पहले से होशियार किये देता हूँ! हम लोग तुम पर शक करते हैं और तुम्हें हमसे मिलना ही पड़ेगा। अगर सीधी तरह से नहीं मिलोगे, तो फिर हम तुमसे टेढ़ी तरह से मिलेंगे—राज़ी से नहीं, तो ज़बर्दस्ती।"

"अटरसन !" अंदर से आवाज़ आई—"भगवान् के लिए मुझ पर दया करो !"

"आह यह तो जैकिल की आवाज़ नहीं है—हाइड की आवाज़ है यह !" अटरसन ने फिर चीख़कर कहा—"पूल, दरवाज़ा तोड़ो !"

पूल ने कुल्हाड़ी अपने कन्धे से उठाई और किवाड़ों में दे मारी। वह वार पर वार करने लगा। सारा मकान जैसे हिलने लगा। लेकिन किवाड़ों की लकड़ी बहुत मज़बूत थी और उनकी जड़ाई भी। पाँचवें वार पर ताला टूटकर एक तरफ़ जा पड़ा और किवाड़ अंदर क़ालीन पर 'चर्र मर्र' करके गिर पड़े।

इसके बाद एकदम भयानक सन्नाटा हो गया। दोनों आक्रमणकारी क्षण भर अपने इस कार्य से स्तंभित खड़े रह गये। फिर उन्होंने धीरे से कमरे के अंदर झाँककर देखा।

कमरे में पूर्ण नीरवता थी। लैम्प का उजाला हो रहा था। अँगीठी में अँगारे जल रहे थे, जिस पर एक केतली में पानी सनसना रहा था। दो-एक ड्रार खुले हुए थे। आफ़िस-टेबिल पर काग़ज़ वग़ैरह तरतीब से लगे रक्खे थे। अँगीठी के पास चाय का पूरा सामान लगा हुआ था। उन शीशे की चमकती हुई अल्मारियों को छोड़कर, जिनमें कैमीकल्स ( रासायनिक पदार्थ ) भरे रक्खे थे, वह कमरा शायद लंदन में उस रात को सबसे अधिक शांत और सौम्य था।

कमरे के बीचोबीच क़ालीन पर एक सिकुड़ा हुआ शरीर पड़ा तड़प रहा था। वे दोनों उसके समीप दबे पाँवों पहुँचे और झुककर देखा—अरे, यह तो मिस्टर एडवर्ड हाइड था ! डाक्टर के कपड़ों की तरह बड़े और ढीले-ढाले कपड़े पहने था वह। उसका मुँह अभी कुछ हिलता सा लगता था, जैसे अभी जान बाक़ी हो; लेकिन वास्तव में उसकी जान बिलकुल निकल चुकी थी। उसके हाथ में एक शीशी थी जिससे बड़ी तीखी महक निकल रही थी। इससे मिस्टर अटरसन ने अनुमान कर लिया कि हाइड ने ज़हर खाकर आत्महत्या कर ली है।

"हमें आने में कुछ देर हो गई।" उन्होंने कुछ कड़ाई के साथ कहा—"न तो इसे अब हम बचा सकते हैं और न इसके अपराधों की इसे सज़ा ही दे सकते हैं। ख़ैर, हाइड ने जैसा किया, उसका फल पा लिया। अब क़िस्सा ख़त्म हुआ। अब तो हमें सिर्फ़ डाक्टर जैकिल को ढूँढ़ निकालना है।"

इस मकान का सबसे बड़ा हिस्सा तो थियेटर ने ही घेर रक्खा था; क्योंकि नीचे की मंज़िल में सिर्फ़ एक यही था और उजाले के लिए आँगन। इसी में ऊपर की तरफ़ वह कमरा भी था, जो एक तरह से मकान के एक सिरे पर दूसरी मंज़िल की तरह था और बाहर चौक की तरफ़ खुलता था। गली की ओर एक दालान था जो थियेटर को मुख्य द्वार से मिलाता था और यहीं पर डाक्टर के कमरे में जाने के लिए दूसरा बाहरी ज़ीना था। इनके सिवाय कुछ अँधेरी कोठरियाँ थीं और एक तहख़ाना भी। वे कोठरियाँ ख़ाली पड़ी थीं और बरसों से नहीं खुली थीं और उनमें बहुत धूल पड़ी हुई थी। उनको एक नज़र से देखना ही काफ़ी था। तहख़ाने में ज़रूर दुनिया भर का काठ-कबाड़ भरा था, जिसमें बहुत कुछ पुराने मकान-मालिक का भी था। जब इसका दरवाज़ा खोलकर मिस्टर अटरसन और पूल ने अंदर घुसने की कोशिश की, तो उनके ऊपर एक मकड़ी का बहुत बड़ा जाला आ गिरा, जो वहाँ बरसों से ही लगा हुआ था। इससे उन लोगों ने समझ लिया कि इस तहख़ाने की तलाशी लेना बेकार ही है।

इस प्रकार जीवित या मृत किसी भी रूप में वहाँ डाक्टर जैकिल का कोई पता-निशान उन लोगों को नहीं मिला।

दालान में पहुँचकर पूल ने फ़र्श के पत्थरों पर पैर पटककर कहा, "हो सकता है, उन्हें इसके नीचे दफ़ना दिया हो।"

"या हो सकता है कि वे भाग गये हों।" मिस्टर अटरसन ने कहा और गली के पिछवाड़ेवाले दरवाज़े की जाँच करने लगे। दरवाज़े में ताला बंद था और वहीं दालान में पास एक पत्थर पर ताले की ताली भी पड़ी थी, पर उसमें बहुत ज़ंग लगी हुई थी।

"अटरसन !" अंदर से आवाज़ आई—"भगवान् के लिए मुझ पर दया करो !"

"आह यह तो जैकिल की आवाज़ नहीं है—हाइड की आवाज़ है यह !" अटरसन ने फिर चीख़कर कहा—"पूल, दरवाज़ा तोड़ो !"

पूल ने कुल्हाड़ी अपने कन्धे से उठाई और किवाड़ों में दे मारी। वह वार पर वार करने लगा। सारा मकान जैसे हिलने लगा। लेकिन किवाड़ों की लकड़ी बहुत मज़बूत थी और उनकी जड़ाई भी। पाँचवें वार पर ताला टूटकर एक तरफ़ जा पड़ा और किवाड़ अंदर क़ालीन पर 'चर्र मर्र' करके गिर पड़े।

इसके बाद एकदम भयानक सन्नाटा हो गया। दोनों आक्रमणकारी क्षण भर अपने इस कार्य से स्तंभित खड़े रह गये। फिर उन्होंने धीरे से कमरे के अंदर झाँककर देखा।

कमरे में पूर्ण नीरवता थी। लैम्प का उजाला हो रहा था। अँगीठी में अँगारे जल रहे थे, जिस पर एक केतली में पानी सनसना रहा था। दो-एक ड्रार खुले हुए थे। आफ़िस-टेबिल पर काग़ज़ वग़ैरह तरतीब से लगे रक्खे थे। अँगीठी के पास चाय का पूरा सामान लगा हुआ था। उन शीशे की चमकती हुई अलमारियों को छोड़कर, जिनमें कैमीकल्स ( रासायनिक पदार्थ ) भरे रक्खे थे, वह कमरा शायद लंदन में उस रात को सबसे अधिक शांत और सौम्य था।

कमरे के बीचोबीच क़ालीन पर एक सिकुड़ा हुआ शरीर पड़ा तड़प रहा था। वे दोनों उसके समीप दबे पाँवों पहुँचे और झुककर देखा—अरे, यह तो मिस्टर एडवर्ड हाइड था ! डाक्टर के कपड़ों की तरह बड़े और ढीले-ढाले कपड़े पहने था वह। उसका मुँह अभी कुछ हिलता सा लगता था, जैसे अभी जान बाक़ी हो; लेकिन वास्तव में उसकी जान बिलकुल निकल चुकी थी। उसके हाथ में एक शीशी थी जिससे बड़ी तीखी महक निकल रही थी। इससे मिस्टर अटरसन ने अनुमान कर लिया कि हाइड ने ज़हर खाकर आत्महत्या कर ली है।

"हमें आने में कुछ देर हो गई।" उन्होंने कुछ कड़ाई के साथ कहा— "न तो इसे अब हम बचा सकते हैं और न इसके अपराधों की इसे सज़ा ही दे सकते हैं। ख़ैर, हाइड ने जैसा किया, उसका फल पा लिया। अब क़िस्सा ख़त्म हुआ। अब तो हमें सिर्फ़ डाक्टर जैकिल को ढूँढ़ निकालना है।"

इस मकान का सबसे बड़ा हिस्सा तो थियेटर ने ही घेर रक्खा था; क्योंकि नीचे की मंज़िल में सिर्फ़ एक यही था और उजाले के लिए आँगन। इसी में ऊपर की तरफ़ वह कमरा भी था, जो एक तरह से मकान के एक सिरे पर दूसरी मंज़िल की तरह था और बाहर चौक की तरफ़ खुलता था। गली की ओर एक दालान था जो थियेटर को मुख्य द्वार से मिलाता था और यहीं पर डाक्टर के कमरे में जाने के लिए दूसरा बाहरी ज़ीना था। इनके सिवाय कुछ अँधेरी कोठरियाँ थीं और एक तहख़ाना भी। वे कोठरियाँ ख़ाली पड़ी थीं और बरसों से नहीं खुली थीं और उनमें बहुत धूल पड़ी हुई थी। उनको एक नज़र से देखना ही काफ़ी था। तहख़ाने में ज़रूर दुनिया भर का काठ-कबाड़ भरा था, जिसमें बहुत कुछ पुराने मकान-मालिक का भी था। जब इसका दरवाज़ा खोलकर मिस्टर अटरसन और पूल ने अंदर घुसने की कोशिश की, तो उनके ऊपर एक मकड़ी का बहुत बड़ा जाला आ गिरा, जो वहाँ बरसों से ही लगा हुआ था। इससे उन लोगों ने समझ लिया कि इस तहख़ाने की तलाशी लेना बेकार ही है।

इस प्रकार जीवित या मृत किसी भी रूप में वहाँ डाक्टर जैकिल का कोई पता-निशान उन लोगों को नहीं मिला।

दालान मे पहुँचकर पूल ने फ़र्श के पत्थरों पर पैर पटककर कहा, "हो सकता है, उन्हें इसके नीचे दफ़ना दिया हो।"

"या हो सकता है कि वे भाग गये हों।" मिस्टर अटरसन ने कहा और गली के पिछवाड़ेवाले दरवाज़े की जाँच करने लगे। दरवाज़े में ताला बंद था और वहीं दालान मे पास एक पत्थर पर ताले की ताली भी पड़ी थी, पर उसमें बहुत ज़ंग लगी हुई थी।

"यह तो काम में लाई गई नहीं मालूम होती।" वकील साहब ने उस ताली को देखकर कहा।

"काम!" पूल ने प्रतिध्वनि की, "आप देखते नहीं हैं कि यह एक जगह से टूटी भी हुई है?—जैसे कोई इस पर चढ़ बैठा हो।"

"अरे, नहीं," मिस्टर अटरसन ने कहा, "क्योंकि जहाँ पर टूटी है, वहाँ पर भी तो ज़ंग लगी हुई है। अगर हाल की टूटी होती, तो ऐसा नहीं होता। पूल, अब तलाश बेकार है, चलो डाक्टर के कमरे में ही लौट चलें।"

चुपचाप वे दोनों सीढ़ियों पर चढ़कर कमरे में पहुँचे और एक बार फिर हाइड के उस शव को वहाँ पड़ा देखकर डर से गये। फिर उन्होंने कमरे की अच्छी तरह तलाशी लेनी शुरू की।—एक मेज़ पर शीशे की तश्तरियों में कोई सफ़ेद लवण रक्खा था और पास ही कुछ क्षार (ऐसिड) की बोतलें भी। ऐसा मालूम होता था कि अभागा हाइड किसी रासायनिक प्रयोग में व्यस्त था। पर उसके काम के बीच में ही विघ्न पड़ गया।

उस लवण को देखकर पूल ने कहा—"यही तो वह दवा है, जो मैं बार-बार लाया करता था।"

इधर पूल बोल रहा था और उधर केतली में पानी उबलने लगा था।

यह देखकर वे दोनों अँगीठी के पास आ गये और वहीं पड़ी हुई आरामकुर्सियों पर बैठ गये। वहीं पास चाय के प्याले रक्खे थे, जिनमें शक्कर भी पड़ी थी और एक अलमारी में किताबें रक्खी हुई थीं। मिस्टर अटरसन को इन किताबों में एक धर्म-पुस्तक देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि इसी पुस्तक के विषय में डाक्टर जैकिल बहुत बातें किया करते थे। इस किताब को वे बहुत मानते थे और इस पर उन्होंने बहुत सी अपनी टिप्पणियाँ भी लिख दी थीं।

चाय पीने के बाद उन लोगों ने फिर कमरे की तलाशी शुरू की। इस बार उन्हें एक शीशे का बड़ा गहरा बर्तन दिखाई दिया, जिसमें उन्होंने झुककर देखा तो भयभीत हो गये; क्योंकि उसमें उन्हें रंगबिरंगी रोशनी, अंगीठी की आग की शीशे की अल्मारियों पर पड़ती हुई चमक के अनगिनत प्रतिबिम्ब और स्वयं अपने पीले और सहमे हुए मुखों के प्रतिबिम्बों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई दिया।

"सरकार, इस शीशे ने कुछ बड़ी बड़ी अजीब बातें देखी हैं," पूल ने कहा।

वकील साहब ने उसी स्वर में उत्तर दिया—"लेकिन यह ख़ुद ही अजीब है। इससे ज़्यादा अजीब और क्या चीज़ हो सकती है; क्योंकि जो कुछ जैकिल—"इस नाम को लेकर वे चौंक पड़े, लेकिन फिर अपनी दुर्बलता को वश में करते हुए बोले—"जैकिल इसका क्या करते होंगे?"

"यह आप कह सकते हैं, मैं नहीं!" पूल ने उत्तर दिया।

तत्पश्चात् वे आफ़िस-टेबिल पर आये। वहाँ डेस्क पर तरतीब से लगे हुए बहुत से काग़ज़ों के बीच में एक बड़ा सा लिफ़ाफ़ा रक्खा था, जिस पर मिस्टर अटरसन का नाम और पता बड़े-बड़े अक्षरों में डाक्टर के हाथ से लिखा गया था।

वकील साहब ने लिफ़ाफ़ा खोला और खुलते ही उसमें बंद कई काग़ज़ नीचे गिर पड़े। इनमें से एक बिलकुल वैसा ही वसीयत-नामा था, जैसा कि पहले हाइड के नाम में था, पर इस बार मिस्टर अटरसन के लिए! अपना नाम—गैब्रील जॉन अटरसन—पढ़कर वकील साहब को अत्यंत आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूल की ओर दृष्टि फेरी और फिर काग़ज़ों की ओर, और सबसे अंत में उस हत्यारे की ओर जो फ़र्श पर मरा पड़ा था

"मेरा तो सिर चकरा गया है," मिस्टर अटरसन ने कहा—"इतने दिनों से यह वसीयत हाइड के क़ब्ज़े में थी, और अपना माल दूसरे आदमी

के पास जाता देखकर ही वह आगबबूला हो उठता, और न उसे मुझसे कोई मुहब्बत ही थी, तब फिर भी उसने यह वसीयत फाड़कर क्यों नहीं फेंक दी?"

इसके बाद मिस्टर अटरसन की नज़र एक और काग़ज़ पर पड़ी, जिस पर ऊपर आज की ही तारीख़ पड़ी थी और डाक्टर जैकिल के दस्तख़त थे।

"अरे पूल! देख तो, डाक्टर आज भी ज़िन्दा थे। इतने कम समय में उनका काम तमाम नहीं किया जा सकता। ज़रूर वे कहीं निकल भागे हैं। पर, भाग कैसे गये? क्यों भाग गये? और तब क्या हम हाइड की इस मौत को आत्महत्या कह सकते हैं?—हमको होशियार रहना चाहिए। हो सकता है कि हमें तुम्हारे मालिक को अभी किसी आफ़त में फँसाना पड़े।"

"लेकिन आप पहले इसे पढ़ते क्यों नहीं?" पूल ने पूछा।

"क्योंकि मुझे डर लगता है," मिस्टर अटरसन ने कहा—"लेकिन डरने की कोई वजह तो है नहीं। भगवान् सब भला ही करेंगे।"

यह कहकर मिस्टर अटरसन ने वह चिट्ठी पढ़नी शुरू की—

"प्रियवर अटरसन,

जब तुम्हें यह पत्र मिलेगा, तब तक मैं ग़ायब हो चुकूँगा। कैसे और कहाँ, यह मैं अभी नहीं जानता। लेकिन मेरा मन कहता है और मेरे संज्ञाहीन अस्तित्व की सभी परिस्थितियाँ मुझे यह विश्वास दिलाती हैं कि मेरा अन्त अब निश्चित है और बहुत समीप भी। लैनियन ने मुझे एक बार सचेत किया था कि मैं अटरसन को सब हाल लिखकर बतला दूँगा, इसलिए अगर तुम्हारे पास उसका वह पत्र हो तो पहले उसे पढ़ लेना और तब अगर और भी कुछ जानना चाहो तो अपने इस अभागे और अयोग्य मित्र का पत्र पढ़ लेना।

तुम्हारा

हेनरी जैकिल"

"इसका मतलब है कि एक तीसरा ख़त भी है ?" मिस्टर अटरसन ने पूछा।

"हाँ, सरकार, यह रहा।" पूल ने एक भारी-सा लिफ़ाफ़ा, जो कई जगह सील ( मुहर ) से बन्द था, देकर उत्तर दिया।

उस लिफ़ाफ़े को वकील साहब ने अपनी जेब में रखकर कहा—"मैं इस ख़त का कोई ज़िक्र किसी से नहीं करूँगा। अगर तुम्हारे मालिक भाग गये हैं, या मर गये हैं, तो हम लोग कम से कम उनकी इज्ज़त तो बचा ही सकते हैं। अब दस बज रहे हैं। घर पहुँचकर ये सब ख़त मुझे चुपचाप अकेले में पढ़ने हैं; लेकिन मैं बारह बजे से पहले लौट आऊँगा और तभी पुलिस को बुलाऊँगा।"

थियेटर के दरवाज़े में ताला लगाकर दोनों बाहर निकल आये।

नौकर लोग हाल में अँगीठी के पास फिर इकट्ठे हो गये थे, लेकिन उनसे बिना कुछ कहे-सुने मिस्टर अटरसन अपने घर लौट गये, जहाँ उन्हें दो पत्र पढ़कर सारा रहस्य समझना था।

———

## ९

## डाक्टर लैनियन का पत्र

आज से चार दिन पहले नौ जनवरी की शाम को मुझे एक रजिस्टर्ड लिफ़ाफ़ा डाक से मिला, जिस पर मेरे दोस्त और स्कूल के पुराने साथी डाक्टर हेनरी जैकिल के हाथ का लिखा हुआ पता था। यह लिफ़ाफ़ा पाकर मुझे बहुत ताज्जुब हुआ; क्योंकि हम लोग आपस में चिट्ठी-पत्री का व्यवहार नहीं रखते थे। दूसरे हम लोगों ने साथ बैठकर एक ही दिन पहले रात को खाना खाया था। इसके सिवाय हम लोगों के आपसी

संबंध में कोई ऐसी बात नहीं थी, जिसके कारण पत्र की रजिस्ट्री कराने की ज़रूरत समझी जाती। परन्तु लिफ़ाफ़ा खोलने पर जो पत्र मुझे मिला, उससे तो मेरा आश्चर्य और भी बढ़ गया। पत्र की नक़ल मैं नीचे देता हूँ।

१० दिसम्बर, १८—

"प्रिय लैनियन,

तुम मेरे सबसे पुराने दोस्तों में से हो, और हालाँकि वैज्ञानिक मामलों में हमारा आपस में बहुतेरी बार मतभेद हुआ है, लेकिन मुझे एक भी ऐसा मौक़ा याद नहीं पड़ता जब कि हमारे-तुम्हारे बीच में, कम से कम मेरी तरफ़ से तो नहीं ही, कभी कोई झगड़ा और मनमुटाव हुआ हो। अगर तुम किसी भी दिन यह कहते—'जैकिल, मेरी ज़िंदगी, मेरा नाम, मेरी इज्ज़त अब सब कुछ तुम्हारे ही हाथ में है', तो मैं तुम्हारी मदद करने के लिए अपनी दौलत ही नहीं, अपना ख़ून तक बहा देता! लेकिन आज लैनियन, ख़ुद मेरी ही ज़िंदगी, मेरा नाम, मेरी इज्ज़त, सब कुछ का बचाना तुम्हारे ही हाथ में है। अगर तुमने आज ही रात को मेरी मदद नहीं की, तो मुझे डूबा समझो। और इस प्रार्थना के बाद शायद तुम सोचो कि मैं तुमसे कोई बुरा काम कराना चाहता हूँ, तो नीचे जो कुछ मैं लिख रहा हूँ, उसे पढ़कर तुम ख़ुद ही समझ लोगे।

"मैं चाहता हूँ कि आज रात को तुम अपना सब जगह जाना स्थगित कर दो—अगर एक बार को सम्राट् भी बुलाये, तो मत जाओ! अगर तुम्हारी गाड़ी ख़ाली न हो, तो एक किराये की गाड़ी में बैठकर और यह ख़त लेकर सीधे मेरे घर चले आना। अपने नौकर पूल को मैंने सब बातें बतला दी हैं। एक ताला तोड़नेवाले को लिये हुए वह आपको अपने इंतज़ार में मेरे घर पर बाहर दरवाज़े पर ही खड़ा मिलेगा। इसके बाद मेरे कमरे के दरवाज़े का ताला तुड़वाकर अकेले तुम्हीं अंदर जाना। इसके बाद बायें हाथ को एक अल्मारी, जिस पर E लिखा है, खोलना; (अगर उसमें ताला लगा हो, तो उसे भी तोड़ डालना); तब ऊपर से

चौथे या नीचे से तीसरे ड्रार में जो भी रक्खा हो, उसे जैसा का तैसा ड्रॉर सहित उठा लेना। इस वक्त मेरा मन बहुत व्यथित है, इसलिए हो सकता कि मैं ठीक-ठीक बतलाने में कुछ ग़लती कर जाऊँ, इसलिए तुम उस ड्रॉर को आप ही ढूँढ लेना। उसमें एक फ़ाइल है, कुछ पाउडर, और एक कापी। हाँ, तो इस ड्रॉर को जैसा का तैसा उठाकर अपने साथ अपने घर ले आना।

"यह तो पहला काम है। अब दूसरा काम यह है—अगर तुम जल्दी चले जाओगे, तो आधीरात से बहुत पहले ही लौट आओगे, लेकिन ख़ैर, मैं इतना वक्त और दिये देता हूँ, वह न सिर्फ़ इसलिए कि मुमकिन है कोई नई अनजानी मुसीबत बीच में आ पड़े, वरन् इसलिए भी कि तब तक तुम्हारे घर के सब नौकर सो जायँगे। तो तुम रात को ठीक बारह बजे अपने दफ़्तर में अकेले बैठ जाना। उसी समय एक आदमी तुम्हारे पास मेरे नाम लेकर पहुँचेगा. तुम्हीं ख़ुद उसे अपने कमरे में ले जाकर बैठालना और फिर जो कुछ मेरे कमरे से उठाकर लाओगे, वह सब उसे दे देना।

"बस, इतना कर देना ही तुम्हारा काम है और यह कर देने से ही तुम मेरी जान बचा लोगे। सब काम कर चुकने के पाँच मिनिट बाद ही अगर तुम इन सब बातों का भेद जानना चाहोगे, तो तुम्हें वहीं मालूम हो जायगा, और तभी तुम यह भी समझ सकोगे कि यह काम कितना ज़रूरी है। पर यह भी याद रक्खो कि अगर इस काम को करने में तुमने कहीं कोई भूल या लापरवाही की यह समझकर कि यह सब पागलपन है, तो मेरी मौत का पाप तुम्हारे ऊपर ही पड़ेगा।

"पर मुझे पूरा यक़ीन है कि तुम मेरी इस प्रार्थना को टालोगे नहीं, इसी लिए यह सोचकर ही कि कहीं तुमने यह काम नहीं किया, मेरा दिल बैठने लगता है और हाथ काँपने लगते हैं। ज़रा सोचो तो सही इस वक्त मैं कैसी एक अजनबी जगह में बैठा हुआ अपनी मुसीबतों को रो रहा

हूँ, लेकिन इस आशा में कि अगर तुमने वक़्त पर आकर सब काम कर दिया, तो मेरी सब मुसीबतें एक साथ ही दूर हो जायेंगी।

"प्रिय लैनियन, मुझे बचाओ न!

तुम्हारा ही,

एच० जे०"

"पुनश्च—मैं इसे सील कर चुका था, लेकिन एक नया डर मेरे मन में उठ खड़ा हुआ है—वह यह कि हो सकता है पोस्ट आफ़िस की देरी की वजह से यह पत्र आज शाम को ही न मिलकर तुम्हें कल शाम को मिले। तब मेरा काम दिन में किसी वक़्त कर देना और मेरे आदमी का इंतज़ार रात को बारह बजे अपने दफ़्तर में ही करना। हो सकता है कि तब तक बहुत देर हो जाय, और अगर उस रात को तुम्हारे पास मेरा आदमी न पहुँचे तो समझ लेना कि हेनरी जैकिल का यही आख़िरी ख़त है।"

यह ख़त पढ़कर मैंने समझ लिया कि मेरा दोस्त पागल हो गया है, लेकिन जब तक यह बात बिलकुल निश्चित रूप से मालूम नहीं हो जाती तब तक तो उसे पागल समझकर उसका काम न करना ठीक नहीं है। इसलिए उसका काम तो जैसे भी हो, करना ही चाहिए। जितनी ही कम मेरी समझ में ख़त की बातें आती थीं, उतनी ही ज़्यादा बेकार मुझे वे लगती थीं। फिर भी इस तरह की प्रार्थना को यों ही तो ठुकराया भी नहीं जा सकता। कुछ न कुछ ज़िम्मेदारी तो अपने सिर पर आ ही जाती है। यही सोचकर मैं उठा और किराये की एक गाड़ी में बैठकर सीधा जैकिल के घर पहुँचा। नौकर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। जिस डाक से मुझे रजिस्ट्री मिली थी, उसी डाक से उसे भी एक रजिस्ट्री पत्र मिला था, जिसमें डाक्टर ने उसे इसी कार्य सम्बन्धी आदेश दिये थे, इसलिए उसने एक बढ़ई और तालेवाले को भी बुला भेजा और हम लोग बातें ही कर रहे थे कि इतने में वे दोनों कारीगर भी आ पहुँचे। इसके बाद हम सब लोग पुराने डाक्टर डेनमैन के सर्जीकल थियेटर में पहुँचे, जहाँ से जैकिल के कमरे में जाने का सीधा रास्ता है। उस कमरे के

किवाड़ बहुत मज़बूत थे और ताला भी। बढ़ई ने कहा कि मुझे इन किवाड़ों को तोड़ने में बहुत मेहनत पड़ेगी और आपका भी बहुत नुक़सान हो जायगा। उधर तालेवाले ने कहा कि यह ताला मुझसे तो टूटने से रहा। लेकिन तालेवाला कुछ कामकाजी और मेहनती आदमी था; इसलिए वह ताला तोड़ने में जुट गया और दो घंटे बाद ताला तोड़कर ही उसने दम लिया!

दरवाज़ा खोलकर मैं अंदर घुसा और बायें हाथवाली वही अल्मारी खोली, जिस पर E लिखा था। अल्मारी में ताला नहीं पड़ा था। फिर मैंने वही ड्रॉर निकाला और उसे अच्छी तरह एक काग़ज़ में बँधवाकर घर लौट आया।

घर आकर मैंने ड्रॉर की चीज़ें देखीं—पाउडर काफ़ी सफ़ाई से तैयार किये गये थे, लेकिन फिर भी ऐसी सफ़ाई नहीं थी, जिसकी आशा अच्छे कैमिस्ट से की जाती है। इससे यह मालूम होता था कि वे जैकिल के ही अपने बनाये हुए थे। फिर मैंने एक पुड़िया खोली--उसमें सफ़ेद रंग का एक क्रिस्टैलाइन साल्ट (लवण) था। इसके बाद मैंने शीशी उठाकर देखी, जो ख़ूनी रंग के एक लाल तरल पदार्थ से आधी भरी थी और जिसकी महक बड़ी तेज़ थी और मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इसमें 'फ़ासफ़ोरस' है और कुछ 'वौलैटाइल ईथर' भी। और उसमें क्या-क्या मिला था, सो मैं समझ नहीं सका। वह कापी एक मामूली डायरी-सी थी, जिसमें तारीख़ों के सिवाय और कुछ नहीं था; पर यह कई साल की डायरी थी, पर बीच में एक जगह कहीं एकाएक लेखनी बंद हो गई मालूम पड़ती थी। इधर-उधर उसमें कहीं एकाध बात लिखी थी, और सो भी एक शब्द में ही,जैसे उसमें एक शब्द था "दूना" जो पाँच-छः जगह लिखा गया था—और शुरू-शुरू में कई जगह लिखा था—"बिलकुल असफल!!!" यह सब देखकर मेरी जिज्ञासा तो जाग उठी, पर कुछ समझ में बात आई नहीं। इस एक कापी, टिंक्चर जैसी किसी चीज़ से भरी हुई एक शीशी, और साल्ट की

"मैं समझा नहीं, डाक्टर लैनियन," वह बड़ी विनम्रता से बोला—"आप जो कुछ कहते हैं, वह ठीक है, अपनी अधीरता में मैं विनम्रता भी भूल बैठा था। यहाँ मुझे आपके परम मित्र डाक्टर जैकिल ने किसी आवश्यक कार्य से भेजा है और मैं समझ गया...।" कहते-कहते वह रुक गया। उसने हाथ से अपने गले को पकड़ा, और हालाँ कि वह शान्त बैठा था, इसलिए मैं समझ गया कि वह हिस्टीरिया का दौरान रोकने की कोशिश कर रहा है—"हाँ, तो मैंने समझ लिया था कि एक ड्रॉर..."

अब मुझे अपने और इस आदमी की उलझन पर तरस आ गया।

"वह रहा।" मैंने ड्रॉर की ओर संकेत करके कहा, जो एक मेज़ के नीचे फ़र्श पर ढका रक्खा था।

उसने झपटकर उसे उठा लिया और फिर हाथों से अपने दिल को थाम लिया। उसके दाँतों का पिसना और जबड़ों का चलना मुझे साफ़ सुनाई पड़ जाते थे, और उसका मुख तो देखने में इस क़दर भद्दा था कि उसके जीवन के विषय में मुझे सन्देह हो गया।

"शान्त हो जाइए।" मैंने कहा।

वह मेरी तरफ़ देखकर हँस दिया और जैसे हताश होकर उस ड्रार पर से काग़ज़ फाड़ डाला। फिर उसकी चीज़ों पर नज़र पड़ते ही उसने संतोष की ऐसी गहरी साँस ली कि मैं सहम गया। दूसरे ही क्षण वह बड़ी संयत भाषा में बोला—"क्या आपके पास एक ग्रेजुएटेड् ग्लास* है?"

कुछ बेमन से मैं अपनी जगह से उठा और उसे एक ग्रेजुएटेड ग्लास लाकर दे दिया।

मुस्कराकर उसने मुझे धन्यवाद दिया। तत्पश्चात् उसने उस लाल रासायनिक द्रव्य की एक निश्चित मात्रा ली और उसमें एक पाउडर मिला दिया। यह घोल, जो कि पहले लाल था, धीरे-धीरे पाउडर के घुलने से

---

* वह शीशे का ग्लास जिस पर परिमाण नापने के लिए माप अंकित होता है।

और भी तेज़ लाल होता गया और उबलने लगा और उसमें से गैस निकलने लगी। एकाएक उसका उबलना बंद हो गया और साथ ही उसका रंग भी बदलकर गहरा कत्थई हो गया और फिर धीरे-धीरे हल्के हरे रंग का हो गया। तब वह ठिगना ख़ुश होकर मुस्करा दिया। अभी तक बड़े ध्यान से वह घोल के परिवर्तनों को देख रहा था। ग्लास मेज़ पर रखकर वह मेरी तरफ़ मुड़कर कहने लगा—"अच्छा, तो अब जो बातें रह गई हैं, उनका भी निबटारा कर लें! मैं जैसा कहूँ, वैसा करोगे? या जो तुम्हारे जी में आयेगा, सो करोगे? क्या तुम यह पसंद करोगे कि मैं यह ग्लास लेकर अभी तुम्हारे घर से चला जाऊँ और आगे कुछ बात-चीत न करूँ? या मेरे बारे में जानने को तुम्हारा मन बहुत ललचा रहा है? एक मिनिट में सोचकर जवाब दो। तुम जैसे कहोगे, वैसे ही मैं करूँगा। लेकिन तुम जैसे हो, बाद को भी वैसे ही रहोगे। न ग़रीब हो जाओगे और न तुम्हारी अमीरी बढ़ जायगी—हाँ, तुम्हारी आत्मा की अमीरी ज़रूर बढ़ सकती है, अगर अपने साथी इंसान के साथ भलाई करना तुम एक तरह की अमीरी समझते हो तो। या तुम चाहते हो कि तुम्हारे सामने नाम पैदा करने और ज्ञान बढ़ाने के नये-नये रास्ते खुल जायँ और उसके लिए तुम्हें कोई अद्भुत शक्ति मिल जाय अभी-अभी, यहीं, इसी कमरे में! आज तुम अपनी आँखों से ऐसा विचित्र आदमी देखोगे, जो एक बार को तो शैतान के भी अविश्वास की नींव हिला देगा।"

"जनाब," मैंने झूठी रुखाई दिखाते हुए कहा—"आप तो रहस्य की बातें कर रहे हैं और मुझे आपकी बातों में विश्वास नहीं है। फिर भी अब मैं इस मामले में इतना आगे बढ़ आया हूँ कि इसका अन्त देखना चाहता हूँ।"

"अच्छा, ठीक है," आगन्तुक ने कहा—"लैनियन, अपनी बात याद रखना; भूलना नहीं। अब जो कुछ होगा, वह हमारे-तुम्हारे डाक्टरी के पेशे से सम्बन्धित है। और तुम, जो आज तक बड़े संकुचित विचारों के रहे हो और केवल भौतिकता में विश्वास करते हो, देखोगे कि मैंने एक

जैसा असंयम मेरे जीवन में था, अगर वैसा ही किसी अन्य मनुष्य के जीवन में होता, तो वह अवश्य ही उसको दूर करने के लिए लोगों के सामने खोलकर रखता और उनसे परामर्श लेता; किंतु मैंने तो अपने सम्मुख बड़े-बड़े आदर्श रख छोड़े थे, इसलिए मैं अपने उन दोषों को शर्म के कारण छिपाये ही रहा। इस प्रकार मेरा कोई विशेष पतन तो न हुआ; पर मेरी अच्छाई तथा बुराइयों के बीच एक इतनी बड़ी खाई बन गई, जैसी कि साधारणतया लोगों में नहीं होती; क्योंकि अच्छाइयाँ और बुराइयाँ हर आदमी में होती ही हैं। मैं संतुलन खो बैठा था।

ऐसी ही परिस्थिति में मैं जीवन के उस कठोर नियम पर विचार करने लगा जिसकी सत्ता धर्म की नींव पर स्थित है और जो दुःख के अनेक कारणों में से एक है।

यद्यपि मेरा व्यक्तित्व इस प्रकार स्पष्ट ही दो विरोधी रूपों में विभाजित हो गया था, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि मैं बनावटी था; क्योंकि मेरे ये दोनों रूप स्वतंत्र रूप से कार्य करते थे, परस्पर विघ्न नहीं डालते थे। जब मैं कुकर्म और लज्जाजनक कर्म करता था तब मेरा सत्रूप न जाने कहाँ चला जाता था और इसी तरह दिन के उजाले में जब मैं ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि तथा निर्धन, निरुपाय और पीड़ित की सहायता के लिए अच्छे-अच्छे काम करता था, तब मेरा कुरूप क़तई मेरे साथ नहीं होता था।

मेरा विज्ञान का अध्ययन केवल रहस्यवाद और अध्यात्मवाद के लिए था, किंतु घर के लोग आपस में हर वक़्त लड़ा करते थे, जिसके फल-स्वरूप एक तीव्र प्रतिक्रिया हुई! दिन-प्रतिदिन मेरा मन, नैतिक तथा बौद्धिक, दोनों ही दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर उस तथ्य पर पहुँचता जाता था, जिसके कारण आज ऐसा दुर्दान्त हो रहा है; वह यह कि मनुष्य वास्तव में एक न होकर दो है। अर्थात् उसके दो व्यक्तित्व होते हैं, परस्पर नितान्त विचित्र और विरोधी। मेरा अपना ऐसा ही अनुभव था, इसी लिए भविष्य में मेरे पीछे अन्य लोग इस विषय पर और अधिक विचार करेंगे और मेरे सिद्धान्त को आगे बढ़ायेंगे; और उसका क्या रूप होगा, यह मैं

केवल अनुमान से कह सकता हूँ कि अन्ततोगत्वा मनुष्य विविध, विरोधी और विशृंखल नागरिकों के एक राजनीतिक शासन-विधान का अनैच्छिक साधारण कल-पुर्ज़ा मात्र होगा ! अपनी प्रकृति और स्वभाव के कारण स्वयं मैं तो दृढ़ पगों से जीवन की एक, केवल एक ही, निश्चित राह पर अग्रसर हूँ और निर्बाध चला जा रहा हूँ। मानव के स्वरूप में नितान्त और प्रकृत द्वैत का परिचय सबसे पहले मुझे नैतिक रूप में अपने ही व्यक्तित्व के भीतर मिला। मैंने देखा कि जो दो विपरीत स्वभाव मेरे चेतन स्वरूप में हैं और यद्यपि मैं दोनों में से बिलकुल किसी भी एक स्वभाव का कहा जा सकता था, उसका कारण यही है कि मैं पूरी तरह से दोनों ही स्वभावों का था। बहुत दिनों पहले से भी. जब कि मेरे विज्ञान के अध्ययन और खोज ने ऐसे किसी वैचित्र्य की कोई संभावना की ओर भी संकेत नहीं किया था, मैं बैठा-बैठा इस मधुर कल्पना का छिपे स्वप्न की तरह ही आनन्द लिया करता था कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब मनुष्य के ऐसे दो विरोधी विभिन्न व्यक्तित्व एक दूसरे से विलग किये जा सकेंगे और दोनों की नितान्त स्वतन्त्र सत्ता होगी ! और तभी जीवन की सभी असहनीय बातों से छुटकारा मिल सकेगा। अपने जुड़वाँ भाई न्याय-स्वरूप व्यक्तित्व की उच्चाकांक्षाओं और आदर्श भावनाओं से विलग होकर मनुष्य का निर्दयी, अन्यायी स्वरूप अपनी राह चला जा सकेगा। और इस प्रकार सत्पुरुष निर्विघ्न और दृढ़ता-पूर्वक अपने आदर्श-पथ पर मानव जाति की भलाई करता हुआ चला जायगा और उसे अपने इस सन्मार्ग में किसी भी काँटे का, अपमान और पश्चात्ताप का भय नहीं रहेगा। यह तो मानवता पर सबसे बड़ा अभिशाप है कि इस प्रकार के दो विरोधी व्यक्तित्व एक ही शरीर में बन्दी कर दिये गये हैं जहाँ वे अपने चेतन स्वरूपों में प्रतिपल परस्पर झगड़ते रहते हैं।

अब प्रश्न यह है कि मैंने इन दो व्यक्तित्वों को एक दूसरे से अलग कैसे किया ?

मैंने कहा न कि मैं इस विषय पर केवल विचार ही कर रहा था, परन्तु लैबोरेटरी में काम करते-करते मुझे कुछ नई बातें सूझ गईं। मुझे यह लगने लगा कि यह शरीर, जिस पर कपड़े पहनकर हम घूमते हैं, बिलकुल अस्थिर अपदार्थ है और इसका अस्तित्व धुएँ से अधिक ठोस नहीं है। प्रयोग करने पर मैंने कुछ ऐसे रसायन खोज निकाले, जिनमें यह शक्ति थी कि वे शरीर को धुएँ की तरह कर देते थे और फिर उसी रूप में लौटा लाते थे। लेकिन दो कारणों से मैं अपने विषय की वैज्ञानिकता नहीं बतलाना चाहता—पहले तो यह कि मैं अब यह लिख गया हूँ कि जीवन के दुःख और मृत्यु का बोझा आदमी के कन्धों से सदैव के लिए बँधा हुआ है और जब इस बोझे को दूर करने का प्रयत्न किया जाता है, तब वह फिर लौटकर हमारे ही कन्धों पर और भी अधिक दबाव और भार के साथ गिर पड़ता है। दूसरा कारण यह है कि मेरी खोज अभी पूर्ण नहीं हुई है, जिसका प्रमाण इस वृत्तांत में मिल ही जायगा। इसलिए इस वक़्त इतना ही कहना काफ़ी होगा कि मैंने न केवल अपने असली शरीर को अपनी आत्मा की निर्मायक शक्तियों के तेज और प्रखरता से स्पष्ट अलग पहचान लिया, बल्कि एक ऐसी दवाई भी तैयार कर ली जिसकी सहायता से मेरी इन शक्तियों की महत्ता कम हो गई और साथ ही एक दूसरा आकार और रूप भी निर्मित हो गया, जो मुझे कुछ कम स्वाभाविक नहीं मालूम पड़ता था, क्योंकि मेरी आत्मा के निम्न रूप के प्रदर्शन थे।

इस तथ्य की खोज कर लेने के बाद इसका प्रयोग करने में मुझे बहुत हिचकिचाहट हुई; क्योंकि मैं जानता था कि इसमें जान जोखिम में पड़ जायगी। कारण यह कि जो दवाई शक्ल-सूरत ही नहीं, शरीर और उसका आकार भी बदल सकती है, वह तनिक सी अधिक होने पर अथवा बनाने में कुछ भूल हो जाने से तुरन्त ही जीवन भी समाप्त कर सकती है, जिसके परिवर्तन की आशा मुझे थी।

लेकिन इस अद्भुत खोज का मुझे इस क़दर बड़ा लालच था कि मैंने सारे डर पर विजय पा ली। टिंचर तो मैंने बहुत दिन पहले ही बना

रक्खा था, अब केवल एक लवण की आवश्यकता थी, जो मैंने एक बड़े कैमिस्ट की दुकान से एक साथ बहुत मात्रा में मँगा लिया था, और फिर वह कम्बख्त रात आई जब मैंने उस लवण की एक ख़ास मात्रा उस टिंचर में घोल दी और प्रक्रिया देखने लगा—वे उबलने लगे और उनमें से गैस निकलने लगी और जब उबलना बन्द हो गया, तब साहस करके मैं आँख मींचकर उस घोल को पी गया।

इसके बाद उस दवाई ने अपना कष्टदायक प्रभाव डालना शुरू किया—मेरा जी मचलने लगा, हड्डियों को जैसे कोई मरोड़ दे रहा था और आत्मा को ऐसी वेदना हो रही थी जैसी शायद जन्म अथवा मृत्यु के समय भी नहीं होती होगी।

धीरे-धीरे यह पीड़ा बन्द होने लगी और मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मैं किसी लम्बी ख़तरनाक बीमारी से अच्छा होकर उठा हूँ। अब मुझे सब कुछ बड़ा नया-नया और अजीब-सा लग रहा था और क्योंकि सब बातें एकदम नई थीं, इसलिए बहुत अच्छा-अच्छा मालूम हुआ। मुझे अपना शरीर हल्का, जवान और सुखी प्रतीत हुआ और मेरे मन में अनेक रूपों में वासना जगने लगी; मैं तरह-तरह के दृश्य देखने लगा; दूसरों के ऋण आदि जो भार मेरे ऊपर थे, उनसे छुटकारा पाने की युक्ति निकल आई; मुझे अपनी आत्मा स्वतन्त्र तो मालूम पड़ी, किन्तु पवित्र और निर्दोष नहीं।

इस नये जीवन की पहली साँस लेते ही मैं अपने को पहचान गया। मैंने समझ लिया कि मैं अब पहले से अधिक, दसगुना अधिक, बुरा हो गया हूँ—अपनी पहली बुराई के हाथों बिककर ग़ुलाम हो गया हूँ; और इस विचार से मुझे वैसी ही ख़ुशी हुई जैसी कि शराब पीने से होती है। इसी ख़ुशी में उछलकर मैंने अपने हाथ फैला दिये, और एकाएक मुझे ज्ञात हुआ कि मेरा क़द छोटा हो गया है।

उस समय मेरे पास कोई शीशा नहीं था, जिसमें मैं अपनी सूरत देख सकता। इस समय जो शीशा मेरे पास रक्खा है, वह इसी लिए ख़रीदा

गया था कि मैं समय-समय पर अपने परिवर्तित स्वरूप को देख सकूँ। रात बीत आई थी और उसके अंधकार-गर्भ से दिन जन्म लेने ही वाला था। मेरे सब घरवाले नींद में ख़र्राटे भर रहे थे। अपने विजयोल्लास से प्रेरित होकर मैंने अपने शयनगृह तक जाने का साहस किया। मैं कमरे से निकलकर आँगन में आया। ऊपर खुले हुए आकाश के सितारे मुझे देख रहे थे और मुझे विश्वास है कि युग-युग से जाग्रत् विश्व के उन प्रहरियों ने आज प्रथम बार पृथ्वी पर मुझ जैसा अद्भुत जीव देखा था।

अपने सोने के कमरे में आकर मैंने दर्पण में पहली बार ऐडवर्ड हाइड का मुख देखा।

अब मैं कुछ ऐसी बातें बताता हूँ जिनके बारे में मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं जानता, पर अनुमान करता हूँ—

मेरे अंदर जो बुराई थी, उसी का साकार रूप अब मैं हो गया था और क्योंकि अच्छाई की अपेक्षा बुराई मेरे अंदर कम थी, इसलिए मेरा यह नया रूप पुराने रूप से छोटा और दुबला था। दूसरे अपने इतने बड़े जीवन का नब्बे प्रतिशत भाग मैंने सत् प्रयत्नों, संयम और भलाई करने में व्यतीत किया था, इसलिए बुराई का कम उपयोग हुआ था और वह अभी लगभग उतनी ही शेष थी। यही कारण था कि ऐडवर्ड हाइड हेनरी जैकिल से छोटा, पतला और अवस्था में कम दिखाई पड़ता था। हेनरी जैकिल के मुख पर भलमनसाहत की स्पष्ट छाप थी और ऐडवर्ड हाइड का मुख बुराई का ही जैसे सजीव रूप था। मैं आज भी विश्वास करता हूँ कि बुराई मानव का नश्वर भाग है, इसलिए वह हाइड के शरीर पर नाश और विकृति की अमिट छाप छोड़ गई थी। यह होते हुए भी जब मैं शीशे में इस कुरूपता को देखता था, तो मुझे घृणा नहीं होती थी, वरन् एक तरह की ख़ुशी होती थी। यह भी तो मेरा ही स्वरूप था—बिलकुल स्वाभाविक और मानवीय! मुझे यह स्वरूप अपनी आत्मा का अधिक सजीव, पूर्ण भावमय और विशुद्ध रूप प्रतीत होता था; क्योंकि अभी तक जिस रूप को मैं अपना कहता था वह अपूर्ण था, उसमें मिलावट थी; शुद्ध एकरूप

नहीं था। और यह बात निस्संदेह सच भी थी, क्योंकि जब मैं हाइड का रूप धारण करता था, तब मैं देखता था कि मुझमें और दूसरे लोगों में मांसल शरीर के अतिरिक्त अन्य कोई भी समानता नहीं है। इस कारण मैं यह समझता हूँ कि सभी मनुष्य अच्छाइयों और बुराइयों से मिलकर बने हैं, किंतु ऐडवर्ड हाइड ही समस्त मानव-जाति में एक ऐसा मनुष्य था जिसमें केवल बुराई ही बुराई थी।

तत्पश्चात् क्षण भर तक मैं दर्पण में अपने हाइडवाले प्रतिबिम्ब को देखता रहा; क्योंकि अभी एक दूसरा प्रयोग करना शेष था, वह यह कि मेरा यह नया रूप फिर अपने पुराने स्वरूप में बदल भी सकता है अथवा मैं सदैव के लिए इसमें परिवर्तित होकर एक नितांत अन्य व्यक्ति हो गया, जिसका फिर इस घर पर कोई अधिकार नहीं रह सकेगा और इसलिए जिसे सूरज निकलने से पहले इसे छोड़कर भाग जाना पड़ेगा।

इसलिए मैं दौड़कर अपनी प्रयोगशाला में पहुँचा और जल्दी से फिर वही दवाई तैयार करके पी गया। पुनः परिवर्तित होने में फिर मुझे वैसी ही पीड़ा हुई जैसी कि अभी पहले हुई थी। थोड़ी देर बाद मैं फिर सब तरह से आकार-प्रकार में पुराना हेनरी जैकिल हो गया।

तो इस प्रकार उसी रात को मैं विनाश-पथ पर चल पड़ा था। यदि अपना वह प्रयोग मैं सद्भावनाओं और पवित्राकांक्षाओं से प्रेरित होकर करता, तो फल अवश्य ही नितांत विपरीत होता—जन्म और मृत्यु की सी वेदना सहकर मैं देवता बन जाता, दैत्य नहीं। दवाई का प्रभाव सदैव समान होता था, अर्थात् उसी दवाई से अच्छे रूप में भी बदला जा सकता था और बुरे में भी। यह निर्भर करता था केवल अपनी इच्छा पर! दवाई स्वयं न दिव्य थी और न राक्षसी ही; वह तो केवल मेरी इच्छा के बन्दी-गृह के द्वार खोल भर देती थी और द्वार खुल जाने पर मैं अच्छे या बुरे जिस रूप को भी चाहता था, वही मुक्त होकर बाहर निकल आता था। किन्तु उन दिनों मेरी अच्छाइयाँ सोई हुई थीं और बुराइयाँ जग रही थीं,

क्योंकि आकांक्षाएँ उन्हें सोने नहीं देती थीं; फल-स्वरूप अवसर आते ही वे मिस्टर ऐडवर्ड हाइड का रूप रखकर बाहर आ गईं।

अब मेरे दो रूप थे अवश्य, किन्तु उनमें से एक बिलकुल बुरा था और दूसरा बिलकुल अच्छा न होकर वही डाक्टर हेनरी जैकिल था, जिसमें अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों ही थीं। इस प्रकार अब मुझमें बुराई की मात्रा बढ़ गई।

अध्ययनशील जीवन की नीरसता के प्रति अपनी अन्यमनस्कता पर उस समय तक भी मैं विजय नहीं पा सका था। और प्रायः ही मैं ऐसे आनन्द लेने की ओर, जो यदि कम से कम कहूँ तो मेरी शान के सर्वथा ख़िलाफ़ थे, प्रवृत्त हो जाता था और संसार में न केवल इसलिए कि मैं सुविख्यात और अत्यन्त सम्मानित तथा समादृत ही था, वरन् वयोवृद्ध होते जाने के कारण भी मेरे अनुचित कृत्य दिन-प्रतिदिन अप्रिय भी होते जाते थे; और नई शक्ति जो मुझे प्राप्त हुई, वह भी इन्हीं अनुचित और अप्रिय प्रवृत्तियों की दासी बन बैठी। ऐडवर्ड हाइड बनने के लिए मुझे बस वह दवाई पीनी पड़ती थी। इस युक्ति की सरलता पर कभी कभी मुझे हँसी आ जाती थी, पर मैं दवाई को बड़ी सावधानी से तैयार करता था।

कुछ दिनों बाद मैंने वह सोहोवाला मकान ख़रीद लिया था, जिसमें पुलिस हाइड को तलाश करने गई थी। उस घर में मैंने रहन-सहन का सब सामान इकठा कर लिया था और एक नौकरानी देख-भाल के लिए रख ली थी। वह नौकरानी बोलती कम थी और उसमें हिचक तो थी ही नहीं। इसके अतिरिक्त मैंने अपने नौकरों को आज्ञा दे दी कि जब भी मिस्टर ऐडवर्ड हाइड नाम के एक सज्जन, जो देखने में इस-इस तरह के हैं, यहाँ आयें तो उन्हें कुछ भी करने से रोकना नहीं; क्योंकि मैंने उन्हें पूरी स्वतंत्रता दे दी है कि वे जैसे चाहें इस घर में रहें और जो चाहें करें। इस बात की पुष्टि के लिए मैं हाइड के रूप में दरवाज़े पर दो-एक बार डाक्टर जैकिल को पूछने भी चला गया।

तत्पश्चात् मैंने वह वसीयत लिखी, जिसका तुमने इतना विरोध किया, क्योंकि अगर डाक्टर जैकिल पर कोई मुसीबत आ जाय, तो मैं आसानी से ऐडवर्ड हाइड बनकर धन-हानि से बच जाऊँ। इस तरह सब तरफ़ से क़िलेबन्दी-सी करके मैं अपने इस विचित्र प्रयोग का लाभ उठाने लगा।

अपने स्वार्थ के लिए लोग दूसरे लोगों की हत्या किराये के गुंडों से कराते हैं, और स्वयं भलेमानस बने बैठे रहते हैं। लेकिन मैं ही ऐसा आदमी था, जिसने स्वयं अपनी प्रसन्नता के लिए ही हत्या की और जनता की आँखों के सामने शरीफ़ बना घूमता रहा और क्षण भर में ही एक स्कूल के लड़के की भाँति अपने समस्त दायित्वों से मुक्त होकर स्वतंत्र हो गया। परन्तु मेरे लिए हाइड के रूप में कोई भी ख़तरा नहीं था; क्योंकि हाइड का तो संसार में कोई अस्तित्व ही नहीं था। बस मुझे किसी तरह अपनी लैबेरेटरी में पहुँच जाने दो, फिर क्या है, सब सामान मेरे पास हर समय तैयार रहता ही है, दो मिनिट में दवाई तैयार करके जहाँ एक घूँट पी कि ऐडवर्ड हाइड इस संसार से ऐसे ही अदृश्य हो जाते हैं, जैसे दर्पण पट पर से देखते-देखते साँस की भाप उड़ जाती है। और फिर रात के बारह बजे लैम्प के पास कुर्सी पर बैठे हुए डाक्टर जैकिल अपनी किताबें पढ़ने में व्यस्त हो जाते थे और कभी-कभी अपने ऊपर ही सन्देह करके हँस पड़ते थे।

अपने इस नये भेस में जो आनन्द मैं लेना चाहता था वे, जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ, मेरी शान के ख़िलाफ़ थे और कुछ नीच क़िस्म के थे, इससे ज़्यादा कड़ा शब्द मैं लिखना नहीं चाहता। लेकिन ऐडवर्ड हाइड के हाथ में तो वे राक्षसी हो गये! जब मैं घूमकर लौटता था, तो अक्सर ही ताज्जुब में डूबा रहता था कि आख़िर मैं दूसरे के लिए इतना व्यभिचार और कुकर्म क्यों करता हूँ! यह व्यक्ति, जो मेरी आत्मा में से ही निकलकर आता था और जिसे मैं अपनी मनमानी करने के लिए स्वच्छंद छोड़ देता था, वास्तव में जन्म से ही कलुषित और कुकर्मी जीव था। उसका प्रत्येक कार्य, प्रत्येक विचार अपने स्वार्थ—केवल अपने ही स्वार्थ—के लिए होता था; दूसरों पर ज़बर्दस्ती और अत्याचार करके स्वयं पाशविक

लालसा से आनंद लूटता था और पाषाण की भाँति ही कठोर था। हेनरी जैकिल बहुधा ऐडवर्ड हाइड के कर्म देखकर हतबुद्धि-से खड़े रह जाते थे। किंतु क्योंकि वह परिस्थिति ऐसी थी जो साधारण नियमों के बंधन में नहीं आ सकती थी, इसलिए उस पर से आत्मिक नियम भी ढीले हो गये थे; क्योंकि अंततोगत्वा सब पापों का अपराधी हाइड—केवल हाइड—ही था। जैकिल का कुछ बिगड़ा नहीं था। सुबह जब वह सोकर उठता था, तो उसके सद्गुण जैसे के तैसे ही अच्छे होते थे, यहाँ तक कि हाइड द्वारा किये गये कुकर्मों की हानि को वह, यदि संभव होता तो, शीघ्र ही पूरा करने की कोशिश भी करते थे। किंतु उनकी आत्मा सोती ही रही।

इन कृत्यों के कारण जो बदनामी मुझे मिली (यद्यपि अब भी मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ कि उन पापों का करनेवाला मैं ही था) उसके विस्तार में जाने का मेरा कोई विचार नहीं है। मैं अब यहाँ पर केवल वे चेतावनियाँ तथा तत्संबंधी कृत्य ही बताऊँगा जिनके कारण मेरा अन्त समीप आ गया।

एक रात को यों ही घूमकर लौटते हुए सड़क पर एक दुर्घटना हो गई—एक लड़की मुझसे गली के मोड़ पर टकराकर गिर गई और मेरे पैरों से कुचल गई। एक राहगीर ने यह देख लिया और शोर मचाया। वह राहगीर, उस दिन मैंने पहचाना कि तुम्हारे ही चचेरे भाई हैं। डाक्टर और लड़की के घरवाले सभी घिर आये और मुझे धमकाने लगे। यह मैं ज़रूर मानता हूँ कि ऐसे भी क्षण आ जाते थे, जब मुझे अपने प्राणों का मोह हो उठता था और जान बचाने की पड़ जाती थी। इसलिए उनको शांत करने के लिए ऐडवर्ड हाइड उन्हें अपने घर के दरवाज़े तक बुला लाया और डाक्टर जैकिल के नाम से उन्हें एक चैक काटकर दे दिया, किंतु इस मुसीबत से हमेशा के लिए बचने को मैंने ऐडवर्ड हाइड के नाम से एक दूसरे बैंक में भी हिसाब खोल लिया, और मैं अपना हाथ टेढ़ा करके एक दूसरे तरह की राइटिंग भी लिखने लगा था। इस तरह मैंने अपने को बिलकुल निश्चिंत समझ लिया।

सर डैनवर्स की हत्या से दो महीने पहले मैं एक दिन काफ़ी रात गये लौटकर घर पर आया था और जब दूसरे दिन सबेरे सोकर उठा, तो मुझे अजीब तरह का लग रहा था। मैंने इधर-उधर अपने चारों तरफ़ देखा, पर कुछ समझ में नहीं आया। मैंने देखा कि मेरे चौकवाले कमरे का फ़र्नीचर नहीं है; कमरा छोटा है; पलंग महोगनी के दूसरे डिज़ायन का है; मच्छरदानियों की जाली दूसरी तरह की है और मुझे बराबर यही लगता रहा कि मैं अपने कमरे में नहीं हूँ; बल्कि सोहोवाले मकान के छोटे कमरे में हूँ, जहाँ एडवर्ड हाइड के रूप में मैं सोया करता था।

मैं हँस पड़ा और अपनी मनोवैज्ञानिक परीक्षा-प्रणाली से इस भ्रम का कारण खोजने लगा। जब मैं इस विचार में तल्लीन था, तब बीच-बीच में ऊँघने भी लगता था। मैं अभी इसी हालत में था कि एकाएक चौंककर होश में आया और मेरी नज़र अपने हाथों पर पड़ गई। तुम जानते ही हो कि हेनरी जैकिल का हाथ डाक्टरों का-सा हाथ था—बड़ा, साफ़-सुथरा और मज़बूत, लेकिन यह हाथ, जिसे मैं बीच लन्दन के साफ़ उजेले में साफ़ साफ़ देख रहा था, दुबला-दुबला, सिकुड़ा हुआ, मटमैला था और इस पर घने बाल थे। यह तो एडवर्ड हाइड का हाथ था।

कोई आधे मिनिट तक मैंने अपने हाथ को देखा होगा कि मैं डर गया और ऐसे चौंक पड़ा, जैसे सितार के तार एक साथ झनझनाकर टूट गये हों। मैंने तुरन्त ही शीशे में मुख देखा और देखकर मैं सन्न रह गया! काटो तो बदन में ख़ून नहीं। क्योंकि जब मैं सोया था, तब डाक्टर हेनरी जैकिल के रूप में और जब जगा तब अपने को एडवर्ड हाइड के रूप में पाया। इसका क्या कारण हो सकता था? मैंने स्वयं अपने मन से पूछा, किन्तु दूसरे ही क्षण यह दुश्चिन्ता सवार हो गई कि इसका अब इलाज क्या हो? यह परिवर्तन तो आप ही बिना दवाई पिये ही हो गया था। दिन निकल आया था, नौकर जग पड़े थे, मेरी सब दवाइयाँ चौकवाले मकान की लैबोरेटरी में थीं—इतनी दूर, दो ज़ीनों की उतराई, फिर पिछवाड़े होकर आँगन को पार करके चीर-फाड़वाले कमरे में होकर

जाना। यह सब सोचकर मैं घबरा गया। यह तो संभव था कि मैं अपना मुँह ढककर निकल जाता, लेकिन अपने ठिगने क़द को कैसे छिपाता? किन्तु फिर एकाएक मुझको याद आया कि नौकर तो मेरे इस नये रूप से भी मिस्टर हाइड के रूप में परिचित हैं ही। बस, फिर मैं हाइडवाले कपड़े पहनकर तैयार हो गया और मुख्य द्वार से निकला ही था कि ब्राउशा की नज़र मुझ पर पड़ ही गई, जो मिस्टर हाइड को इतने सबेरे-सबेरे यहाँ देखकर कुछ सकपका गया। और मैं अपनी प्रयोगशाला में पहुँच गया। दस मिनट बाद ही अपने कमरे में मैं फिर डाक्टर जैकिल के रूप में बैठा हुआ गंभीरता-पूर्वक सुबह का नाश्ता खा रहा था।

मुझे भूख बहुत कम थी। इस विचित्र घटना से मुझे यह प्रतीत हुआ कि कर्मफल की अमिट रेखा अब मेरा न्याय करने के लिए मेरे भाग्य-पट पर खिंचने लगी है और हमेशा से अधिक अधीर होकर मैं अपनी इस दुहरी सत्ता पर विचार करने लगा। जिस रूप में मैं अपनी स्वेच्छा और शक्ति से प्रवेश कर जाता था, उसका उपयोग इधर बहुत दिनों से अधिक हो रहा था, और मुझे ऐसा भी प्रतीत होने लगा था कि जैसे ऐडवर्ड हाइड का क़द भी कुछ बढ़ गया हो, हालाँकि उस रूप में मुझे ऐसा कम मालूम पड़ता था। अब यह ख़तरा मुझे मालूम पड़ने लगा कि अगर यह प्रयोग इसी तरह बहुत दिनों तक और चलता रहा, तो मेरे स्वभाव का संतुलन कहीं सदैव के लिए भंग होकर एक ही रूप न हो जाय और इच्छानुसार परिवर्तित हो जाने की शक्ति का ह्रास हो जाय और मैं हमेशा के लिए एडवर्ड हाइड हो जाऊँ। उस दवाई का असर हमेशा से एक-सा होता भी नहीं था, क्योंकि शुरू-शुरू में तो कई बार मैं रूप-परिवर्तन करने में बिलकुल असफल भी रहा था और कई बार तो मुझे दुगुनी तथा एक बार तिगुनी मात्रा तक पीनी पड़ी, तब कहीं जाकर सफलता मिली थी, और इसी प्रकार के अनिश्चय से इधर मेरा संदेह बढ़ने लगा था। सबेरेवाली घटना से मैंने फिर यही निष्कर्ष निकाला कि पहले जैसे मुझे अपने हेनरी जैकिल-वाले रूप को बदलने में कठिनाई होती थी, उसी तरह अब इस नये हाइड-

वाले रूप को परिवर्तित करने में होने लगी है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि मैं अपने असली स्वरूप के गुणों पर से वश खोता जाता था और अपने दूसरे बनावटी और बुरे रूप को अनजाने ही अपनाता चला जा रहा था।

अब इन दोनों में से एक को अपना लेने की समस्या मेरे सामने आई। दोनों ही रूपों में मेरी स्मृति एक-सी रहती थी; लेकिन शेष स्वभाव नितांत रूप से उल्टा हो जाता था। जैकिल तो बड़ी उत्सुकता-पूर्वक और ख़ुशी से हाइड के करतबों को देखा करता था और स्वयं ही उनसे आनंद उठाता था, लेकिन हाइड जैकिल की ओर से बिलकुल उदासीन रहता था, या यदि कभी उसकी याद भी करता था, तो केवल इस प्रकार जिस प्रकार कि कोई पहाड़ी डाकू पहाड़ के शिखर पर पहुँचकर नीचेवाली उस खोह या कंदरा की याद करता है, जिसमें वह छिपा था। जैकिल के दिल में हाइड के लिए पिता के-से अनुराग से भी अधिक अनुराग था और हाइड को जैकिल में पुत्र की-सी उपेक्षा से भी अधिक उपेक्षा थी।

जैकिल के रूप में ही स्थायी हो जाने का अर्थ था अपने उन सभी अरमानों को कुचल डालना जिन्हें आज तक मैंने पोषित किया था और अपने इतने प्रयत्नों तथा कठिन परिश्रम का नाश कर देना। किंतु सदैव के लिए हाइड बन जाने का अर्थ था अपनी सभी आकांक्षाओं को पूरा कर लेना, किंतु एकबारगी ही सबके लिए घृणित और उपेक्षित बन बैठना और अपने मित्र खो देना। यह सौदा उचित न जँचे, लेकिन एक बात और भी थी—जैकिल की आत्मा सजग थी—वह अपने पापों पर पश्चात्ताप की अग्नि में तपती, लेकिन हाइड को तो अपनी किसी हानि का ध्यान-मात्र भी कभी नहीं होता। मेरी परिस्थिति तब अत्यंत विचित्र थी; इसलिए इस तर्क-वितर्क की संज्ञाएँ भी इतनी ही प्राचीन और साधारण हैं जितना प्राचीन और साधारण आज मानव हो चुका है। बहुत कुछ ऐसी ही बातें याद करने से पहले हमेशा ही मनुष्य के हृदय में उठा करती हैं, और जैसे कि शत प्रतिशत मेरे साथी मानव करते हैं, वैसे ही मैंने भी किया—अच्छाई को अपना लिया, किंतु उसको सुरक्षित रखने की शक्ति पाये बिना ही।

हाँ, तो मुझे वयस्क, असंतोषी, मित्रों से घिरा हुआ और सदाशयों-वाला डाक्टर हेनरी जैकिल ही अधिक पसंद आया और उसी को अपना-कर मैंने अपना मिस्टर हाइडवाला रूप, उसका यौवन, उत्साह, उमंग और पाशविक आनंद आदि सभी कुछ एकदम त्याग दिया, पर फिर भी अनजाने ही कुछ रहने दिया; जैसे मैंने उसके कपड़े नहीं फेंक दिये, और न सोहोवाला मकान ही छोड़ा।

जो भी हो, दो महीने तक मैं अपने संकल्प पर दृढ़ रहा और इतने कठोर संयम का जीवन व्यतीत किया, जैसा कि पहले कभी नहीं किया था। और साथ ही आत्मसुधार का भी सुख उठाया। किंतु फिर धीरे-धीरे आत्म-प्रेरणा और आत्म-प्रतारणा मेरे लिए प्रति दिन की साधारण सी बातें हो गईं और मेरे अंतर में जैसे हाइड के अरमान और आकांक्षाएँ स्वतंत्रता पाने के लिए आंदोलित होने लगे। और अंत में नैतिक दुर्बलता के एक क्षण में मैंने फिर वही दवा तैयार की और उसे पी गया।

मेरी यह धारणा है कि जब शराबी अपनी पीने की बुरी आदत के विषय में अपने मन में तर्क-वितर्क करता है, तो पाँच सौ बार में से एक बार भी नशे के पाशविक दुष्परिणामों को नहीं सोचता। और मैंने भी अपनी परिस्थिति पर विचार करते हुए अपनी स्वाभाविक नैतिक दुर्बलताओं और कुप्रवृत्तियों की ओर, जो हाइड के चरित्र के प्रमुख गुण थीं, कभी पूरी तरह से न तो उचित ध्यान ही दिया और न उनके प्रति सहन-शीलता ही प्रदर्शित की।

मेरा राक्षसपन, जो बहुत दिनों से बन्दी था, गरजता हुआ निकला। दवाई पीते वक्त ही मुझे इस बात का अनुमान था कि इस बार ऐडवर्ड हाइड कुछ अधिक उच्छृंखल और उन्मादित निकलेगा और मैं समझता हूँ कि यही कारण था कि बेचारे सर डैनवर्स की सज्जनता ने मेरे हृदय में एकदम विकराल शैतान जगा दिया और मैं आज ईश्वर के सम्मुख यह स्वीकार करता हूँ कि कोई भी मनुष्य, जिसका नैतिक पतन न हुआ हो, ऐसी तनिक-सी बात पर झुँझलाकर इतनी बड़ी हत्या नहीं कर डालता।

और अगर कोई भी औचित्य उस दुष्कर्म का हो सकता है, तो वह केवल यही कि बीमार बच्चा खिलौना पाने पर उसे उठाकर तोड़ डालता है; लेकिन मैं तो जान-बूझकर वे सभी सहज सद्वृत्तियाँ त्याग चुका था, जो पतित से पतित मनुष्य को भी एक बार ऐसे अमानुषिक कुकर्म करने से रोक देती हैं और मेरे मामले में तो तनिक भी किसी ऐसे लालच की ओर ध्यान देना निश्चय ही कुकर्म कर बैठना था।

तत्काल ही मेरे अन्दर आसुरी वृत्तियाँ जाग उठीं और फुफकारती हुई बाहर भी निकल पड़ी थीं। दानवीय हर्ष के साथ मैंने उस निरीह प्राणी को ख़ूब जी भरकर कुचला। लेकिन जब मेरे अंग भी थक-कर चूर हो गये, तब कहीं जाकर मेरे सर से भूत उतरा और मुझे ज्ञात हुआ कि मैंने क्या कर डाला। इस ज्ञान के साथ ही मैं सन्न हो गया और भय के मारे काँपने लगा। मेरी आँखों के सामने से जैसे झुका पर्दा उठ गया और अपनी जान जाती देख मैं एकदम वहाँ से भाग खड़ा हुआ। मेरे दिल में ख़ुशी भी थी और डर भी था। पाप करने की मेरी आकांक्षा तृप्त होकर और भी उभर उठी थी और साथ ही अपने प्राणों का मोह भी अत्यन्त बढ़ गया था। मैं भागकर अपने सोहोवाले मकान में पहुँचा और अपने को पूर्णतया सुरक्षित करने के लिए अपने काग़ज़-पत्र जला डाले और फिर बाहर सड़क पर चल दिया। सड़कों पर लैम्पों का उजाला अब भी हो रहा था और डरता और ख़ुश होता, अपनी हत्या पर क्रूर हँसी हँसता, भविष्य में अन्य हत्याएँ करने के मंसूबे बाँधता, और फिर भी जल्दी करता और फिर भी मुझे गिरफ़्तार करनेवालों की अपने पीछे आहट सुनता हुआ मैं चला जा रहा था। अपनी प्रयोगशाला में पहुँचकर हाइड दवाई तैयार करता जाता था और एक गीत गुनगुनाता जाता था; फिर उसे पीते वक़्त सर डैनवर्स का नाम ले लिया। वह फिर डाक्टर जैकिल में परिवर्तित हो गया, किन्तु उसकी आँखों से आँसू झर रहे थे। ये आँसू परिवर्तन-प्रक्रिया के कष्ट से नहीं निकले थे, वरन् मृत व्यक्ति के प्रति हेनरी जैकिल की सहानुभूति, पश्चात्ताप और कृतज्ञता

के आँसू थे, ये जो घुटने टेककर और हाथ जोड़कर ईश्वर से प्रार्थना करने पर उसकी आँखों से बह चले थे। मेरे स्वर्कीय भोग-विलास और कर्मों का आवरण मुझ पर आपादमस्तक पड़ गया और उस सीमा में मैंने अपना समस्त जीवन एक दृष्टि में देखा— अपने बचपन के दिनों से लेकर, जब कि मैं अपने पापा की उँगली पकड़कर चलता था, अपने डाक्टरी के पेशे के निःस्वार्थ परिश्रम तक, और तब से निरन्तर उसी रहस्य और अध्यात्म तथा माया की भावना से प्रेरित होकर चलता-चलता मैं आज संध्या को इस भयानक, पतित और अमानुषिक घटना तक आ पहुँचा। और इस समय मैं चिल्ला-चिल्लाकर रो सकता था। आँसू बहा-बहाकर और ईश्वर से प्रार्थनाएँ कर-करके मैंने अपने स्मृति-पटल पर आते हुए अनेकानेक विकाराल और भयावह दृश्यों और विचारों का निराकरण करने का प्रयत्न किया, फिर भी रह-रहकर पापी हाइड का विकृत कुरूप मुख मेरी आत्मा में झाँक-झाँक पड़ता था। जैसे-जैसे इस सन्ताप की तीव्रता कम होती गई, मेरे मन में एक प्रकार की प्रसन्नता उसकी जगह भरती गई। हाइड की समस्या सुलझ चुकी थी। आज से हाइड का अस्तित्व असंभव हो गया; क्योंकि अब मैं चाहता या न चाहता, वश अथवा परवश, मुझे अपने प्राणों के भय से जैकिल के अच्छे रूप को अपनाना ही था। ओह, हाइड का ध्यान तक मैं अपने मन में नहीं लाता था। कितनी विनय और सच्चाई के साथ मैंने पुनः अपना स्वाभाविक जीवन और उसके बंधन स्वीकार किये—मैंने अपनी लैबोरेटरी का वह दरवाज़ा ताले से बन्द कर दिया, जिसमें से मैं हाइड के भेस में आया-जाया करता था, और ताली तोड़ दी!

दूसरे दिन प्रातःकाल ही मुझे सूचना मिली कि इस हत्या से बड़ी सनसनी फैली हुई है और यह भी निश्चित है कि मिस्टर ऐडवर्ड हाइड ने ही यह हत्या की है। सर डैनवर्स बड़े नागरिक थे, इस कारण इस हत्या से सार्वजनिक क्षति हुई है। और यह केवल हत्या ही नहीं, एक दुर्दान्त मूर्खता भी है।

यह सब सुनकर मैं समझता हूँ कि मुझे ख़ुशी ज़रूर हुई थी; क्योंकि इससे मेरी कुप्रवृत्तियों पर फाँसी के फंदे के भय से जो बंधन लग गया था, उसने मेरी सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित किया। जैकिल ही जैसे मेरे प्राणों की शरण के लिए एकमात्र सुरक्षित संसार था। यदि क्षण भर भी उसमें से निकलकर हाइड बाहर संसार में झाँक लेता, तो तत्काल ही सभी के हाथ उसकी ओर उठ जाते और उसका गला घोंट देते।

मैंने संकल्प किया कि भविष्य के चाल-चलन से मैं अपने अतीत के पापों का प्रायश्चित्त कर डालूँगा, और यह मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मेरा यह संकल्प बहुत कुछ सफल भी हुआ। तुम जानते ही हो कि गत वर्ष के अंतिम महीनों में मैं दुखियों का कष्ट दूर करने में कितनी तत्परता के साथ संलग्न था और फिर जो कुछ भलाइयाँ मैंने कीं और जैसा सुख और शांति का जीवन मैंने व्यतीत किया सो भी तुम अच्छी तरह जानते हो। और अगर मैं यह कहूँ कि मैं फिर इस पवित्र और परोपकारी जीवन से ऊबने लगा था, तो सरासर झूठ होगा, प्रत्युत सत्य यह है कि मैं दिन-प्रतिदिन इस जीवन का अधिक से अधिक आनंद उठाता जाता था। किंतु मेरे ध्येय का द्वैत रूप अब भी अभिशाप की तरह मेरे स्वभाव से चिपटा हुआ था और जैसे ही मेरा प्रायश्चित्त पूरा होने को आया कि मेरी बन्दी नीच प्रवृत्तियाँ फिर स्वतंत्रता के लिए तड़पने लगीं। यह बात नहीं थी कि मैं हाइड को पुनर्जीवित करना चाहता था, उसका तो ध्यान मात्र ही अब तक मेरा ख़ून सुखा देता था; पर हाँ, अपना मन बहलाने के लिए यों ही खेल ज़रूर करना चाहता था और साधारण गुप्त पाप करनेवाले की भाँति ही मैं अपना लालच न रोक सका और फिर उसका शिकार बन बैठा।

और यहीं से मेरा और मेरी कहानी का अंत आरंभ हो जाता है; क्योंकि पाप का घड़ा चाहे जितना बड़ा हो, कभी न कभी तो पूरा भर ही जाता है और पूरा भर जाने पर फिर फूट भी पड़ता है। और पाप ही क्या, संसार में असीम की भी सीमा आ पहुँचती है। इस प्रकार मेरी

क्षणिक दुर्बलता ने मेरी आत्मा का संतुलन भंग कर दिया और फिर भी मैं सचेत नहीं हुआ; क्योंकि यह पतन मुझे स्वाभाविक ही मालूम हुआ। यह खोज करने से पहले मेरा जो जीवन उन्नति के शिखर पर था, उसी की स्वाभाविक प्रतिक्रिया का यह पतन फल-स्वरूप था।

जनवरी का एक स्वच्छ और सुंदर दिवस था। मैं रीजेंट पार्क में बैठा हुआ था। वसंत की भीनी-भीनी सुगंध चारों ओर महक रही थी और गूँज रहा था चिड़ियों का मृदुल संगीत। पैरों के नीचे ओस से भीगी धरती थी, लेकिन ऊपर निर्मल आकाश का झीना वितान था। एक बेंच पर बैठा हुआ मैं मीठी-मीठी हल्की धूप खा रहा था, परन्तु मेरे अंतर का पशु स्मृति-कुंज में घुसकर विध्वंस-लीला करने लगा था। उस समय मेरी आत्मा की प्रहरी-स्वरूप सद्भावनाएँ बाह्य सौंदर्य निरखने में बेसुध थीं और मेरा मन कह रहा था—'अजी, फिर प्रायश्चित्त कर लेना!'

अंत में मैंने सोचा कि मैं भी तो अपने पड़ोसियों की तरह ही ; और तब मैं मुस्कराकर अपनी तुलना अन्य लोगों से करने लगा—मैंने देखा कि मैं भलाई करता हूँ और ये लोग अकर्मण्य पड़े-पड़े आलस्य में दिन बिताया करते हैं। मैं अवश्य ही इन सबसे अच्छा हूँ—बस इस घमंड के उसी क्षण में मेरे अंदर एक तूफ़ान-सा उठा, मेरा जी मचलाया और नस-नस हिल गई। मैं मूर्छित हो गया, किंतु जैसे-जैसे मूर्छा दूर होने लगी, मुझे अपने स्वभाव और विचारों में परिवर्तन मालूम हुआ, बहुत निर्भीकता आ गई, ख़तरों का डर दूर हो गया। फिर मैंने अपने शरीर को निहारा। सिकुड़े हुए अंगों पर ढीले-ढीले कपड़े लटक रहे थे और घुटनों पर रक्खे हुए मेरे हाथ सख़्त हो गये थे और उन पर बड़े-बड़े बाल आ गये थे। मैं फिर एडवर्ड हाइड बन गया था। क्षण भर पहले ही मैं संसार की सम्पत्ति, उसके सम्मान और प्रेम का पात्र हो सकता था—घर पर मेरे लिए खाना तैयार रक्खा था, पर अब मैं गृहहीन था, सर्वविदित हत्यारा था, समस्त मानवता की घृणा और रोष का पात्र—मुझे फाँसी लगनी थी।

मेरी अक़्ल चकराने लगी, पर बिलकुल गुम नहीं हुई। मैंने कई बार यह अनुभव किया कि अपने इस दूसरे रूप में मेरी शक्तियाँ अधिक तीव्र हो जाती थीं और मेरा उत्साह प्रखरतर और इसी लिए जहाँ ऐसी विषम परिस्थिति में जैकिल शायद कुछ भी न कर पाते और हतबुद्धि हो जाते, वहाँ हाइड ने पूरी सावधानी, सतर्कता और बुद्धिमानी से युक्ति सोच निकाली। मेरी दवाइयाँ तो लैबेरेटरी की एक अलमारी में थीं, मैं उन्हें कैसे पाता?— यही समस्या थी जिसे सुलझाने के लिए मैं अपने हाथों से अपनी कनपटियाँ दबाकर बैठ गया। लैबोरेटरी के दरवाज़े में भी मैं ताला डाल आया था। अगर मैं अपने घर के फाटक से अन्दर घुसता, तो दरबान मिस्टर हाइड समझकर पकड़ लेता और फाँसीघर पहुँचा देता। इसलिए मैंने देखा कि मुझे अवश्य ही किसी दूसरे की सहायता लेनी पड़ेगी। लैनियन इस काम के लिए मेरे ध्यान में आया। परन्तु उसके पास जाया कैसे जाय? उससे यह काम करने के लिए कैसे कहा जाय? मान लो कि मैं सड़क पर न भी पकड़ा जाऊँ, तब मैं उसके सामने इस रूप में कैसे जाऊँ! और कैसे उस प्रसिद्ध सम्मानित डाक्टर से एक अजनबी की सूरत में कहूँ कि आप अपने दोस्त डाक्टर जैकिल के कमरे में से ये चीज़ें उठा लाइए!

इन्हीं समस्याओं में उलझते-उलझते मुझे यह ध्यान हो आया कि अपने मौलिक रूप का एक गुण अब भी मुझमें मौजूद है—मैं डाक्टर जैकिल का राइटिंग लिख सकता था!—बस यह ध्यान आते ही एक के बाद एक समस्या आप ही प्रारम्भ से अन्त तक सुलझती गई।

इसके बाद जहाँ तक हो सका, मैंने अपने ढीले कपड़े ठीक किये और सड़क पर जाती एक हैन्सम-गाड़ी* बुलाई। इसमें बैठकर मैंने उससे पोर्टलैंड स्ट्रीट के एक होटल में, जिसका नाम मुझे याद था, चलने को

---

* दो पहियों की एक घोड़ा-गाड़ी जिसमें कोचवान की गद्दी ऊँची होती है।

कहा—मेरी शक्ल और धजा देखकर ( जिसके अन्दर चाहे कितनी ही बन्द व्यथा का इतिहास छिपा था, फिर भी सचमुच मज़ाकिया सी थी ) कोचवान अपनी हँसी रोक नहीं सका। यह देखकर मैंने राक्षसी क्रोध से उबलकर उसके ऊपर अपने दाँत पीसे और तत्काल ही उसके ओठों पर से हँसी हवा हो गई। यह उसका सौभाग्य तो था ही, लेकिन उससे अधिक मेरा था; क्योंकि मैंने उसे नीचे खींच तो लिया ही था, बस मार ही और डालता। किन्तु बड़ी ख़ैर हुई।

होटल में पहुँचकर मैंने अपने चारों ओर क्रूर दृष्टि फेंकी कि सब नौकर काँपने लगे। भूलकर भी मेरी तरफ़ नज़र उठाने की हिम्मत फिर उन्हें नहीं हुई और पलकें नीचे किये ही उन्होंने मेरे आदेशानुसार मुझे एक अलग कमरे में ले जाकर बिठा दिया और लिखने का सब सामान भी प्रस्तुत कर दिया। अपने प्राण बचाने की चिन्ता में व्यस्त हाइड मुझे बहुत विचित्र जीव लग रहा था। अब भी वह असाधारण क्रोध में भरा हुआ था, हत्या तक करने के लिए प्रस्तुत था, दूसरों को दुःख देने के लिए उसका जी ललचा रहा था—फिर भी संयम से गंभीर बना बैठा रहा और दो पत्र लिख डाले—एक तो लैनियन को और दूसरा अपने नौकर पूल को। और जिससे उसे उनके पहुँचने का पूरा-पूरा निश्चय हो जाय, इसलिए उसने दोनों पत्रों को रजिस्टरी भी कर दिया।

तत्पश्चात् वह उसी प्राइवेट कमरे में दिन भर आँच तापता और अपने नाख़ून चबाता बैठा रहा; वहीं शाम होने पर उसने खाना खाया; लेकिन प्रतिपल पकड़े जाने के भय से उसका हृदय धक्-धक् करता रहा; उसे यही लगता था कि बैरा अब चिल्लाया, अब चिल्लाया और पुलिस आई।

इसी प्रकार बैठे-बैठे जब काफ़ी रात हो गई, तब वह एक सिकरम ( बन्द घोड़ागाड़ी ) में बैठकर लन्दन की सड़कों पर इधर से उधर घूमने लगा। मैं 'वह' कह रहा हूँ—'मैं' नहीं—मैं कह ही नहीं सकता, क्योंकि उस नारकीय प्राणी में मनुष्यता नाम मात्र को भी नहीं थी। उसमें भय और घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं था—वह जैसे इन्हीं से निर्मित था।

यों ही घूमते-घूमते आख़िर जब कोचवान को कुछ सन्देह होने लगा, तब उसने गाड़ी छोड़ दी और अपनी उसी ढीली-ढाली पोशाक में वह सड़क पर पैदल चलने लगा। राहगीर उसे देखने के लिए ठिठक जाते थे।

भयातुर वह जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाये चला जा रहा था; कम चलने-वाली सड़कों पर चक्कर काटता हुआ, एक-एक मिनट गिनता हुआ; क्योंकि आधी रात अभी दूर थी। रास्ते में शायद कहीं किसी औरत ने उससे दियासलाई ख़रीदने को कहा, जो उसने लौटकर उसी के मुँह पर दे मारी और वह बेचारी डर के मारे सिर पर पैर रखकर भागी।

इसके बाद लैनियन के यहाँ जो घटना हुई, वह तुम्हें लैनियन के पत्र से ज्ञात हो ही चुकी है।

जब मैं वहाँ अपने आपे में आ गया, यानी फिर जैकिल बन गया, तब अपने पुराने दोस्त के मन में मेरे इस अद्भुत कांड से जो भय समा गया था, उसका मुझ पर कुछ प्रभाव पड़ा—यह मैं नहीं जानता; क्योंकि जिस घृणा से मैं अपनी पिछले कुछ घंटों की घटनाओं को देख रहा था, उसमें लैनियन का भय समुद्र में बूँद के समान ही था। मुझमें परिवर्तन हो गया था। अब मुझे फाँसी का भय तो नहीं था, पर यह भय ज़रूर था कि मैं बिना कुछ किये ही किसी भी क्षण हाइड हो सकता हूँ। लैनियन की भर्त्सना तो मुझे बहुत कुछ जैसे स्वप्न में ही सुनाई पड़ी थी, और उसी स्वप्न की-सी अवस्था में मैं अपने घर लौटकर ऐसी गहरी नींद में सोया कि फिर बुरे से बुरे सपने भी मुझे जगा नहीं सके।

सुबह जब मैं सोकर उठा, तब थका और कमज़ोर था, पर कुछ ताज़ा भी हो गया था। मैं अब भी अपने अन्दर सुप्त राक्षस से घृणा कर रहा था और डर रहा था, और कल की भयावह जोखिम मुझे पूरी-पूरी याद थी; किन्तु मैं एक बार फिर निश्चिन्त अपने कमरे में और अपनी दवाई के समीप बैठा हुआ था। अपने प्राणों की रक्षा के कारण मेरी आत्मा कृतज्ञता और सुख से फूली नहीं समाती थी।

प्रातः वायु की शीतलता का आनन्द लेता हुआ मैं नाश्ता करने के बाद आँगन में बड़ी फ़ुर्सत से टहल रहा था कि एकाएक परिवर्तन के चिह्न फिर मेरे अन्दर प्रकट होने लगे और मैं घबराकर अपनी लैबोरेटरी में भागकर पहुँचा भी नहीं था कि हाइड बन गया और उन्मादित हो गया। मैंने तुरन्त ही दवाई तैयार करके पी; किन्तु उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। इसलिए दुबारा एक ख़ुराक और पी, तब कहीं जाकर मैं जैकिल बना। परन्तु मुश्किल से छः घंटे बाद ही जब मैं अँगीठी के पास उदास बैठा हुआ कुछ सोच रहा था, एकाएक फिर हाइड में परिवर्तित होने लगा। तत्काल ही उठकर फिर दवा पी और ठीक हो गया।

उस दिन से फिर यह हाल हो गया कि बड़े प्रयत्न करने और उस दवाई की ख़ुराक पर ख़ुराक पीने से ही मैं किसी तरह अपने जैकिल को हाइड में बदलने से रोकता था। इसी भय से कि मैं कहीं फिर हाइड न बन जाऊँ, मैं दिन-रात घुलने लगा। यदि क्षण भर को भी मेरी आँख लग जाती, तो मैं आँखें खोलने पर देखता कि कुर्सी पर बैठे-बैठे ही मैं हाइड बन गया हूँ।

ऐसे प्रति पल आकस्मिक परिवर्तनों का प्रभाव मेरे स्वास्थ्य पर बहुत पड़ा; क्योंकि मैं भय के मारे सोता था नहीं, जिसका फल यह हुआ कि मैं मन और शरीर, सभी तरह से अत्यन्त दुर्बल हो गया। मुझे बुख़ार रहने लगा और हर वक़्त मुझे यही भय सताता था कि कहीं मैं हाइड न बन जाऊँ!

लेकिन जब मैं सोता होता था, या जब दवाई का प्रभाव मेरे ऊपर नहीं होता था, तब मैं लगभग बिना किसी परिवर्तन के ही—क्योंकि दिन-प्रतिदिन परिवर्तित होने में जो कष्ट मुझे होता था, वह कम होता जाता था - मैं ऐसी शक्ति पा जाता था जो भयावह तथा विकराल दृश्य उत्पन्न कर देती थी। मेरी आत्मा अकारण ही घृणा से उद्वेलित हो उठती थी और शरीर ऐसा निर्बल हो जाता था कि वह फिर जीवन की उफनती हुई शक्तियों को वश में करके अपने में समाहित नहीं कर सकता था। जैकिल

की रुग्णावस्था के कारण ही हाइड की शक्तियाँ बढ़ती मालूम होती थीं और अब वे परस्पर समान रूप से घृणा करते थे। जैकिल की घृणा सहज अनुभूत थी। उस जीव की, जो अब मृत्यु तक उसका अभिन्न साथी था और जो उनकी कुछ चेतन वृत्तियों में भी साझी था, पूर्ण विकृति तथा कुरूपता डाक्टर जैकिल ने अब भली भाँति देख ली थी। उसके साथ संबद्ध करनेवाले ये सूत्र ही उनकी वेदना को अत्यन्त त्रासदायक बना देते थे। और इस बंधन के परे हाइड के जिस रूप की कल्पना वे करते थे, वह यद्यपि जीवन-शक्ति से पूर्ण होता था, फिर भी वह न केवल नारकीय होता था, अपितु अपार्थिव तथा आकार-हीन भी। यह अचम्भे की बात थी कि गड्ढे की कीचड़ चीख़ती थी और बोलती थी; और भुरभुरी धूल हिलती-डुलती थी और पाप करती थी और वह जो मृत था, जिसका कोई रूप नहीं था, फिर भी कर्म करता था! और फिर वही मौत का भय उससे पत्नी और आँख से भी अधिक समीपता के साथ चिपटा हुआ था—उसके मांसल पिंजरे में बंद पड़ा था, जहाँ से वह चीख़ रहा था और जन्म लेने के लिए तड़पता मालूम होता था और दुर्बलता के प्रत्येक क्षण में, नींद के नीरव शांत क्रोड़ में उनके विरोध में उठ खड़ा होता था और उन पर उनका जीवन ले लेता था।

जैकिल के प्रति हाइड की घृणा दूसरे प्रकार की थी। फाँसी का डर उसे निरंतर अस्थायी आत्महत्या करने के लिए बाधित करता था। और व्यक्ति न रहकर केवल व्यक्ति का एक भाग मात्र रह जाता था, किंतु वह जैकिल की आवश्यकता और उसकी निराशा से घृणा करता था और अपने प्रति जो उनकी घृणा थी, उससे भी क्रुद्ध होता था। इसी लिए वह बंदरों की तरह मेरी नक़ल करता था, मेरे ही राइटिंग में मेरी ही पुस्तकों पर न जाने क्या क्या बुरी बातें लिख देता था, पत्र जला देता था, मेरे पिता का चित्र जला दिया था, और अगर स्वयं उसे ही फाँसी का डर न होता, तो वह मेरा ही नाश करने के लिए आप ही अपना नाश भी कर लेता। फिर भी उसका जीवन से मोह ही अद्भुत है। जब मैं उसके ध्यान मात्र

से ही सन्न हो उठता हूँ और मेरी तबियत ख़राब होने लगती है, जब मैं उसके इस मोह की नीचता और दुर्भावना का ध्यान करता हूँ और जब मैं यह जानता हूँ कि यह जानता है कि मैं जब भी चाहूँ आत्महत्या करके उसकी शक्तियों का अंत कर सकता हूँ, तभी मेरे हृदय में उसके लिए कुछ दया उमड़ आती है।

अब मेरे पास समय भी नहीं है, और इस कहानी को आगे बढ़ना मैं व्यर्थ ही समझता हूँ। केवल इतना ही कह देना चाहता हूँ कि किसी ने भी मेरे बराबर कष्ट नहीं सहे होंगे। और इन कष्टों के साथ ही स्वभाव के कारण—कष्ट सहकर ऊँचे उठ जाने के कारण नहीं—एक तरह की दुराशा-सी और विराग-सा उत्पन्न हो गया है। और हो सकता था कि मैं यह दंड अनेक वर्ष पर्यन्त भोगता रहता, किंतु अब एक ऐसा दुर्भाग्य आ पड़ा कि मैं सदैव के लिए अपने वास्तविक रूप से बिछुड़ गया। वह साल्ट ( लवण ) की मात्रा, जो मैंने प्रथम बार प्रयोग करते समय मँगाई थी, समाप्त हो आई थी; क्योंकि उसके बाद दुबारा मैंने वह फिर नहीं मँगाई थी। वह मैंने तुरंत ही बाज़ार से और मँगवाई और जब दवाई तैयार करने बैठा, तब उबलने के बाद कोल का रंग पहले कत्थई न होकर एकदम हरा ही हो गया। इसे मैं पी गया, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। अब तो मैं घबरा गया। मैंने पूल को भेजकर लंदन के हर कैमिस्ट की हर दुकान ढुँढ़वा ली; लेकिन वैसा ही शुद्ध साल्ट मुझे फिर नहीं मिला और तब मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि मेरा पहला वाला साल्ट ही शुद्ध नहीं था और उसके अंदर की जो मिलावट थी, उसी ने उस दवाई में शरीर-परिवर्तन की अद्भुत शक्ति उत्पन्न कर दी थी।

एक सप्ताह व्यतीत हो गया है और मैं अब हेनरी जैकिल के रूप में ही इस आत्मकहानी को समाप्त करता हूँ। जो कुछ भी पुराने साल्ट की बची-खुची थोड़ी सी मात्रा रह गई थी, उसी से दवाई तैयार करके मैंने आख़िरी बार पी है और हाइड को कुछ काल के लिए भगा

देने में समर्थ हुआ हूँ। इस प्रकार हेनरी जैकिल का यह अब अंतिम समय है। अंतिम बार ही वह आज अपना मुख दर्पण में देख रहा है— उफ़् कितना परिवर्तन हो गया!—और अंतिम बार ही स्वाभाविक वास्तविक जैकिल की तरह सोच रहा हूँ, काम कर रहा हूँ। अब इस कहानी को समाप्त करने में मुझे देर भी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि हाइड ने इसे अभी तक तो नष्ट नहीं किया है, जो केवल सौभाग्य और असाधारण बुद्धिमानी के विचित्र सुयोग तथा संयोग की बात है। अगर लिखते-लिखते ही कहीं मैं हाइड बन गया, तो हाइड इसके अभी-अभी टुकड़े-टुकड़े कर देगा, किंतु अगर लिखने के बाद मुझे कुछ समय मिल जायगा, तो मैं इसे सुरक्षित स्थान पर रख दूँगा और फिर हाइड की अद्भुत स्वार्थपरता तथा तात्कालिक अन्यान्य बन्धन, संभव है कि, उसे इसके साथ बंदर का सा बर्ताव न करने दें। और वैसे सच तो यह है कि हम दोनों का ही अब जो निश्चित अंत बढ़ा चला आ रहा है, उससे उसका जोश बहुत कुछ मर गया है और वह कुछ बदल भी गया है। अब से आध घंटे बाद जब मैं अंतिम बार सदैव के लिए उस घृणित स्वरूप में परिवर्तित हो जाऊँगा, तब मैं जानता हूँ कि मैं किस तरह कुर्सी पर बैठकर काँप-काँप उठूँगा और रोऊँगा, या अत्यंत भयभीत होकर यातनादायक कड़ी उत्सुकता-पूर्वक इसी कमरे में, जो मेरा अंतिम आश्रय है, इस संसार में, टहलता हुआ बाहर से आनेवाली ख़तरे की हरेक आवाज़ को सुनूँगा! क्या हाइड को फाँसी होगी? या अंतिम क्षण में वह अपने को मुक्त करने के लिए साहस पा जायगा?—भगवान् ही जाने; मैं जानना भी नहीं चाहता, क्योंकि मेरी वास्तविक मृत्यु का तो यही क्षण है। इसके बाद क्या होगा, इससे मुझे कोई प्रयोजन नहीं, हाइड ही जानेगा!

अब मैं लिखना बंद करता हूँ और अपनी इस आत्मकहानी को समाप्त करने के साथ ही मैं अभागे हेनरी जैकिल के जीवन को समाप्त करता हूँ!

——

झूठ

१

# ऐडमिरल का परिचय

जब डिक नेज़बी पेरिस में थे, तो वहाँ उन्होंने जिन लोगों से अपना परिचय किया, वे कुछ बहुत अजीब तरह के लोग थे। कारण कि डिक उन लोगों में से थे, जो अपने ही कानों से सुनते हैं और अपने हिये की आँखों से देखते हैं और सब कुछ समझ लेते हैं। स्टुअर्ट मिल की तरह ही उनकी विचारावली विपुल और विशाल थी, किन्तु उनका अपना जीवन-दर्शन हाड़-मांस के यथार्थ मानव से सम्बन्ध रखता था और प्रयोग-प्रणाली में विश्वास करता था। वे छोटी-छोटी बातों और छोटे-छोटे लोगों की उपेक्षा करते थे। उनके लिए छोटे लोग वे ही होते थे, जिनका अपना कोई स्पष्ट व्यक्तित्व नहीं होता था, चाहे फिर वे राजा हों या रङ्क। शरीफ़ या रोबदार चेहरा देखकर, मुलायम या चुभती आवाज़ सुनकर और मुस्कराती, संकेत करती या भेद भरी आँखों की झलक मात्र देखकर उनका मन तुरन्त ही उछल पड़ता था—"ओह! यह था आदमी एक!" अथवा औरत हुई तो, "यह चीज़ थी एक!"—उनका मन बोलने लगता था, और तत्पश्चात् उत्फुल्ल होकर विचार-मग्न हो जाते थे। उनकी प्रसन्नता ठीक वैसी ही होती थी जैसी कि कलाकार को अपनी कला से होती है।

कल्पना करना सृष्टि करना है। जिस सुंदरी को मैं प्यार करता हूँ, उसका सौंदर्य बहुत कुछ मेरी ही कल्पना-सृष्टि है। महान् प्रेमी वही है जो महान् चित्रकार की तरह अपनी प्रेयसी में इतना सौंदर्य भर सके कि वह मानवी न होकर देवी प्रतीत हो। किन्तु साथ ही चातुर्य के साथ इस प्रकार संतुलन करे कि वह सच्ची नारी ही रहे—वास्तविक मानवी,—अपने नारी-सुलभ चरित्र का स्वतन्त्र प्रदर्शन करती रहे,—साधारण सांसारिक सुखों के लिए उसके हृदय में लालसा रहे, स्वाभाविक ईर्ष्या

रहे,—और फिर भी वह उसकी पूजा करता रहे। प्रेम करना अपने प्रिय पात्र को पूज्य रूप में देखना है। जब हम स्वयं अपनी किसी पावन भावना से अथवा अपने प्रिय-पात्र के स्वभाव की किसी निर्मल और पवित्र सुंदरता से प्रेरित होकर प्रेम करते हैं, तब हम अपने प्यार की प्रतिमा को अपने अंतरतम की सुंदरतम, सत्य और शिव भावना की दृष्टि से देखते हैं। जब हम किसी की केवल विशेषता को ही देखते हैं, तो पहले उसकी दुर्बलताओं की ओर से अपनी आँखें मूँद लेते हैं, उन पर ध्यान नहीं देते। यदि आप व्यक्ति को समझने लगते हैं, तो निश्चय ही आप उसके लिए सहानुभूति भी रखने लगते हैं; क्योंकि हम दूसरे को तभी समझते हैं, जब कि हम उसके गुणों तथा दुर्गुणों को अपने ही गुणों और दुर्गुणों की दृष्टि से देखते हैं। यही कारण तो है कि कलाकार की अपनी बुरी से बुरी कृति के प्रति असाधारण सहनशीलता कहावतों की तरह ही प्रतिष्ठित है। इसी कारण तो डिक नेज़बी उन सभी व्यक्तियों के साथ, जिनके सम्पर्क में वे आये थे और जिनके स्वभाव का अध्ययन उन्होंने किया था, अत्यंत स्नेह और सहानुभूति से व्यवहार करते थे। सहृदय नेज़बी ऐसे ही संकोचशील और वीर सज्जन थे, जिनसे लोग मिलना पसंद करते हैं।

डिक के स्नेहपात्रों में से थे एक मिस्टर पीटर वान ट्रॉम्प, जो अँगरेज़ी बोलते थे, कुछ अंतर्राष्ट्रीय क़िस्म के दुपाये जीव थे और जिनका पेशा कोई ख़ास तो नहीं था, लेकिन आम फ़ायदे का ज़रूर था। बहुत बरस पहले वे एक उपनिवेश में कुछ प्रसिद्धि के चित्रकार थे और उनके चित्रों से, जिनपर "वॉन ट्रॉम्प" लिखा रहता था, उस उपनिवेश के गवर्नरों तथा जजों के बड़प्पन को सम्मान प्राप्त हुआ था। वहीं उन्हीं दिनों उन्होंने अपनी शादी कर ली थी, लेकिन फिर कोई झगड़ा होने पर अपनी पत्नी और पुत्री दोनों को ही छोड़ दिया। झगड़े के ठीक-ठीक कारण किसी को नहीं मालूम थे। पिछले दस साल से तो वे पेरिस में डिक नेज़बी के पास ही पड़े-पड़े रोटियाँ तोड़ रहे थे।

जो धंधा वे करते थे, उसे कोई एक नाम देना किसी क़दर मुश्किल है। मोटी तरह से समझ लीजिए कि वह एक ऐसा नाम होगा जो आज हम लोगों को सुनने में बहुत भला नहीं लगेगा। यद्यपि वे उसे बड़ी चतुरता के साथ किसी प्रकार गिरते-पड़ते निभाते थे, फिर भी किसी क़दर वे एक पेशेवर चित्रकार कहे जा सकते थे। उनका अड्डा ग्रांड होटल था और अन्य शानदार कैफ़े भी। इन्हीं किन्हीं स्थानों पर किसी चलती-फिरती सुंदरी से प्रेरणा लेकर आप उन्हें चित्र बनाते देख सकते थे। आप बहुत ही मिलनसार थे और .खूब बात करनेवाले। न जाने कितने छोटे-बड़े काम वे बस डेढ़ दिन में ही कर डालने का पक्का वादा कर देते थे। वे किसी के लिए एक दोस्त और नौकर के बीच की ऐसी चीज़ हो उठते थे, जिनकी भलाइयों और एहसानों का बदला चुकाने में एक अजीब तरह की हिचकिचाहट और परेशानी मालूम पड़ती थी। लेकिन अगर मिस्टर पीटर किसी के साथ भलाई करना चाहते थे, तो उनके लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। वे फ़ौरन उसकी परेशानी उसके हाथ अपनी एक तस्वीर बेंचकर दूर कर देते थे, या अगर मेल कुछ ज़्यादा गहरा हो गया हो, तो वे उसके साथ इतना एहसान करेंगे कि उसकी तस्वीर मुफ़्त बना देंगे, बशर्ते कि वह उन्हें इसके लिए कैनवैस ख़रीदकर दे दे।

पेरिस के चित्रकार-वर्ग से वे कहा करते थे—"मैं तो यों ही शौक़िया तस्वीर बनाता हूँ। मैंने इस मद में इतना रुपया ख़र्च किया है जितना तीन चित्रकारों के पास मिलाकर भी न होगा। इसके सिवा मैं टमटम में बैठकर ग्रीस घूमने गया था। चार सिपाही पीतल की भरी बन्दूक़ें लिये मेरे साथ चलते थे। और यूरोप तो मैंने सारा का सारा चार घोड़ोंवाली फ़िटन में बैठकर घूमा था; बड़े-बड़े जर्मन शाहज़ादों से मिला था और गाने और नाचने की मशहूर मलकाएँ तो मेरे पीछे-पीछे भेड़ों की तरह दौड़ा करती थीं और मेरे होटल और दर्ज़ी के बिल तक चुकाती थीं।'

अब इनका हाल यह था कि लोगों से पैसे-पैसे का उधार माँगते फिरते थे, लेकिन उधार देनेवालों पर उलटा एहसान दिखाकर। नाश्ता

एक उन्नीस बरस की लड़की के सिर करते थे जो बेचारी निराश प्रेमिका थी और चित्रकारी सीखती थी।

मिस्टर पीटर की इन सब बातों में लड़कों को बड़ा मज़ा आता था। उनकी पुरानी नामवरी और शानोशौकत की ग़प्पें सुन-सुनकर उन लड़कों ने उनका नाम रख लिया था एडमिरल।

एक दिन डिक एक होटल में गये थे। वहीं एडमिरल से उनकी भेंट हो गई थी। एडमिरल होटल के एक कोने में अलग अँगीठी के पास बैठे मुर्ग़ा-मुर्ग़ी की एक तस्वीर बना रहे थे। पास ही उनके एक वाटर-कलर बॉक्स ( रंगों का डिब्बा ) रक्खा था और जब-तब रह-रहकर वे ऊपर छत की ओर देखते थे, जैसे कला की देवी से प्रेरणा ले रहे हों।

यह देखकर कि एक चित्रकार होटल में बैठा हुआ चित्र बना रहा है, डिक को आश्चर्य हुआ और वे उठकर उसके पास पहुँचे और पूछा—"क्या मैं आपकी तस्वीर देख सकता हूँ ?"

"बेशक, बेशक ! बहुत ख़ुशी से।" एडमिरल की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा।

"यह है क्या ?"

"कुछ नहीं""यों ही ज़रा," एडमिरल ने मन ही मन फूलते हुए उत्तर दिया। "ऐसी चीज़ें तो मैं योंही बनाकर फेंक देता हूँ—यों ही चलते-फिरते।" कहकर उन्होंने हाथ से इशारा किया।

"ठीक कहते हैं आप।" डिक ने चित्र का रद्दीपन देखकर कहा।

"आप समझते हैं," वान ट्राम्प ने अपनी बात शुरू की—"मैं दुनियादार आदमी हूँ, और तब भी आर्टिस्ट हूँ और फिर आर्टिस्ट तो आर्टिस्ट ही है, जो हो गया, सो हो गया। जैसे मैं सड़क पर चला जा रहा हूँ कि एकाएक मेरे दिल में एक ख़याल उठता है और मैं बस उसी का हो रहता हूँ बिलकुल ऐसे ही जैसे कोई ख़ूबसूरत लड़की देखकर—फिर तो पीछा छुड़ाने की कोशिश करना ही बेकार है। मैं तो फिर तस्वीर फ़ौरन बनाकर ही दम लेता हूँ।"

"ठीक है । समझ गया।"

"यह सब आसान काम है— मेरे लिए तो बिलकुल ही आसान है । यह तो मेरा शौक़ है, धंधा थोड़े ही । मेरा पेशा है मेरी ज़िन्दगी, ज़िन्दगी— यह बड़ा शहर—पेरिस—पेरिस रात में देखने लायक़ होता है । इसका रंग तो !—रोशनी, बग़ीचे और इसके अजीब-अजीब मुहल्ले ! फिर से जवानी का सुख ! मेरा दिल तो अभी जवान है; लेकिन जिस्म साथ नहीं देता ! क्या करे ग़रीब आदमी—काम करते-करते ही बूढ़ा हो जाता है । और बस देख-देखकर ही अपनी आँखें सेंक लेता है—और क्या, दिमाग़ी आदमी के लिए एक यही मज़ा है, मिस्टर !—" और नाम जानने के लिए वे रुक गये ।

"नेज़बी" डिक ने उत्तर दिया ।

मिस्टर पीटर फिर उनसे बड़ी ख़ातिर से पेश आये और कहा—"इस परदेश में, चलो, अपने देश का एक आदमी तो मिला।"

आगे अगर आपको इन दोनों की बातें सुनने को मिलतीं तो आप अवश्य ही यह समझते कि ये लोग शायद अफ़्रीका के बीच में कहीं किसी जंगल में बैठे बातें कर रहे हैं, पेरिस में नहीं । डिक को पहले कभी कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जो उन्हें इतनी जल्दी पसन्द करने लगा हो और जिसने इतनी अच्छी बेतकल्लुफ़ी से उनके साथ बर्ताव किया हो । उनसे मिलकर पीटर ही ख़ुश हुए मालूम पड़ते थे, जैसे कि कोई बुज़ुर्ग किसी तेज़ और हँसमुख लड़के से मिलने पर होता है । वे कहने लगे "मैंने तुम जैसा क़ायदे का और तमीज़दार 'आदमी दूसरा नहीं देखा—और फिर भी इस क़दर बेतकल्लुफ़—मैं तो कभी किसी मौक़े पर ऐसा नहीं बन सकता।"

डिक ने विरोध किया—"नहीं-नहीं, ऐसा तो नहीं..."

खाने का समय आने पर पीटर ने पूछा—"तुमने पेरिस देखा भी है ?"

"नहीं, इतना तो नहीं जितना कि आपने देखा है।" डिक ने उत्तर दिया ।

"हाँ, सो तो है ही," वॉन ट्रॉम्प ने फूलकर कहा—"पेरिस! मेरे दोस्त—अगर मैं तुमसे कहूँ—माफ़ करना भई! कि तुम पेरिस मेरी तरह देख लोगे, तो बड़ी-बड़ी अजीब चीज़ें देख लोगे। बस, मैं यही कह सकता हूँ। बड़ी-बड़ी अजीब चीज़ें! हम और तुम दुनियादार आदमी हैं और यह है पेरिस, दुनिया का सबसे बढ़िया शहर! मिस्टर यह तो तुम्हारी ख़ुशक़िस्मती है कि आज तुम यहाँ हो। आओ, आज साथ-साथ खाना खायें। ऐसा मौक़ा बार-बार थोड़े ही आता है। चलो, मैं तुम्हें जगह बता दूँ।"

डिक राज़ी हो गये। खाना खाने के लिए जाते वक़्त रास्ते में पीटर ने उन्हें बतलाया कि यहाँ से दस्ताने ख़रीदो, और उन्हें दस्ताने ख़रिदवा दिये; फिर आगे चलकर कहा, यहाँ से सिगार ख़रीदो, और उन्हें बहुत से सिगार ख़रिदवा दिये, जिसमें से कुछ उन्होंने अपने लिए भी निहायत एहसान करके मंज़ूर कर लिये। रेस्तराँ में पहुँचकर उन्होंने कहा—यह यह चीज़ें मँगवाओ। पर खा चुकने पर जब बिल आया, तब मिस्टर नेज़बी की आँखें खुल गईं।

इस प्रकार उस रात को मिस्टर पीटर ने जिस-जिस तरह मिस्टर नेज़बी की जेब कटाई, इसका अन्दाज़ लगाना मुश्किल है। लेकिन डिक हर एक बात ख़ुशी से मानते गये और साथ ही यह भी समझते रहे कि मैं बनाया जा रहा हूँ और लूटा जा रहा हूँ, लेकिन इसका उन्होंने कोई ख़याल नहीं किया; क्योंकि वे अजीब लोगों की तलाश में रहते ही थे और शिकारी को शिकार पाने के लिए अपने कुत्तों की बलि तो देनी ही पड़ती है।

पेरिस में भी कोई अजीब बात दिखाई नहीं पड़ी। वैसी अजीब बातें मिस्टर नेज़बी बिना वॉन ट्रॉम्प जैसे गाइड के भी देख सकते थे। फिर भी वॉन ट्रॉम्प कोई मामूली गाइड नहीं था। अपनी जिस ग़रीबी का हाल उन्हें ज़बर्दस्ती दिखाना पड़ा था, उसे फिर किसी तरह तो ढाँकना ही था! इसलिए उन्हें फिर एक दूर की सूझी—

"और ऐसा", वे खाँसकर बोले—"ऐसा ही है पेरिस !"

"रहने भी दीजिए !" मिस्टर नेज़बी ने कहा, जो अब तक इस तरह की बनावटी बातों से खीझ उठे थे।

एडमिरल मुँह लटकाकर भीगी बिल्ली की तरह सीधे बन गये और इधर-उजर नज़र उठाकर कनखियों से देखा।

"अच्छा, गुड नाइट।" डिक ने कहा—"मैं बहुत थक गया हूँ !"

"उफ़—ओ ! इतनी अँगरेज़ियत"—मिस्टर नेज़बी का हाथ पकड़कर एडमिरल ने तपाक से कहा—"ऐसे पक्के अँगरेज़ हो तुम ! भई वाह ! तुम भी ख़ूब आदमी हो ! कितने बढ़िया आदमी हो ! चलो, मैं तुम्हें घर पहुँचा आऊँ।"

"देखिए जनाब"—मिस्टर नेज़बी ने उन्हें सचेत किया—"मैं गुड नाइट कह चुका हूँ और अब एक सेकिंड भी नहीं रुकूँगा। आज बस यहीं तक। अब बहुत हो चुका।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा !" एडमिरल ने ज़रा शान के साथ कहा।

"चुप रहो !" डिक ने डाँटा—"बेकार नाराज़ी मत दिखाओ। बहुत बन रहे हो तब से। मैं तुम्हें समझदार और तजुर्बेकार आदमी समझ रहा था। लेकिन अब मैंने तुम्हें अच्छी तरह जाँच लिया है, और बस अब बात ख़त्म हुई। जो सबक़ मैंने सीखा, क्या उसकी क़ीमत चुकी नहीं अभी ? अच्छा, फिर मिलेंगे।"

वॉन ट्रॉम्प ख़ुश होकर हँस पड़ा और ख़ूब झकझोरकर हाथ मिलाया और अक्सर ही मिलते रहने की आशा प्रकट की। लेकिन जब डिक चले गये, तब उनके पीछे झुँझलाकर एक नज़र डाली और मुँह बिचका दिया।

तत्पश्चात् वे लोग अक्सर ही कहीं न कहीं सड़क पर आते-जाते मिल जाते थे और डिक बूढ़े को अपनी पसंद के किसी सस्ते रेस्तराँ में जाकर मामूली सा नाश्ता करा देते थे।

कुछ दिनों बाद मिस्टर पीटर ने कहा कि मैं ग्रास्ट्रेलिया जाना चाहता हूँ। डिक ने उन्हें एक पौंड दे दिया और बड़े दुःख के साथ बिदाई ली। लेकिन आठ-दस दिन बाद मिस्टर पीटर उन्हें फिर दिखाई दे गये और उन्हें न तो कोई आश्चर्य ही हुआ और न कोई क्षोभ ही। उन्होंने पीटर को फिर एक पौंड दे दिया और दुखी होकर बिदा ली, परन्तु फिर दो-एक दिन वे उन्हें सड़क पर टहलते नज़र पड़ गये। मतलब यह कि ऐसे ही मिस्टर नेज़बी उन्हें हर बार आस्ट्रेलिया जाने के लिए एक पौंड दे देते थे और मिस्टर पीटर हर बार किसी न किसी कारण-वश आस्ट्रेलिया नहीं जा पाते थे और बिना किसी हिचक के उनसे मिल लेते थे और हर बार बिदाई के वे हृदयविदारक दृश्य वास्तव में देखने योग्य होते थे।

इसी बीच में डिक ने अपने इन नये मित्र के विषय में इधर-उधर से बहुत कुछ जान लिया। उनके जहाज़, चार घोड़ों की गाड़ी, विदेश में उनकी प्रसिद्धि, उनकी लड़की जिसके विषय में दबी ज़बान से वे अजीब-अजीब बातें कहते थे और जैसे-जैसे वे और नई-नई बातें सुनते जाते थे, उनके दिल में मिस्टर पीटर वॉन ट्रॉम्प के लिए कुछ चिंता—कुछ स्नेह-सा पैदा होता जाता था। जब मिस्टर नेज़बी पेरिस से जाने लगे, तब उन्होंने अपनी बिदाई के समय जो दावत दी, उसमें वॉन ट्रॉम्प को भी बुलाया और उनकी खूब ख़ातिर की और जब वे बिदा होने लगे तब बेचारा बूढ़ा मेज़ के नीचे पड़ा रो रहा था।

——

## २

## सम्पादक के नाम

मिस्टर नेज़बी डिक उच्च मध्य-वर्ग के थे, इसलिए उनमें वही तेज़ी और अक्खड़पन था, जो इस वर्ग का स्वभाव है। उनके लिए संसार में कोई उलझन नहीं थी। 'यह ठीक है,' या 'यह ग़लत है,' बस वे यही कहते थे। छोटी-छोटी बातों में भी उनकी सूझ ग़ज़ब की ठीक होती

थी। जो बात उन्हें बुरी लगती थी, वही अगर आपको भी बुरी न लगे, तो वे इसे आपकी हठधर्मी समझते थे और बस फ़ौरन उनके दिमाग़ का पारा चढ़ जाता था। इसके सिवाय वे इतने तेज़ और खुले दिल के थे कि इँगलैंड में कम ही आदमी वैसे होंगे। मुख पर गंभीरता थी और सिर पर सफ़ेद बाल। लोमड़ी के पुराने शिकारी थे।

वे अपने लड़के डिक को बहुत मानते थे और डिक भी अपने बाप की बहुत इज़्ज़त करता था। अपने जवान लड़के को स्वतन्त्र होने के लिए विद्रोह करते देखकर वे कभी-कभी क्षुब्ध हो उठते थे। जब कभी बाप-बेटों में बहस छिड़ जाती, तो फिर उसमें बहुत गर्मागर्मी पैदा हो जाती थी। ऐसी बहस अक्सर छिड़ जाती थी क्योंकि बाप-बेटे दोनों ही अपने-अपने सिद्धान्तों के आदमी थे और अक़्लमन्दी की बातें ही पसन्द करते थे। जिस तरह शपथें ले-लेकर मिस्टर नेज़बी 'चर्च ऑफ़ इँगलैंड' की हिमायत लेते थे और थोड़ी-सी पोर्टवाइन ( शराब ) पीकर संयम और संन्यास के आदर्शों की प्रशंसा करते थे, यह एक देखने की बात थी। डिक अक्सर झुँझला पड़ता था; क्योंकि उसके पिता तर्क करने में इतने कुशल थे कि प्रायः उसी की बात ग़लत प्रमाणित हो जाती थी। किन्तु ऐसे ही अवसर पड़ने पर डिक अपनी दुगनी शक्ति दिखाता था—यानी काले को सफ़ेद और पीले को नीला भी बड़े दावे के साथ और तेज़ होकर कह देता था लेकिन दूसरे दिन सबेरा होते ही उसे अपनी यह भूल प्रतीत होती और वह पिता के पास जाकर क्षमा-याचना कर लेता था—'[illegible] रात की ग़लती के लिए मैं माफ़ी..."

"बेशक, माफ़ी तो तुम्हें माँगनी ही चाहिए।" [illegible] नेज़बी कहते—"तुम बिलकुल बेवक़ूफ़ की तरह बात करते हो। [illegible] अब जाने दो। कोई बात नहीं।"

"आप समझे नहीं। मैं एक ख़ास बात के लिए [illegible] मानता हूँ कि आपकी इस बहस में कि 'हाँ' तो सब [illegible] नहीं भी'—बहुत जान है।"

कुछ दिनों बाद मिस्टर पीटर ने कहा कि मैं आस्ट्रेलिया जाना चाहता हूँ। डिक ने उन्हें एक पौंड दे दिया और बड़े दुःख के साथ बिदाई ली। लेकिन आठ-दस दिन बाद मिस्टर पीटर उन्हें फिर दिखाई दे गये और उन्हें न तो कोई आश्चर्य ही हुआ और न कोई क्षोभ ही। उन्होंने पीटर को फिर एक पौंड दे दिया और दुखी होकर बिदा ली, परन्तु फिर दो-एक दिन वे उन्हें सड़क पर टहलते नज़र पड़ गये। मतलब यह कि ऐसे ही मिस्टर नेज़बी उन्हें हर बार आस्ट्रेलिया जाने के लिए एक पौंड दे देते थे और मिस्टर पीटर हर बार किसी न किसी कारण-वश आस्ट्रेलिया नहीं जा पाते थे और बिना किसी हिचक के उनसे मिल लेते थे और हर बार बिदाई के वे हृदयविदारक दृश्य वास्तव में देखने योग्य होते थे।

इसी बीच में डिक ने अपने इन नये मित्र के विषय में इधर-उधर से बहुत कुछ जान लिया। उनके जहाज़, चार घोड़ों की गाड़ी, विदेश में उनकी प्रसिद्धि, उनकी लड़की जिसके विषय में दबी ज़बान से वे अजीब-अजीब बातें कहते थे और जैसे-जैसे वे और नई-नई बातें सुनते जाते थे, उनके दिल में मिस्टर पीटर वॉन ट्रॉम्प के लिए कुछ चिंता—कुछ स्नेह-सा पैदा होता जाता था। जब मिस्टर नेज़बी पेरिस से जाने लगे, तब उन्होंने अपनी बिदाई के समय जो दावत दी, उसमें वॉन ट्रॉम्प को भी बुलाया और उनकी खूब ख़ातिर की और जब वे बिदा होने लगे तब बेचारा बूढ़ा मेज़ के नीचे पड़ा रो रहा था।

——

## २

## सम्पादक के नाम

मिस्टर नेज़बी डिक उच्च मध्य-वर्ग के थे, इसलिए उनमें वही तेज़ी और अक्खड़पन था, जो इस वर्ग का स्वभाव है। उनके लिए संसार में कोई उलझन नहीं थी। 'यह ठीक है,' या 'यह ग़लत है,' बस वे यही कहते थे। छोटी-छोटी बातों में भी उनकी सूझ ग़ज़ब की ठीक होती

थी। जो बात उन्हें बुरी लगती थी, वही अगर आपको भी बुरी न लगे, तो वे इसे आपकी हठधर्मी समझते थे और बस फ़ौरन उनके दिमाग़ का पारा चढ़ जाता था। इसके सिवाय वे इतने तेज़ और खुले दिल के थे कि इँगलैंड में कम ही आदमी वैसे होंगे। मुख पर गंभीरता थी और सिर पर सफ़ेद बाल। लोमड़ी के पुराने शिकारी थे।

वे अपने लड़के डिक को बहुत मानते थे और डिक भी अपने बाप की बहुत इज़्ज़त करता था। अपने जवान लड़के को स्वतन्त्र होने के लिए विद्रोह करते देखकर वे कभी-कभी क्षुब्ध हो उठते थे। जब कभी बाप-बेटों में बहस छिड़ जाती, तो फिर उसमें बहुत गर्मागर्मी पैदा हो जाती थी। ऐसी बहस अक्सर छिड़ जाती थी क्योंकि बाप-बेटे दोनों ही अपने-अपने सिद्धान्तों के आदमी थे और अक़्लमन्दी की बातें ही पसन्द करते थे। जिस तरह शपथें ले-लेकर मिस्टर नेज़बी 'चर्च ऑफ़ इँगलैंड' की हिमायत लेते थे और थोड़ी-सी पोर्टवाइन ( शराब ) पीकर संयम और संन्यास के आदर्शों की प्रशंसा करते थे, यह एक देखने की बात थी। डिक अक्सर झुँझला पड़ता था; क्योंकि उसके पिता तर्क करने में इतने कुशल थे कि प्रायः उसी की बात ग़लत प्रमाणित हो जाती थी। किन्तु ऐसे ही अवसर पड़ने पर डिक अपनी दुगनी शक्ति दिखाता था—यानी काले को सफ़ेद और पीले को नीला भी बड़े दावे के साथ और तेज़ होकर कह देता था लेकिन दूसरे दिन सबेरा होते ही उसे अपनी यह भूल प्रतीत होती और वह पिता के पास जाकर क्षमा-याचना कर लेता था—"अपनी रात की ग़लती के लिए मैं माफ़ी..."

"बेशक, माफ़ी तो तुम्हें माँगनी ही चाहिए।" ख़ुश होकर मिस्टर नेज़बी कहते—"तुम बिलकुल बेवक़ूफ़ की तरह बात करते हो। ख़ैर, अब जाने दो। कोई बात नहीं।"

"आप समझे नहीं। मैं एक ख़ास बात के लिए कह रहा था—मैं मानता हूँ कि आपकी इस बहस में कि 'हाँ तो सब कुछ सरल है, और नहीं भी'—बहुत जान है।"

"और नहीं तो क्या ?" पिता ने उत्तर दिया—"तुम मुझे लौंडा समझते हो ! मुझ जैसे आदमी का अनुभव और उम्र एक कल के छोकरे से ज़्यादा जानती और समझती है।"

उन्होंने 'छोकरा' शब्द ऐसी बुरी तरह से कहा कि डिक के दिल में बात चुभकर रह गई और उसने सोचा कि मैं ही तो इस तरह से माफ़ी भी माँग लेता हूँ, वरना और कौन माँगता। इस विचार से उसे बहुत अभिमान हुआ और इसके फल-स्वरूप उसका चलन भी अधिक अच्छा हो गया ; क्योंकि डिक बहुत संकोचशील था और समझदार भी और न्याय-संगत विनय और अभ्यर्थना से उसे बहुत गर्व होता था।

इसी प्रकार पिता-पुत्र का परस्पर व्यवहार चला जाता था कि वह स्मरणीय अवसर आ पहुँचा जब मिस्टर नेज़बी ने अपनी पार्टी के एक व्यक्ति को पार्लियामेंट के चुनाव में जिताने के लिए कई समाचारपत्रों में एक गरमागरम पत्र लिखा, जिसमें इस प्रकार की दलबंदी की सभी बुराइयाँ थीं। यह पत्र आत्मविश्वास की शक्ति से लिखा गया था, और व्यक्तिगत था, जिसका आधा भाग अनुचित था और एक चौथाई असत्य। लेकिन आप विश्वास रक्खें कि वृद्ध सज्जन ने वह झूठ जान-बूझकर नहीं लिखा था, पर जल्दबाज़ी में इधर-उधर की ग़प्पें सुन-सुनाकर ही लिख दिया था।

अपना पत्र समाप्त करते हुए उन्होंने लिखा था—"उदार दल का कैंडीडेट, इस प्रकार, एक बना हुआ आदमी है। क्या ऐसे ही आदमी को हम चाहते हैं ? उसे बहकाया गया है और वह उस अपमान को अब पी गया। क्या ऐसे ही आदमी को हम चुनना चाहते हैं ? मैं कहता हूँ नहीं—अपने समस्त विश्वास के साथ कहता हूँ नहीं, नहीं !"

इसके नीचे उन्होंने उसके नीचे बहुत बनाकर दस्तख़त कर दिये जैसे कि नये-नये दस्तख़्त करनेवाले किया करते हैं। और पत्र भेजने के बाद उन्होंने आशा की कि कल सुबह ही मैं सारी दुनिया में प्रसिद्ध हो जाऊँगा।

डिक को इस अशुभ दिन का कोई आभास नहीं था। रोज़ की तरह ही वह अपना अख़बार उठाकर बाग़ में पढ़ने चला गया। उस अख़बार

के एक कॉलम में उसने अपने पिता का 'पत्र' प्रकाशित देखा और दूसरे में प्रमुख लेख, जिसमें लिखा था—

"हमारे विचार से तो किसी ने मिस्टर नेज़बी से इस मामले में परामर्श नहीं किया है, किंतु यदि सभी वोटरों ने मिलकर भी उनसे प्रार्थना की होती, तब भी उनका यह पत्र मिस्टर डाल्टन के साथ अन्याय है, असभ्यता है। मिस्टर नेज़बी के असत्य को हम प्रकट करना नहीं चाहते; क्योंकि हम जानते हैं कि उसका क्या प्रभाव जनता पर पड़ेगा और फलस्वरूप मिस्टर नेज़बी पर भी; किन्तु हम इस मामले के वे सभी तथ्य, जिनकी इस पत्र में चर्चा है, जनता पर प्रकट कर देना चाहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मिस्टर नेज़बी हमारे पड़ोस में एक सम्पन्न व्यक्ति हैं; लेकिन सच बोलना, सद्भावनाएँ रखना, और उचित भाषा का प्रयोग करना ऐसे गुण हैं जिनका मूल्य जायदाद से भी अधिक है। मिस्टर ने...महान् व्यक्ति हैं, निस्संदेह; अपने बड़े बाग़ और उस महल में जहाँ उन्होंने ऐसी बुद्धि और स्वभाव पाया है, वहाँ वे अपने नौकरों और किराये के टट्टुओं से चाहे जो कुछ कहें, लेकिन यहाँ आपकी एक नहीं चल सकती, क्योंकि उदार दल स्वतंत्रता और सचाई की नींव पर खड़ा हुआ है।"

रिचार्ड नेज़बी ने सारा लेख आद्योपान्त पढ़ डाला और शर्म से उसका सिर नीचा हो गया। उसके पिता ने मूर्खता की थी। बहुत शान बघारकर वे लड़ने चले थे और अपना-सा मुँह लेकर लौट आये, जब उनकी दुंदुभि बजनेवाली थी, तभी वे अपमानित करके अपने पद से च्युत कर दिये गये। तथ्य-अतथ्य सच-झूठ का कोई प्रश्न ही नहीं था; सभी एक तरफ़ से उनके विरुद्ध थे। हो सकता था कि अगर रिचार्ड को मालूम पड़ जाता तो वह इस मामले को दबा देता, परन्तु अब बात बिगड़ ही चुकी थी। इसलिए और कुछ तो हो नहीं सकता था, वह घोड़े पर चढ़कर और एक मोटा डंडा अपने हाथ में लेकर थाइमबरी की ओर चला।

एक बड़े सुनसान-से कमरे में बैठा हुआ सम्पादक नाश्ता कर रहा था। कमरे में कोई फ़र्नीचर नहीं था, और जो नाश्ता कर रहा था वह

बहुत ख़राब था। सम्पादक की आँखें तपेदिक़ के रोगी की आँखों की तरह चमक रही थीं। यह सब देखकर डिक अपने आपे में नहीं रहा और डंडा मज़बूती से पकड़कर वह लड़ने पर उतारू हो गया—

"वह लेख तुमने लिखा था?" उसने कड़ककर पूछा।

"आप मिस्टर नेज़बी के लड़के हैं न? हाँ, मैंने वह लेख छापा ज़रूर था।"—सम्पादक ने उठते हुए कहा।

"पापा बूढ़े होने आये," रिचार्ड ने उत्तर दिया, किंतु फिर एका-एक तीखेपन से कहा—"लेकिन तुमसे और डाल्टन से, दोनों से ही देखने में अच्छे हैं।"

इतना कहकर वह फिर चुप हो गया, जैसे घूँट पी रहा हो और सब काम ढंग से करना चाहता हो।

"मुझे जनाब से सिर्फ़ एक बात पूछनी है।" डिक ने कहा—"माना कि पापा को किसी ने बहका दिया था और तुम इस बात को समझते थे, तो क्या तुम इस पत्र को रोक नहीं सकते थे और पापा से चुपचाप अलग से कहलाकर समझा देते?"

"लेकिन सच जानिए, मैं ऐसा नहीं कर सकता था,"—सम्पादक ने उत्तर दिया; "क्योंकि मिस्टर नेज़बी ने जो चिट्ठी इसके साथ अलग से भेजी थी, उसमें मुझे धमकी दी थी कि अगर तुम इस पत्र को नहीं छापोगे तो कोई बात नहीं, मैं इसे तीन-चार अख़बारों में भेज रहा हूँ, और फिर तुम्हारा नाम भी लिख भेजूँगा कि इन्होंने छापने से इंकार किया। अब जो भी हो गया, उसका मुझे बहुत दुःख है, लेकिन फिर भी मैं यही कहूँगा कि मिस्टर डाल्टन पर बहुत ही अनुचित आक्रमण किया गया था और मुझे उनको संतुष्ट करने और न्याय करने के लिए अपने अख़बार में उनके लेख को जगह देनी ही पड़ी और सचमुच उन्होंने भी आपके पापा के साथ अन्याय किया है। उन पर अनुचित प्रहार किया है।"

इस उत्तर को हृदयङ्गम करने के लिए रिचार्ड आधे मिनिट तक चुप खड़ा रहा और फिर उसे ठीक समझ आ गई।

"गुड मार्निंग" धीरे से कहकर वह लौट आया। लौटकर जब वह घर पहुँचा, तो नाश्ते के लिए देर हो गई थी। मिस्टर नेज़बी अँगीठी की तरफ़ पीठ किये और अपनी उँगलियाँ कोट के काज-बटनों में उलझाये बड़ी उद्विग्नावस्था में खड़े थे। कमरे में रिचार्ड के घुसते ही उनका मुँह खुला और बंद हुआ और आँखें बाहर निकली-सी पड़ती थीं।

अख़बार की ओर इशारा करते हुए वे चीख़कर बोले—"देखा यह तुमने ?"

"हाँ।" रिचार्ड ने उत्तर दिया।

"और तुमने पढ़ा भी ?"

"हाँ, पढ़ा।" रिचार्ड ने पलकें नीचे करके अपने पैरों की तरफ़ देखते हुए कहा।

"तो फिर क्या राय है तुम्हारी ?"—वृद्ध सज्जन ने पूछा।

"मालूम होता है आपको किसी ने बहका दिया।" डिक ने उत्तर दिया।

"अच्छा ! तब फिर ? तुम्हारे दिमाग़ में गोबर भरा है क्या ? कोई बात सुझा नहीं सकते ? ठीक-ठीक कोई राय नहीं दे सकते ?"

"पापा, माफ़ कीजिएगा—मैं तो सोचेता हूँ कि आपको मिस्टर डाल्टन से माफ़ी माँग लेनी चाहिए। यही बहुत अच्छा रहेगा—बहुत ठीक और साफ़-साफ़ खुले दिल से अपनी ग़लती मान लेने से—" कहते-कहते रिचार्ड रुक गया। उसकी समझ में उपयुक्त शब्द नहीं आये।

"यह बात तो मैं कहता, तब ठीक होती।" पिता ने गरजकर कहा—"तुम छोटे मुँह बड़ी बात कैसे कहते हो ? सआदतमंद बेटे को इस तरह कभी नहीं कहना चाहिए। अजी हज़रत, अगर मेरे बाप के साथ ऐसी मुश्किल का मामला होता, तो मैं उस एडीटर के बच्चे की कुचल-कुचलकर जान निकाल लेता। हज़रत, मैं उसकी वह मरम्मत करता कि वह भी याद रखता ! हो सकता था कि यह गधेपन का काम होता, लेकिन इससे यह तो ज़ाहिर हो जाता था कि मैं अपने बाप का सच्चा बेटा हूँ। बेटा। तुम मेरे बेटे नहीं हो, नहीं हो सकते। कभी नहीं हो सकते।"

"पापा !"

"तुम क्या हो, बताऊँ ! तुम हो हरामी ! मैं तुम्हें अपना बेटा नहीं मानता। तुम्हारी माँ होती तो शर्म के मारे मर जाती ; तब तो उसके बारे में कोई भी बदनामी नहीं थी। पर वह सोचती थी कि—उसने ख़ुद मुझसे कहा था, हज़रत—ख़ैर जाने दो, अच्छा है, वह मर गई ! बहका दिया है ! बहका दिया है ! तुममें कुछ भी शर्म-हया बाक़ी है या नहीं ? कुछ भी अक़्ल है ! कि जिसने जिधर चाहा उधर नकेल घुमा दी ! जा—काला मुँह कर ! निकल जा मेरे घर से ( हाथ से इशारा करते हुए ) जा चल—निकल, काला मुँह कर हरामी !"

यह सुनकर डिक की नसों में ख़ून उबलने लगा। उसकी रग-रग भिन्ना उठी। ऐसी दशा हो गई कि न अब उसे कुछ सुनाई देता था, और न वह कुछ बोल ही सकता था।

इसी मानसिक उद्वेलन में उसके दिल में यह बात समा गई कि मेरे साथ बहुत अन्याय हुआ है, और वह अक्षम्य है !

—

## ३

## एडमिरल की लड़की

बाप-बेटे में बहस फिर नहीं छिड़ी। उसके बाद से फिर डिक और उसके पिता परस्पर उदासीन हो गये। मिस्टर नेज़बी के दिल में नाराज़ी बराबर घर किये थी और वे अपने बेटे से बड़े खिंचे-खिंचे से रहते थे। जब डिक से उसकी तबियत का हाल पूछते, या मौसम और फ़सल के विषय में बातचीत करते, तो अत्यंत शिष्टाचार के साथ—'तुम' से 'आप' कहने लगे थे, स्वर में एक परायापन सा आ गया था और उससे उनका क्रोध साफ़ प्रतिध्वनित होता था।

उधर डिक को ऐसा मालूम होता था कि मेरा जीवन एकाएक समाप्त हो गया है। उसकी सारी विचार-धारा और कल्पनाएँ नष्ट हो

चुकी थीं और उसके अंदर की अधपकी दुनियादारी, जिसका उसे बहुत गर्व था, जैसे उस दुःख के सम्मुख कुंठित हो गई थी। दिन-रात उसके हृदय में उसके स्वाभिमान, अपमानित सम्मान, सहानुभूति और श्रद्धा का संघर्ष होता रहता था। कभी वह अपने पिता के पैरों पड़कर क्षमा-याचना करने की बात सोचता, तो कभी सदैव के लिए घर छोड़कर निकल जाने की। लेकिन अब तो उसे अपने पापा की सूरत से चिढ़ हो गई थी। और अपने बाग़ और घर के कोने-कोने को देखकर, जो उसके बचपन की मधुर स्मृतियों से ओत-प्रोत थे, उसका मन दुखी हो उठता था। अगर वह यहाँ से भागकर कहीं परदेस चला जाय, तो क्या उसका दुःख दूर हो सकेगा? कौन जाने? और फिर नये सिरे से जीवन शुरू हो सकेगा भी कि नहीं? पहाड़ियों की उस ऊँची चोटी पर से, जो, बादलों में से छनती हुई सूर्य की प्रखर किरणों में सिर उठाये खड़ी थी, हो सकता है कि चरवाहा स्वच्छ मौसम में किसी दिन समुद्र देख सके—यही आशा थी डिक की। लेकिन फिर अपने पापा की सूरत देखते ही उसकी आशा छिन्न होने लगती थी और वह निकल नहीं पाता था। उसका भाग्य जल अथवा थल यात्री का-सा नहीं था। उसे तो हवा में यात्रा करनी थी और उसने अपनी यात्रा अनुमानित समय से शीघ्र ही आरम्भ भी कर दी।

क्योंकि एक दिन ऐसा हुआ कि वह टहलते-टहलते पठार के उस भाग में पहुँच गया, जिससे वह परिचित नहीं था। ऊँचे-नीचे जंगली पेड़ों में उलझता हुआ वह बाहर खुले मैदान में आ पहुँचा, जहाँ एक दलदल सामने पहाड़ी तक फैली हुई थी। पास ही एक ढाल पर स्कॉट फ़र के पेड़ उठे हुए थे और वहीं एक कोने से एक फ़व्वारा फूट रहा था, जिससे ऊपर एक छोटी-सी सरिता बन गई थी, जो लहराती हुई झाड़ियों में बहती चली गई थी।

अभी कुछ देर पहले ही कुछ बूँदें पड़ चुकी थीं। किंतु अब धूप तेज़ खिली हुई थी और वायु में चीड़ तथा दूब की भीनी-भीनी गंध महक रही थी। समीप के वृक्षों के नीचे एक शिला पर एक युवती बैठी

चित्र खींच रही थी। हम लोगों का यह स्वभाव हो गया है कि जब हम नारी का ध्यान करते हैं, तब वह वस्त्राभरण से ढकी हुई हमारी कल्पना में आती है और अपनी पत्नी की कल्पना विशेष रूप से पेटीकोट के ही रूप में करते हैं। किंतु मानवता ने वस्त्रों पर विजय प्राप्त कर ली है—वस्त्र का दर्शन और स्पर्श मात्र हमारे लिए सजीव हो उठता है। किंतु इस युवती के शरीर पर वस्त्र ऐसे चुस्त थे कि उसके प्रत्येक अंग की रूप-रेखा उभरकर स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। इन वस्त्रों का एक छोर ही डिक को दिख गया और क्षण भर में ही वह उसके मन में समा गया और उसके सब विचार उड़ गये। वह युवती के समीप पहुँचा। युवती ने मुड़कर देखा। उसका मुख देखकर डिक चौंक पड़ा—यही तो मुख था, जिसकी उसे चाह थी! उसने एक गहरी साँस खींची।

"ज़रा क्षमा करना," डिक ने अपना हैट उतारते हुए कहा—"तुम चित्र बना रही हो?"

"ओह!" वह बोली—"अपना मन बहला रही हूँ। मुझे तो अच्छा नहीं लगता यह!"

"तब तो तुम अपने साथ अन्याय कर रही हो।" डिक ने कहा—"और आजकल दस में से नौ लड़कियाँ ऐसा ही करती हैं! और फिर यह तो ऐसा काम है, जो सब कोई कर सकता है। मैं भी चित्रकारी जानता हूँ और जानती हो इसका क्या मतलब है?"

"नहीं तो, क्या?" उसने पूछा।

"दो बातें" उसने उत्तर दिया—"पहली तो यह कि मैं कोई बहुत बड़ा आलोचक नहीं हूँ और दूसरे यह कि मुझे तुम्हारी तस्वीर देखने का अधिकार है!"

इस पर उसने अपनी तस्वीर दोनों हाथों से उठा ली और बोली—"नहीं, नहीं—मुझे शर्म लगती है।"

"शर्माने की कौन सी बात है? देखो, मैं शायद तुम्हें कुछ मदद ही दे दूँ।" डिक ने उत्तर दिया—"यद्यपि मैं ख़ुद कोई चित्रकार

नहीं हूँ, लेकिन पेरिस में मैं बड़े-बड़े चित्रकारों को जानता था, कई मेरे दोस्त थे ; दिन-रात उनकी चित्र-शालाओं में आया-जाया करता था।"

"पेरिस में ?" वह एकाएक चीख़कर बोली और उसकी आँखें चमक पड़ीं--"क्या वॉन ट्रॉम्प से भी भेंट तुम्हारी हुई ?"

"मेरी ? हाँ, हाँ, क्यों नहीं; क्या तुम एडमिरल की लड़की तो नहीं हो ?"

"एडमिरल ? क्या उन्हें लोग वहाँ एडमिरल कहते हैं ?"

"हाँ !" डिक ने कुछ भारीपन से कहा।

"अब तुम समझ सकते हो कि मैं तुम्हें क्यों अपनी यह तस्वीर नहीं दिखाना चाहती।" उसने कहा। उसके स्वर में सन्तुष्ट और शालीन मन का गर्व बोलता था। "वॉन ट्रॉम्प की लड़की ! एडमिरल की लड़की ! मुझे इस नाम से ख़ुशी होती है। एडमिरल ! तो तुम मेरे पापा को जानते हो ?"

"हाँ," डिक ने उत्तर दिया--"मैं उनसे अक्सर मिला करता था। शायद उन्होंने तुम्हें मेरा नाम बतलाया हो--नेज़बी !"

"वे चिट्ठी तो लिखते ही नहीं--बहुत व्यस्त रहते हैं अपनी कला की उपासना में !" उसने हँसकर कहा—"मैं सोचती हूँ कभी-कभी कि अच्छा होता अगर पापा मामूली आदमी होते, जिनकी मैं कुछ सेवा कर सकती, जिनके लिए मैं अभिमान करने की एक चीज़ बन सकती। लेकिन ऐसी इच्छा कभी भूले-भटके ही होती है। वे महान् चित्रकार हैं। तुमने उनके चित्र देखे हैं ?"

"हाँ, मैंने कुछ देखे तो हैं"। डिक ने उत्तर दिया—"वे—वे बहुत बढ़िया हैं !"

यह सुनकर वह ज़ोर से हँस पड़ी—"बढ़िया ?" उसने मेरी बात दोहराई। "तो शायद तुम कला जानते नहीं !"

"बेशक ! बहुत तो नहीं जानता।" डिक ने स्वीकार किया। "पर मैं यह ज़रूर जानता हूँ कि बहुत से लोग बड़ी ख़ुशी से मिस्टर वॉन ट्रॉम्प की तस्वीरें ख़रीदते हैं।"

"वॉन ट्रॉम्प नहीं, एडमिरल कहो।" वह ज़ोर से बोल पड़ी—"यह नाम अच्छा और अपना-सा लगता है और मुझे यह सोचकर बहुत ख़ुशी होती है कि नये-नये चित्रकार उनकी तारीफ़ करते हैं और उनका आदर करते हैं। वैसे उनकी तारीफ़ हमेशा नहीं हुई; बहुत सालों तक तो उन्हें बड़ी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी हैं और जब मैं इसका ध्यान करती हूँ" कहते-कहते उसका गला भर आया—"हाँ, इसका ध्यान करती हूँ तो बड़ी बेवक़ूफ़ी सी लगती है मुझे।" और वह रो पड़ी—"और अब मैं घर जाऊँगी। तुमने मुझे बड़ी ख़ुशी से भर दिया है आज—सोचो तो मिस्टर नेज़बी, मैंने पापा को तब से नहीं देखा है जब मैं छः बरस की थी, और फिर भी मुझे हर दम उनका ख़याल रहता है। तुम मेरे घर आओ न! अच्छा ज़रूर-ज़रूर। बुआ ज़रूर ख़ुश होंगी। वहीं तुम मुझे पापा के बारे में सब बातें बतलाना। बतलाओगे न?"

यह कहकर वह उठ बैठी और अपनी चित्रकारी का सामान उठाने लगी। डिक ने भी मदद की। जब चलने लगी तो उसने डिक को अपना हाथ पकड़ा दिया और बदले में उसका हाथ दबा दिया।

"तुम मेरे पापा के दोस्त हो।" वह बोली—"हम लोगों को भी गहरी दोस्ती करनी चाहिए। तुम मुझसे जल्दी ही मिलने आना, अच्छा!"

यह कहकर वह पहाड़ी के ढलाव पर से दौड़कर नीचे उतर गई। डिक ताज्जुब में देखता खड़ा रह गया और कुछ परेशान-सा भी हो गया। उसकी हँसी रह-रहकर उसके मन में गूँजने लगी, लेकिन उसकी वह काली पोशाक और उसमें चमचमाता चाँद-सा मुखड़ा और उसके कोमल करों का वह सुकुमार स्पर्श—उफ़! ये सब बातें उसे याद आने लगीं, और उसका हृदय व्यथित करने लगीं। "पर अब ऐसी परिस्थिति में करूँ क्या?—लड़की से बचकर रहूँ?—ख़ैर, यह सोचूँगा। पर क्या सब सच-सच कह दूँ? लेकिन अगर सिर्फ़ दस प्रतिशत ही उसका आकर्षण हुआ हो अभी, तब तो मुझे सफलता मिलने से रही। पर, क्यों न अभी उसे भ्रम में रक्खूँ और उससे बातें बनाऊँ—उसके मन में तरह-तरह के भ्रम पैदा होने

दूँ और झूठ प्रकट भी न करूँ ? ख़ैर, देखा जायगा; हो सका तो उससे अलग रहने की कोशिश करूँगा।"

और यह अलग रहने की कोशिश ऐसी हुई कि दूसरे ही दिन वह तीसरे पहर उसके घर की राह पर था।

उधर लड़की तितली-सी उड़ती सीधी घर पहुँची थी। ख़ुशी के मारे वह फूली नहीं समाती थी। उसका घर एक छोटा-सा कुटीर था, जिसमें वह अपनी बुआ के साथ रहती थी। उसकी बुआ साठ बरस की स्काट नारी थी, किंतु अभी तक कुमारी ही। जाते ही उसने बुआ को नई ख़बर सुनाई और यह भी कि मैं उन्हें निमंत्रण दे आई हूँ।

"उसका दोस्त ?" बुआ ने पूछा—"कैसा है वह ? वह अपना नाम क्या बतलाता था ?"

यह प्रश्न सुनकर वह मृत की तरह चुप हो रही और बुआ की तरफ़ टकटकी लगाकर देखने लगी। तब बड़े धीमे स्वर में बोली—"अरे, मैंने कहा न कि वे पापा के दोस्त हैं। मैं उन्हें घर आने को कह आई हूँ और वे आयेंगे ज़रूर।"

यह कहकर वह अपने कमरे में चली गई और चुप बैठकर दीवार की ओर ताकने लगी।

मिस म ग्लाशन—यही उसकी बुआ का नाम था—त्याग और बलिदान की भावनाओं से विभोर होकर रसोई में बैठी बाइबिल पढ़ रही थीं।

तीसरे पहर के लगभग साढ़े तीन बजे होंगे, जब ख़ूब सज-धज के साथ डिक साहब उसकी कुटी के द्वार पर पहुँचे। वहाँ जाकर किवाड़े खट-खटाये, और अन्दर से एक आवाज़ ने उन्हें घर में चले आने की अनुमति दी। रसोई का दरवाज़ा घर की बग़िया में खुलता था और इसी लिए किसी क़दर हरियाली से अँधेरा हो गया था, लेकिन वहाँ से आती हुई लड़की उसे दिखाई पड़ गई। उसकी गहरी काली भौंहों से यह स्पष्ट था कि अगर यह एक बार बिगड़ जाय, तब फिर इसको शान्त करना कठिन होगा। उसका मुँह छोटा था, जो निर्बलता और स्नायु-दुबलता का

सूचक था। उसके स्नेहमय, सच्चे और पवित्र स्वभाव के पीछे पर्दे में कुछ चिड़चिड़ापन-सा मालूम होता था।

"मेरे पापा के दोस्त हो, इसलिए तुम्हारा बहुत-बहुत स्वागत है।" उसने कहा और जैसे शिष्टता-वश अपना हाथ उसे पकड़ा दिया। यह अभिवादन बहुत सुंदर था। डिक को लगने लगा कि मैं स्वर्ग में हूँ। रसोई में होकर वह उसे बैठक में ले गई जहाँ मिस म ग्लाशन से उसका परिचय कराया।

"ईस्थर," बुआ ने कहा—"जा, मिस्टर नेज़बी के लिए चाय तैयार कर ला।"

लड़की चाय बनाने चली गई और उसके कमरे से जाते ही वह बूढ़ी डिक के पास आ खड़ी हुई। इस समय उसकी मुद्रा से कुछ नीचता सी टपक रही थी।

"तुम उस आदमी को जानते हो?" उसने फुसफुसाकर किंतु तेज़ी के साथ पूछा।

"किसे, मिस्टर वॉन ट्रॉम्प को?" डिक ने कहा—"हाँ, मैं उन्हें जानता हूँ।"

"अच्छा, तो तुम यहाँ क्यों आये?" उसने कहा—"मैं उसकी माँ की जान नहीं बचा सकी। वह मर गई और छोड़ गई यह बच्ची।"

उसके स्वर में कुछ ऐसी ध्वनि थी कि डिक के दिल में चुभ गई और वह क्षुब्ध हो उठा।

वह अपनी बात कहे चली गई—"अब तुम क्या चाहते हो? रुपया?"

"आप मुझे कुछ ग़लत समझ रही हैं।" डिक ने समझाकर कहा—"नेज़बी घराने का मैं छोटा लड़का हूँ—मिस्टर नेज़बी। मिस्टर वॉन ट्रॉम्प से मेरा परिचय सचमुच बहुत थोड़ा है और शायद मिस वॉन ट्रॉम्प हम लोगों की दोस्ती ज़रूरत से गहरी समझ बैठी हैं। मुझे उनकी निजी बातें बिलकुल नहीं मालूम, और न मैं जानना ही चाहता हूँ। मैं उनसे पेरिस में कभी-कभी मिल लेता था—बस।"

मिस मॅग्लाशन ने एक लम्बी साँस खींची—"पेरिस में!" उसने पूछा—"और तुम उसके बारे में क्या सोचते हो?—क्या सोचते हो तुम उसके बारे में?" उसने कुछ दूसरी तरह से कहा; क्योंकि रिचार्ड को इस मामले में कोई ख़ास दिलचस्पी थी नहीं, इसलिए वह जवाब में कुछ देर तक चुप रहा।

"मुझे तो वे बड़े मिलनसार आदमी मालूम हुए।" उसने उत्तर दिया।

"हाँ," वह बोली—"यह बात! और वह रोटी कैसे पैदा करता है?"

"मैं समझता हूँ कि मिस्टर वॉन ट्रॉम्प के बहुत से भले दोस्त हैं—" डिक ने ऊबकर कहा।

"मुझे देखना है फिर!" वह नाक चढ़ाकर बोली और डिक कुछ और कहे, कि वह कमरे से चली गई।

ईस्थर चाय लेकर लौटी और बैठ गई।

"अब मुझे पापा की सब बातें बतलाओ।" उसने इतमीनान के साथ कहा।

"वह...वे" डिक हिचकिचाया—"वे बड़े भले और मिलनसार आदमी हैं।"

"तब मैं सोचने लगूँगी कि वे आपसे भी ज़्यादा भले हैं, मिस्टर नेज़बी!" उसने हँसकर कहा—"मैं उनकी लड़की हूँ, तुम यह भूल जाते हो। शुरू से शुरू करके मुझे सब बातें बतलाओ कि तुमसे उनको क्या-क्या बातें हुईं, तुमने उनसे क्या पूछा, उन्होंने क्या पूछा, और क्या जवाब दिये उन्होंने और क्या जवाब दिये तुमने। तुम पहली बार तो उनसे कहीं न कहीं मिले ही होगे—बस वहीं से सुनाना शुरू कर दो।" और मिस्टर डिक ने उसकी आज्ञा का पालन किया। उसने उसे बतलाना शुरू किया—"एडमिरल एक कैफ़े में बैठे तस्वीर बना रहे थे। मैं भी इत्तफ़ाक़ से वहाँ जा पहुँचा। उनकी तस्वीर मुझे बहुत अच्छी मालूम हुई। मैंने पास जाकर देखा—और मेरे पूछने पर उन्होंने बतलाया कि मैं दो मुर्ग़ियों को दाना चुगने और एक मुर्ग़ी को बाँग देते हुए दिखाना

चाहता हूँ—लेकिन मैं इन छोटी-छोटी चीज़ों की परवा नहीं करता—मेरी चित्रशाला में एक ग्रीक दृश्य की तस्वीर बनी रहती है और उसमें बहुत सी ख़ूबियाँ हैं। लेकिन उनकी न तो यह तस्वीर किसी ने कभी देखी, और न किसी को यह पता था कि इनकी चित्रशाला है कहाँ, जिसमें ऐसी बढ़िया तस्वीर छिपी रक्खी है। लेकिन ऐसा क्यों है, पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया था कि अपनी कला के मामले में एडमिरल, माइकेल ऐंजिलो और सभी बड़े-बड़े कलाकार कुछ शर्मीले होते हैं अपनी चीज़ें दिखाना पसंद नहीं करते या दिखाने में शर्माते हैं। मेरा और उनका परिचय तो एकाएक हो गया और फिर उस रात को हम लोगों ने साथ-साथ खाना खाया!...एक बार एडमिरल ने एक भिखारी को भीख दे डाली और एक बार तुम्हारी भी बहुत तारीफ़ कर रहे थे कि मेरी छोटी लड़की ऐसी है, वैसी है और हाँ एक बार तुम्हें गुड़िया भेजने के लिए उन्होंने रुपया तक उधार लिया था। न्यूटन ने भी एक बार ऐसा किया था और अगर वह गुड़िया तुम्हें कभी मिली नहीं—शायद नहीं मिली—तो यह तो ऐसी बात है जो विरले ही असाधारण प्रतिभावाले लोगों का चिह्न है। और एडमिरल देखने में, नहीं, सुंदर तो नहीं हैं—हाँ, लेकिन हैं ख़ूब—कुछ मालूम ज़रूर पड़ते हैं।"

यह आश्चर्य की बात थी कि इस सब में कितना कम भूठ बोलने की ज़रूरत पड़ी और प्रयोजित प्रभाव भी पड़ गया। और फिर दुनिया में लोग व्यर्थ ही जीवन की कठिनाइयों को बढ़ा बढ़ाकर कहने के आदी हो गये हैं। ज़रा इधर से उधर घुमाने-फिराने और सँभालने की बात है और कोई तबियत से सुननेवाला हो, तब तो बातें किसी भी सीमा तक बनाई जा सकती हैं।

बातचीत के सिलसिले में कभी-कभी मंग्लाशन कमरे में आ टपकती थीं, तब तो जैसे तुषारपात हो जाता था और डिक का कार्य और भी दुस्तर हो उठता था। किंतु ईस्थर तो बस देख रही थी और सुन रही थी—इस समय उसके अस्तित्व में जैसे आँखों और कानों के सिवाय और

कुछ था ही नहीं। मग्नचित्त बैठी सुन रही थी वह। उसके लिए डिक की भाषा में अपूर्व प्रवाह था और उसका मस्तिष्क अत्यन्त उर्वर और—

यह संध्या कितनी सुंदर थी ईस्थर के लिए। अंत में वह बोली—'यह सब जानकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। बुआ तो, तुम जानते नहीं, बड़ी ओछी और पाखंडी हैं; वे कलाकार का जीवन नहीं समझ सकतीं। मुझे तो इससे कोई भय नहीं लगता। "मैं तो फिर एक कलाकार की पुत्री ही हूँ!"

यह सुनकर डिक को कुछ संतोष हुआ कि आख़िर बेचारी को बहुत धोखा नहीं हुआ; और अगर हुआ भी, तो क्या इस जालमें सद्भावना नहीं थी?—और यदि एक पुत्री के हृदय में पितृप्रेम और विश्वास बनाये रक्खा जाय, जो उसके लिए मन के मोती सदृश हो जाय, यद्यपि उसका पात्र अति उचित भी न हो; तो भी क्या बुरा है? एक बात यह भी हो सकती है कि कायरता हो—केवल अपने स्वार्थ के लिए उसे प्रसन्न करने का प्रयोजन रहा हो, तो फिर कहना पड़ेगा कि बेचारा डिक भी तो इंसान ही था, आख़िर क्या करता?

——

## ४

## ईस्थर का प्रेम

महीने भर बाद ईस्थर और डिक एक निर्जन स्थल पर मिले। तब अगर वहाँ कोई मानव प्राणी देखनेवाला होता तो देखता कि इस बार वे एक बिल्कुल भिन्न प्रकार से ही मिल रहे थे। डिक ईस्थर को बाहुपाश में करते हुए बहुत देर तक उसके ओठों को चूमता रहा। ईस्थर बेसुध-सी थी। तत्पश्चात् उनके नयन परस्पर उलझे रहे।

"ईस्थर!" डिक ने कहा।

"डिक!"

"मेरी रानी!"

और फिर समय बीतने लगा......

थोड़ी देर बाद वे उठकर चलने को तैयार हुए। ईस्थर की कमर में हाथ डाले डिक चलने लगा। पेड़ों पर चिड़ियाँ चहक रही थीं, पत्ते पश्चिमी पवन के झूले में झूल रहे थे और धूप-छाँह का खेल हो रहा था—डिक ईस्थर की कमर को दबा देता—और कसकर अपने से चिपटा लेता; दोनों की आँखें मिलतीं—और आनंद से विभोर वे चले जा रहे थे। चीड़ का जङ्गल था और नीचे हल्की-हल्की दूब का क़ालीन, जिस पर डिक ने ईस्थर को बिठाल दिया।

"ईस्थर," डिक ने कहा—"तुम्हें एक बात मालूम होनी चाहिए—तुम जानती हो कि मेरे पापा रईस आदमी हैं और अब तुम यह भी सोचती होगी कि हम-तुम प्रेम में बँधे हुए हैं, इसलिए जब चाहें तब विवाह कर सकते हैं। लेकिन मुझे डर है रानी कि कहीं हमें बहुत समय तक प्रतीक्षा न करनी पड़ जाय और तब तक हमारा सारा साहस और उत्साह समाप्त हो जाय।"

"मुझमें किसी भी बात के लिए साहस है।" ईस्थर ने उत्तर दिया। "जो मैं चाहती थी, आज पा गई हूँ—तुम्हारे और पापा के साथ मैं बहुत ख़ुश हूँ और अब प्रतीक्षा में भी मुझे इतना सुख होगा कि मैं आजन्म प्रतीक्षा ही करती रह सकती हूँ और तब भी घबराऊँगी नहीं!"

एडमिरल का नाम सुनकर डिक के हृदय में कुछ मसकन-सी उत्पन्न हुई।

"सुनो," उसने कहा—"मुझे तुमसे यह बात पहले ही कह देनी चाहिए थी, लेकिन ख़ैर, मैंने कहना ठीक नहीं समझा था और अब भी नहीं समझता—पर कहे बिना काम भी नहीं चलेगा। पापा से मेरी बोल-चाल तक नहीं है।"

"पापा से!" ईस्थर ने शब्द दोहराये। सुनते ही वह पीली पड़ गई।

"हाँ, यह बात तुम्हें अजीब सी लग सकती है, फिर भी इसमें मेरा दोष नहीं है।" डिक ने कहा—"मैं तुम्हें पूरा क़िस्सा बतलाता हूँ।"

डिक ने आद्योपान्त अपने पिता से मनमुटाव की सारी कहानी ईस्थर को सुना दी। सुनकर ईस्थर बोली—"अरे डिक! तुम तो बड़े बहादुर हो और बड़े अभिमानी भी! फिर भी अपने पिता से क्या मान दिखाना! मैं तो ठीक नहीं समझती। अच्छा, मैं मनाऊँगी उन्हें।"

"क्या?" डिक ने चकित होकर पूछा—"महीनों बाद उनसे जाकर कहूँ कि मैं उस सम्पादक के बच्चे की मरम्मत करने गया था; लेकिन फिर की नहीं? और सो क्यों? लेकिन मेरे पापा ने मुझसे भी ज़्यादा गधापन किया है—मैं माफ़ी माँगने नहीं जाऊँगा! यह सब बेवकूफ़ी है।"

"लेकिन बस वे यही तो चाहते थे न," ईस्थर ने कहा—"और अगर उन्हें यह मालूम हो जाय कि तुम वहाँ इसी इरादे से गये तो थे, तो वे बहुत ख़ुश होंगे और फूल उठेंगे! और समझेंगे कि आख़िर मेरा ही तो बेटा है और मेरी ही तरह बहादुर और स्वाभिमानी है। और क्योंकि सम्पादक बेचारा कमज़ोर और ग़रीब आदमी है; इसलिए तुमने उसे मारा नहीं। अगर कहीं वह हट्टा-कट्टा कोई तगड़ा आदमी होता, तब तो उसे मारने में तुम्हारी शान भी थी। कमज़ोर पर भी क्या हाथ उठाना वीर को शोभा देता है! अगर तुम्हारे पापा को ये बातें मालूम हो जायँ तो वे दस बार अपनी भूल मान लेंगे। और तुम क्या समझते हो कि अगर तुम्हारे इतना कहने से मैं ही सब कुछ समझ गई, तब क्या पापा नहीं समझेंगे और तुम्हें माफ़ नहीं कर देंगे? और डिक, मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ--उफ़!—पर फिर भी वे तुम्हारे पिता हैं!"

"रानी," डिक ने खींचकर कहा—"तुम तो समझतीं नहीं; तुम नहीं जानतीं कि कोई रोज़-रोज़ मुँह फुलाये रहे और सीधी तरह बात न करे, ज़रा-ज़रा-सी बात पर झिड़क दे; चाहे बचपन हो, लड़कपन या बड़ापन—बिना कुछ देखे-भाले, तब फिर एक ऐसा वक्त आ जाता है कि सुनते-सुनते जी दुखने लगता है और तुम्हें उस आदमी की सूरत तक से नफ़रत हो जाती है, और तब फिर चाहे वह तुम्हारा पिता ही क्यों न हो। ईस्थर, तुम नहीं

समझ सकतीं कि ऐसे क्रूर पिता कैसे होते हैं, इसी लिए तो तुम समझ नहीं रही हो।"

"हूँ," ईस्थर ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"तो तुम समझते हो कि अपने पिता से मुझे बहुत सुख है; पर तुम्हें शायद यह नहीं मालूम कि मैंने उन्हें देखा भी नहीं है, जानती भी नहीं—तुम्हीं जानते हो—और मुझसे अधिक तुम्हारे पिता हैं इस तरह" यह कहकर उसने डिक का हाथ पकड़ लिया, लेकिन डिक का दिल पसीजा नहीं; "लेकिन मुझे सचमुच दुःख है," वह बोली—"बड़ा बुरा लगता होगा।"

"तुम मुझे ग़लत समझ रही हो," डिक का गला रुंध रहा था—"अपने पापा जैसा अच्छा आदमी तो दुनिया में दूसरा अब तक मैंने देखा नहीं—मुझ जैसे तो सौ भी उनकी योग्यता को नहीं पा सकते, लेकिन वे मेरी बात नहीं समझते और उन्हें कोई समझा भी नहीं सकता।"

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। तब ईस्थर फिर बोली—"डिक, अच्छा एक काम करोगे। जबसे तुम मुझे प्यार करते हो, तब से आज पहली बार मैं तुमसे कुछ करने को कह रही हूँ। क्या मैं तुम्हारे पापा को आते-जाते ही देख सकती हूँ—इस तरह से कि वे मुझे न देख पायें?"

"क्यों? किस लिए?" डिक ने पूछा।

"यों ही, मेरी तबियत। और तुम इतनी जल्दी भूल गये कि मैं पिता लोगों में ख़ास दिलचस्पी लेती हूँ।"

डिक ने बात समझ ली। वह शीघ्र ही राज़ी हो गया और क्षुब्ध तथा उद्विग्न मन से ईस्थर को लेकर पीछे के एक रास्ते से पहाड़ी के नीचे ले गया; वहाँ एक झाड़ी के पीछे उसे छिपा दिया, जहाँ से वह उसके पिता को घोड़े पर चढ़े जाते हुए देख सकती थी।

कोई आध घंटे तक वे दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े वहाँ चुप बैठे रहे। तब कहीं जाकर दूर पर घोड़े की टाप सुनाई पड़ी और बाद को फाटक आवाज़ करते हुए खुला और उसमें से घोड़े पर सवार मिस्टर नेज़बी निकलते दिखाई दिये—झुके हुए कंधे, भारी और गंभीर मुद्रा।

ईस्थर ने उन्हें एकदम पहिचान लिया; यद्यपि उसने उन्हें कई बार देखा था। पर वह प्रेम में ऐसी बेसुध रहती थी कि कभी उसने यह सोचने की कोशिश नहीं कि यह कौन है। लेकिन इस बार जानकर उसे मालूम हुआ कि अब वे कुछ नहीं तो दस साल अधिक बूढ़े लगते हैं और उनके चेहरे पर मुर्दनी-सी छाई हुई है।

"अरे डिक! डिक!" वह चीख़ी और रोने लगी। लेकिन फ़ौरन ही अपने मुख को उसकी गोदी में छिपाकर बैठ गई। उसके भी आँसू गिरने लगे।

दोनों के दोनों उदास मन घर लौट आये और उस दिन रात को ईस्थर की सलाह मानकर और उसके प्यार से अनुप्राणित होकर उसने अपने पापा से क्षमा-याचना की, बहुतेरा रोया-गाया, लेकिन शोक कि मिस्टर नेज़बी नहीं पसीजे और बड़ी रूखी तथा कर्कश बातें सुनाईं। नतीजा यह हुआ कि डिक उनकी ओर से और भी खिन्न, और भी उदास, और भी कटु हो उठा।

---

## ५

## एडमिरल की वापसी

गत घटना के बाद की बात है कि डिक अपने नियत समय से पहले ही ईस्थर से मिलने उसके कुटीर की ओर चला जा रहा था कि राह में मिस म' ग्लाशन थाइमबरी से आ टपकीं। उन्होंने डिक को देखा नहीं—आँसुओं से उनका मुख भीग रहा था।

यह देखकर डिक रुक गया और सोचने लगा कि इसका क्या मतलब हो सकता है। इतना स्वच्छ और सुन्दर दिन था आज कि किसी अनिष्ट की आशंका तो की ही नहीं जा सकती थी, तब भी क्या कोई अनहोनी बात ईस्थर के घर हो गई है, क्योंकि मिस म'ग्लाशन कत्थई काग़ज़ में कुछ बाँधे हुई चली जा रही थीं, जिससे मालूम होता था कि घर पर .खूब लड़कर और लड़ाई में हारकर भाग आई हों। तब

क्या मेरे लिए आज से उस घर का द्वार बन्द रहेगा ? क्या ईस्थर अकेली रह गई या उसकी रक्षा करने के लिए उसके अनगिनती नातेदारों में से यूरोप से कोई नया आ टपका ? प्रेमी लोगों का यह स्वभाव होता है कि वे अपने प्रिय के सगे अथवा समीप के नातेदारों को कुछ घृणा की दृष्टि से देखा करते हैं। मानव-जाति के इतिहास में इस तथ्य की पुष्टि के अनेक प्रमाण मिलते हैं। मिस म'ग्लाशन इस समय बड़ी उदास मालूम पड़ती थीं। पर जो भी हो, अगर कोई और नया व्यक्ति वहाँ ईस्थर की देख-भाल के लिए आ पहुँचा होगा, तब तो और भी मुसीबत होगी।

यही सोचकर डिक जल्दी-जल्दी चलने लगा, लेकिन हर क़दम पर उसकी परेशानी और आशंका बढ़ती ही जाती थी।

घर पहुँचते ही उसे एक आवाज़ सुनाई पड़ी, जो निश्चय ही किसी नये आदमी की थी। डिक पर जैसे बिजली टूट पड़ी—एडमिरल मौजूद थे यहाँ तो। इस भय से डिक तो भाग खड़ा होता, लेकिन अपने प्रेमी के आगमन का समय जानकर ईस्थर पहले से ही खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। पलक मारते-मारते वह डिक के बग़ल में मौजूद थी—बहुत ही ख़ुश और डिक को परेशान देखकर और भी ख़ुश हो गई। इस समय वह सुख के ऐसे स्वर्ग में उड़ रही थी, जो न केवल वर्णनातीत है, बल्कि कल्पनातीत भी।

ईस्थर ने शीघ्र ही डिक की उँगली पकड़ी और उसे खींचकर अंदर बैठक में ले गई, जहाँ वॉन ट्रॉम्प फ्रेंच मख़मली देहाती सूट पहने बैठे थे। उनकी नाक पर एक बड़ा कार्बंकिल फोड़ा उठा हुआ था। डिक को वहाँ पहुँचाकर जैसे ईस्थर का कर्तव्य पूरा हो गया था कि वह तत्काल ही वहाँ से चली भी गई।

और अब दोनों जने एक-दूसरे की ओर बड़े हक्के-बक्के-से होकर देख रहे थे। पर वॉन ट्रॉम्प ने पहले अपनी परेशानी दूर की और उनके लिए यह स्वाभाविक ही था। डिक से मिलाने के लिए उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया।

"और तुम मेरी बच्ची ईस्थर को भी जानते हो ?" उन्होंने कहा—"यह बड़ी .खुशी की बात है और अपने घर आकर .खुशी तो होनी ही चाहिए—और घर !—मुझ जैसे घुमक्कड़ के लिए कुछ एक अजीब सी चीज़ है, पर जो भी हो, हम सबको अपने घर का और घरेलू बातों का मोह होता है। मिस्टर नेज़बी, इसी लिए मैं यहीं आ गया।"

"और तुम अपने सामने उस आदमी को देख रहे हो जिसे कोई असंतोष नहीं है।"

"हूँ !" डिक ने कहा।

"बैठ जाओ," उसने स्वयं बैठते हुए कहा—"मेरा तो भाग्य पलट गया है। अभी सफ़र से आकर थोड़ी सी बरांडी पी थी और मिस्टर नेज़बी अभी नशे में झूमने ही वाला था। और मेरे-तुम्हारे बीच में कोई छिपाव तो है नहीं। मैंने पचास फ्रैंक उधार लिये और किसी तरह यहाँ भाग आया हूँ—काफ़ी चालाकी का काम किया है।"

"हाँ, तो अब आप यहाँ मौजूद हैं।" डिक ने ताना मारकर कहा।

इतने में ही ईस्थर फिर कमरे में आ गई और डिक के कान में बोली—"देखा तुमने पापा को ! .खुश हो गये न ?"

"हाँ, हाँ, बहुत .खुश !" डिक ने उत्तर दिया।

"मैं जानती थी कि तुम ज़रूर .खुश होगे !" उसने जवाब दिया—"मैंने पापा से भी कह दिया है कि तुम उन्हें बहुत प्यार करते हो !"

"पिओ भाई, पिओ" एडमिरल ने डिक से कहा—"हम लोगों को कुछ नया मज़ा लेना चाहिए—"

"नया मज़ा !" डिक ने दोहराया और गिलास उठाकर मुँह से लगाया; लेकिन बिना चखे ही उसे फिर रख दिया। आज एक दिन के लिए वह काफ़ी नये मज़े उठा चुका था।

अपनी बाहों में घुटने दबाये ईस्थर अपने पिता के पास स्टूल पर बैठी हुई उन्हें और डिक को सगर्व नेत्रों से देख रही थी। उसकी आँखें इतनी चमकीली थीं कि यह नहीं मालूम होता था कि उनमें आँसू हैं भी

या नहीं। रह-रहकर प्रफुल्लता की एक सिहरन-सी उसके शरीर में बिजली की तरह दौड़ जाती थी और वह झूम-झूम पड़ती थी। उसकी इस समय ऐसी अवस्था थी जिसमें मनुष्य अपने आपे में नहीं रहता।

उधर रिचार्ड के रोष का कोई ठिकाना नहीं था। मिस्टर वॉन ट्रॉम्प अपनी बात कहे चले जा रहे थे—"मैं कभी अपने दोस्त को नहीं भूलता, और दुश्मन को भी नहीं। और मेरे दुश्मन बस दो ही हैं—एक तो मैं ख़ुद, दूसरी जनता; और मैं समझता हूँ कि अपने इन दोनों ही दुश्मनों से मैंने अच्छी तरह बदला निकाल लिया है। लेकिन भाई, वे दिन बीत गये। वॉन ट्रॉम्प वह वॉन ट्रॉम्प नहीं रहा। उस आदमी ने तो ख़ूब बाज़ियाँ मारीं—तुम तो जानते ही हो—मुझे कहने की क्या ज़रूरत है। पर अब मैंने उस आदमी को मार डाला है—पेरिस में मिस्टर नेज़बी—"

"नेज़बी नहीं, मिस्टर रिचार्ड कहो पापा।" ईस्थर ने टोककर कहा।

"ख़ैर, रिचार्ड ही सही। हम लोग पुराने दोस्त हैं और अब तो पड़ोसी भी। क्यों रिचार्ड, पड़ोसी हम लोग कैसे रहेंगे? यह कुटी शायद तुम्हारे पापा की ज़मीन पर ही है और यह जंगल शायद लार्ड ट्रेवेनियन का है। पर मैं इन सब बातों की परवा नहीं करता। मैं पुराना फक्कड़ हूँ। लोगों से मिलना-जुलना ज़रा कम पसंद करता हूँ—जब मैं रईस था तब भी और आज भी उसी शान के साथ अलग रहता हूँ, जब कि मैं अपने कर्मों का फल भुगत रहा हूँ। और हाँ, रिचार्ड, मैं तुमसे ईस्थर के बारे में कह रहा था। वह बेचारी यहाँ पड़ी-पड़ी घुन-सी रही है अपनी बुआ के पास। वह ख़ाली इसकी देखभाल के लिए ही थी—पर मेरी और उसकी आदतें बिलकुल अलग थीं। हम लोगों की पल भर भी नहीं पटती थी। अब मैंने उसे निकाल बाहर किया है। और अब मैं इसे अपनी देखभाल में ही रक्खूँगा। हाँ, हमारे पड़ोसी कैसे हैं रिचार्ड?"

डिक से यह आशा की जाती थी कि वह बतलाये कि पड़ोस में कौन कौन से अच्छे घराने हैं।

"तुम हम लोगों का परिचय करा देना" एडमिरल ने कहा। इस वक्त तक पसीने के मारे डिक की कमीज़ भीग गई थी, इसलिए उसने जाने के लिए बहाना बनाया, जिससे कि ईस्थर को आशंका हुई कि कहीं मुझसे नाराज़ न हो गये हों, इसलिए उसने डिक को लालच दिया—"नहीं! यह कभी नहीं हो सकता! मेरे साथ घूमने चलना ही पड़ेगा।"

"तो हम सब साथ चलें न;" उठते हुए एडमिरल ने कहा—"बस मैं एक घूँट और पी लूँ," और ब्रांडी का गिलास ओठों से लगाया—"ताज्जुब है कि इस सफ़र से मैं इतना कैसे थक गया। और थकूँ भी कैसे नहीं। अब मैं बूढ़ा हो आया हूँ—बूढ़ा! बूढ़ा! और सर से बाल भी गिरने लगे हैं।"

इतने में ईस्थर ने हैट उनके सिर पर रख दिया और वे शीशे में अपना मुँह देखकर कहने लगे—"भई, अब तो हम पापा लगने लगे। अब हमें गम्भीर हो जाना चाहिए।" और फिर जाकर एक पुलिंदे में से एक छड़ी निकाल ली।

मिस्टर ट्रॉम्प एक ख़ास शान और ढंग के साथ चलने लगे—जैसे थके हों, और डंडे पर ज़ोर दे-देकर। अपने चारों तरफ़ देखते थे और उस पर मलिन हँसी हँसकर जैसे सहानुभूति प्रकट करते थे। रास्ते में उन्होंने एक पौदे का नाम भी पूछा, और बोले—"यह खुले मैदान की ज़िंदगी मुझे फिर से जवान बना देगी।"

शाम होते-होते वे सब पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। सूरज डूब रहा था और सारा पश्चिम रंगीन था। तिरछी और हल्की किरणों से पहाड़ियों की आकार-रेखा उभर आई थी। चौड़े-चौड़े दलदलों में, जहाँ छोटी-छोटी झाड़ियों और बेलों का जाल-सा बिछा हुआ था, पश्चिम-उत्तर धूमिल आलोक फैला हुआ था।

यह दृश्य देखकर वॉन ट्रॉम्प के अंतर का चित्रकार जग उठा।

"देखो, डिक," वे चीख़ पड़े—"कितना अनमोल दृश्य है यह!"

शायद ईस्थर को किसी गीत की पंक्तियाँ भी इतनी मर्मस्पर्शी न लगतीं, जितनी कि अपने पापा की यह बात लगी। हर्ष के आँसू उसकी

आँखों में छलछला आये—"ये ही तो पिता हैं जिनके स्वप्न वह देखा करती थी—जिसकी डिक प्रशंसा करता था—सीधे, सच्चे, उत्साही, विनम्र, जिन्हें दुनियादारी से कोई वास्ता नहीं—सच्चे चित्रकार और व्यवहार में सज्जन !"

ठीक उसी समय एडमिरल को सड़क के एक किनारे एक मकान भी दिखाई पड़ गया और उसके द्वार पर जो साइनबोर्ड टँगा था, उससे एडमिरल को कुछ ऐसा अनुमान हो गया कि उनकी प्यास जग गई और उन्हें अपने मन की चीज़ मिलती मालूम पड़ी।

"क्या वह कोई होटल है ?" अपने डंडे से संकेत करते हुए एडमिरल ने डिक से पूछा।

उनके स्वर में स्पष्ट ही कुछ अंतर पड़ गया था, जिससे प्रतीत होता था कि वे इस विषय को कुछ महत्त्व दे रहे थे—ईस्थर भी सुन रही थी, कान लगाकर, इस आशा में कि कलाकार के मुँह से फिर कोई बढ़िया बात सुनाई पड़ेगी।

डिक ने कहा—"हाँ, होटल ही है।"

"तुमने देखा है ?" एडमिरल ने पूछा।

"मैं इसके पास से सैकड़ों ही बार गुज़रा हूँ, लेकिन अंदर कभी नहीं गया।" डिक ने उत्तर दिया।

"अरे तुम क्या जानो इन सब बातों को अभी। तुम्हें दुनिया अभी देखनी है। और अपने पड़ोस में ही एक होटल जब इतना नज़दीक है, तब क्या कहने ! मैं चाहता ही था कि सबसे पहले पड़ोस में जान-पहचान हो। अब मैं जाता हूँ और अभी लौटकर आता हूँ।"

यह कहकर वे तेज़ क़दम बढ़ाते हुए होटल की तरफ़ चले गये।

डिक और ईस्थर ने अब अपने को अकेला पाकर बातें करनी शुरू कीं।

"डिक !" वह बोली—"अब तुमसे बात करने का मौक़ा मिला है। ओह—आज मैं कितनी ख़ुश हूँ ! तुमसे कितनी बातें कहनी हैं ! मैं चाहती हूँ कि तुम मेरा एक काम कर दो। तुम जानते ही हो कि पापा

पेरिस से बिना अपना पेंटिंग का सामान लिये ही चले आये हैं, सो तुम थाइमबरी से ख़रीदकर ला दो। तुमने देखा न अभी-अभी कि उनका दिल फिर पेंटिंग के लिए कैसा बेचैन होने लगा था। ये लोग बिना इसके जी नहीं सकते।"

इस वक्त तक तो डिक के बर्ताव में उसे कोई भूल नहीं मालूम पड़ी थी; फिर वह अपनी ही ख़ुशी में इतनी खोई हुई थी कि उसे यह सब जानने का अवकाश ही नहीं था। अपने महान् और सज्जन पापा के सामने डिक का चुप रहना उसे बहुत ही स्वाभाविक और शिष्ट प्रतीत हुआ था; क्योंकि बड़ों के सामने छोटों को यों भी कम बोलना चाहिए। लेकिन क्योंकि वे अब अकेले थे; इसलिए उसे अपने और अपने प्रेमी के बीच में चुप की एक दीवार-सी खड़ी दिखाई दी और उसका हृदय आशंकित हो उठा।

"डिक," उसने व्यथित होकर कहा—"तुम मुझे प्यार नहीं करते?"

"करता तो हूँ रानी"—डिक ने प्यार से उत्तर दिया।

"लेकिन तुम बड़े दुखी हो—उदास हो—और न जाने कैसे लग रहे हो। शायद पापा के मिलने से तुम्हें कोई ख़ुशी नहीं हुई।" कहते-कहते उसका स्वर टूटने लगा।

"ईस्थर!" उसने उत्तर दिया—"विश्वास करो, मैं तुम्हें अपने प्राणों की तरह प्यार करता हूँ और अगर तुम भी मुझे प्यार करती हो तब समझ सकती हो कि इसका क्या मतलब है—मैं तुम्हें सुखी देखना चाहता हूँ। बस और कुछ नहीं। क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे सुख में सुखी नहीं हो सकता? ईस्थर, तुम भूलती हो—अगर मैं परेशान हूँ, शंकित हूँ, अगर—ओह मुझ पर विश्वास करो रानी—विश्वास करो न!" तर्क न देकर उसने प्यार की बात की।

किंतु लड़की के मन में संदेह उत्पन्न हो ही गया—और यद्यपि उसने बात आगे नहीं बढ़ाई, क्योंकि एडमिरल लौटे आ रहे थे, फिर भी संदेह उसके मन से हटा नहीं, जमा ही रहा।

एक क्षण को डिक उसे बहुत ही स्वार्थी मालूम हुआ कि उसने नाक-भौं चढ़ाकर और स्वर बदलकर उसके आनंद में विघ्न डाला, क्योंकि नारी का यह स्वभाव है कि ऐसी भावना से कही गई बातों को, जो उसे पसंद नहीं हैं, वह बहुत मुश्किल से ही क्षमा करती है। दूसरे क्षण ईस्थर के हृदय में यह भान हुआ कि हो सकता है, ये मेरे पापा से ईर्ष्या करते हों किंतु यह बात भी उसे बहुत लगी। फल-स्वरूप दोनों हृदयों के बीच अविश्वास की एक दीवार खड़ी होने लगी। अपने प्रियतम युवक से अब वह अपने को एक नहीं पाती—उसके हृदय में अपने हृदय की भाषा नहीं पढ़ पाती। अपने सुख का दाता उसे नहीं मानती, उसे अब वह बड़े रूखेपन से देखने लगी।

संक्षेप में ईस्थर के हृदय में से डिक का प्रेम धीरे धीरे मिटने लगा।

---

## ६

## एडमिरल की करतूत

इस सारे नाटक का रंगमंच वास्तव में ईस्थर का हृदय है, जिसमें आज तक किसी ने झाँककर देखा नहीं। जो दुर्दांत घटना हुई, उसके विषय में केवल रिचार्ड डिक ने ही जो कुछ बतलाया है, वही हम जानते हैं, वरना ईस्थर तो इस मामले में बिलकुल चुप रही और एडमिरल—वह समुद्री सेना का नायक, जो आज एक झंडा और दूरबीन लिये बंदरगाह के एक किनारे पर शान से रहता है—इस विषय में कुछ भी बतलाने के योग्य नहीं थे। एक बार उन्होंने जोश में आकर सिर्फ़ यही कहा—"वह शैतान कुतिया है जनाब!" और इसके बाद उसकी शुभ कामना में शराब का एक घूँट पिया था। एडमिरल के जानी दुश्मन को भी यह मानना पड़ेगा कि वह किसी के लिए अपने दिल में खुंस नहीं रखता था और न ऐसी बातों की परवा ही करता था।

हाँ तो, यदि ईस्थर जैसी स्नेहमयी, चपल और खुले दिल की लड़की को विधाता ने किसी दूसरी तरह से भाग्य-चक्र में घुमाया होता, यदि घटनाओं का क्रम केवल बदल गया होता, तो वह घर छोड़कर भागती नहीं।

एडमिरल को घर लौटे हुए चार ही दिन हुए थे, लेकिन इसी में ईस्थर को अपने सारे सपने झूठ मालूम होने लगे और जब डिक उनके लिए पेंटिंग का सामान लाया तब तो उसके सामने से जैसे भ्रम का पर्दा पूरी तरह हट गया।

शुक्र की शाम की बात है। एडमिरल अपने एक तरफ़ कोने में बैठे हुए पानी मिली हुई बरांडी की चुस्की ले रहे थे और ईस्थर मेज़ पर बैठी कुछ काम कर रही थी। डिक को देखते ही बाप-बेटी दोनों ने उठकर उसका स्वागत किया, लेकिन ईस्थर ने तुरंत ही उसके हाथ से सामान लेकर उसका बोझा दूर किया और उस सामान को अपने चित्रकार पिता को दिखाने लगी, जिसे देखते ही वॉन ट्रॉम्प का मुँह एकदम उतर गया, जैसे उस पर घड़ों पानी पड़ गया हो, और वे बिगड़ खड़े हुए।

"तुम्हें मेरे मामले में बोलने की क्या ज़रूरत है?" उन्होंने ईस्थर से कहा। उनके स्वर से शत्रुता टपकती थी।

"माफ़ करो पापा—मैंने तो इसलिए यह सब सामान मँगाया कि—मैं जानती थी कि आजकल आपने तस्वीरें बनाना छोड़ दिया है—तो—!"

"हाँ, हाँ छोड़ दिया है और क़यामत तक के लिए छोड़ दिया है!" एडमिरल ने चीख़कर कहा।

"माफ़ करो," ईस्थर ने फिर भी बिना विचलित हुए कहा—"लेकिन यह आपने कुछ अच्छा तो नहीं किया। माना कि संसार आपके साथ अन्याय करता है—आपकी कला को नहीं समझ सकता—फिर भी आपका अपने प्रति-अपनी कला के प्रति—कुछ तो कर्तव्य है। और यहाँ मेरे पास आने से आप अपनी कला क्यों छोड़ते हैं? आपको तो मुझे यह दिखाना चाहिए कि आप पिता के कर्तव्यों का पालन करते हुए भी अपनी कला के प्रति उदासीन नहीं रहते। मैं उन बेटियों की तरह नहीं हूँ, जो अपने पापा की कला से ईर्ष्या रखती हैं। मैं तो उसे समझने का प्रयत्न करती हूँ।"

किंतु परिस्थिति बड़ी विकट थी। रिचार्ड सारे झूठ पर से पर्दा हटा देने के लिए आतुर था और उधर एडमिरल के मन में भी तूफ़ान उठ रहा था। उन्होंने अपना पाइप तोड़ डाला और ब्रांडी में फेंक दिया और पागलों का सा अभिनय करने लगे। लेकिन यह सब क्षणिक ही था। वे फिर अपने आपे में आ गये और वैसे ही ख़ुश हो उठे। कहने लगे—"मैं बड़ा बेवकूफ़ हूँ—हालाँ कि बूढ़ा होने को आया। मैं तो बचपन में ही बिगड़ चुका था। और ईस्थर तो बिलकुल अपनी माँ पर गई है—उसी की तरह इसे भी दूसरों के लिए अपने कर्तव्य का ध्यान रहता है--और मैं कहता हूँ कि तुम इस सब झंझट को छोड़ दो। ख़ैर, यह सामान आ गया। ठीक है, अब मैं कुछ दिन बाद काम करना शुरू करूँगा और मैं सचमुच काम करना चाहता हूँ, इसलिए अभी कैनवैस डिक की मदद से लगवाये लेता हूँ।"

डिक स्टैंड पर कैनवैस लगाने लगा और एडमिरल अलग खड़े-खड़े किसी और ध्यान में मस्त बातें करते रहे।

कुछ देर बाद बहाना बनाकर ईस्थर उठी और सोने चली गई। रह गया अकेला डिक, जो वॉन ट्रॉम्प के साथ घंटे भर तक माथापच्ची करता रहा।

दूसरे दिन एडमिरल होटल से वापस लौटते वक़्त डिक को रास्ते में ही मिल गये। होटल के मैनेजर से उन्होंने दोस्ती गाँठ ली थी। डिक को ताज्जुब होता था कि एडमिरल के इस ऐश का ख़र्चा कौन उठाता है। उसने सोचा कि हो न हो यह ईस्थर बेचारी से ही ऐंठता होगा और यह ध्यान आते ही उसके जी में आया कि एडमिरल को उठाकर ज़मीन पर पटक दे। उधर एडमिरल साहब शान के साथ चले आ रहे थे। पास आकर उन्होंने डिक की बाँह पकड़कर कहा—"कहो दोस्त ख़ूब मिले। अभी मैं तुमसे मिलने की बात सोच ही रहा था कि तुम मिल गये। आज मैं बड़ा ख़ुश हूँ। इसलिए किसी अच्छे दोस्त का साथ चाहता था।"

किंतु डिक ने तीखेपन से उत्तर दिया—"बड़ी ख़ुशी की बात है कि आज आप बहुत ख़ुश हैं। हाँ, और ऐसी परेशानी की कोई बात भी तो नहीं है।"

'हाँ, कोई बात नहीं। जो थी भी, उससे मैंने पीछा छुड़ा लिया—और यहाँ यहाँ—मुझे सब तरह का सुख है। मेरे शौक़ भी बहुत नहीं हैं। हाँ, एक बात—तुमने मुझसे यह तो पूछा ही नहीं कभी कि मुझे अपनी बेटी कैसी लगती है।"

"नहीं तो," डिक ने गोलमोल जवाब दिया—"कभी नहीं पूछा।"

"यानी आप पूछेंगे भी नहीं। लेकिन क्यों, डिक ? वह मेरी बेटी तो है, लेकिन मैं भी आख़िर दुनियादार आदमी हूँ और शौक़ीन भी, और इसलिए अपनी साफ़ राय ज़ाहिर कर सकता हूँ—है न डिक ? और साफ़ बात यह है, वह मुझे बुरी नहीं लगती। देखने में सुन्दर है—ठीक अपनी माँ की तरह और मुझे प्यार भी करती है—"

डिक बीच में ही बोल पड़ा—"दुनिया में इतनी अच्छी दूसरी लड़की नहीं मिलेगी आपको !"

एडमिरल ने एकदम ज़ोर से कहा—"यही तो मैं तुमसे उम्मीद करता था डिक ! अच्छा चलो, ट्रेवानियन आर्मस् को लौट चलें और वहीं शराब पीते हुए इस बारे में बातचीत कर डालें आज ही !"

"नहीं, कभी नहीं," डिक ने कहा—"ऐसा नहीं हो सकता। आप आज काफ़ी पी चुके हैं।"

यह सुनकर एडमिरल भिनभिनानेवाले थे, लेकिन डिक की मुद्रा देखकर और पेरिस की बातों को याद करके उन्हें कुछ अक़्ल आ गई और वे सँभल गये।

"जैसा भी तुम ठीक समझो," उन्होंने डिक से कहा—"लेकिन मेरी समझ में नहीं आया कि इससे तुम्हारा मतलब क्या है और तुम क्या चाहते हो। तो फिर चलो, चलते-चलते ही बातचीत कर डालें। तुम अभी जवान आदमी हो और जब मेरी उम्र पर पहुँचोगे, तब—लेकिन ख़ैर जाने दो। डिक, तुम मुझे बहुत भले आदमी लगते हो—शुरू से ही तुमसे मिलकर ख़ुशी होती रही है। पर सच बात यह है कि ईस्थर ज़रा टेढ़ी लड़की है और तभी ठीक होगी जब उसकी शादी हो जायगी।

और तुम जानते ही हो कि आमदनी के लिए उसके अपने साधन हैं ही जो उसने अपनी माँ से पाये हैं। उसकी बड़ी तक़दीर है और अपनी उसी तक़दीर से वह अच्छा पति भी पा जायगी और तुम्हीं—सिर्फ़ तुम्हीं उसके पति होने के योग्य हो ! आज रात को ही मैं उससे कहूँगा।"

डिक अवाक् खड़ा रह गया।

"मिस्टर वॉन ट्राम्प" डिक ने उत्तर दिया—"आप ख़ुद जो चाहें करें, पर मेहरबानी करके अपनी बेटी को अकेले ही रहने दीजिए। आप उसके बीच में न बोलिए।"

"यह तो मेरा फ़र्ज़ है" एडमिरल ने जवाब दिया—"और मैं तुम्हें पसंद भी करता हूँ। लोगों की शादी कराने में तो मैं ख़ास तौर से होशियार हूँ। आज रात को तुम कहीं बाहर ही रहो। अच्छा, बिदा। यह मामला तुम बिलकुल मेरे हाथ में छोड़ दो—ऐसी बातें तय करने के चुटकुले मुझे रटे पड़े हैं। और कोई मैं पहली बार यह काम नहीं कर रहा हूँ।"

डिक ने बहुतेरा मना किया, समझाया, लेकिन सब बेकार। बूढ़े एडमिरल के हठ के सामने उसकी एक न चली। डिक ने सोचा कि अब तो मेरे ऊपर बड़ी आफ़त आई। एडमिरल ने एक बार फिर ट्रेवानियन आर्मस् चलने का प्रस्ताव किया; किंतु डिक ने फिर मना कर दिया और सोचा कि शायद यह वहाँ अकेले ही चले जायँ और मैं इधर ईस्थर को जाकर सब सूचना पहले से ही देकर उसे सतर्क कर दूँ। परन्तु फिर एडमिरल ने घर जाकर ही ब्रांडी पीने का इरादा किया और चल दिये। उनके घर पहुँचने पर क्या हुआ, यह हमें नहीं मालूम।

दूसरे दिन इतवार था और एडमिरल साहब निहायत ढंग से कपड़े पहने हुए गिरजे में मौजूद थे। वहाँ उन्होंने नियमानुसार उपासना की और भजन गाने में भी भाग लिया। ऐसा मालूम पड़ता था कि जैसे वे जन्म से ही भगवान् के भक्त हों। और ऐसे ढंग से यह सब

किया जिससे कि दूसरों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो। उदाहरण के लिए मिस्टर नेज़बी की दृष्टि ही उन पर पड़ गई।

घर लौटते समय घोड़ा-गाड़ी में बैठे हुए मिस्टर नेज़बी ने डिक से कहा--"गिरजे में वहाँ हमारे सामने ही वह बूढ़ा शराबी-सा कौन बैठा था? तुम जानते हो क्या?"

"हाँ, कोई था तो—शायद वॉन ट्रॉम्प!" डिक ने उत्तर दिया।

"शायद वह कोई विदेशी है।" मिस्टर नेज़बी ने कहा।

इस तरह एडमिरल की नज़र से बच जाने की डिक को बहुत ख़ुशी थी। किस तरह वह अपनी पीठ ठोके, यह उसकी समझ में नहीं आता था। क्योंकि अगर एडमिरल उसे देख पाता, तो भगवान् जाने क्या नतीजा होता। "लेकिन" डिकने सोचा—"यह नतीजा कब तक टाला जा सकता है? मामला बहुत आगे बढ़ चुका है और अब उसके फट पड़ने में ज़्यादा देर नहीं है।"

डर और शर्म के मारे डिक उस दिन तीसरे पहर ईस्थर के घर नहीं गया, लेकिन रात को खाना खा चुकने के बाद जब मिस्टर नेज़बी गहरी नींद में सो गये तब वह घर से निकल पड़ा और दौड़ता हुआ ईस्थर के घर की ओर चला। दौड़ा वह इसलिए कि एक तो वक़्त बच जाय, दूसरे डर दूर हो जाय और साहस आ जाय। हालाँ कि वह एडमिरल और उसके घर से अब घृणा करने लगा था, फिर भी ईस्थर से डरता ही था। वह नहीं जानता था कि ईस्थर मेरे बारे में क्या सोचती होगी; लेकिन इतना ज़रूर समझता है कि मैं उसकी नज़रों में गिर गया हूँ। और उसके प्यार के उन्माद का ध्यान तो जैसे अपमान की तरह ही उसके मन को कचोट रहा था।

वहाँ पहुँचकर उसने कमरे को वैसे ही कल की तरह पाया—ईस्थर अपनी मेज़ पर बैठी थी और एडमिरल अपनी ब्रांडी का गिलास लिये अँगीठी के पास। किंतु आज दोनों की मुद्राएँ बहुत भिन्न थीं और एक दूसरे ही कहानी कह रही थीं। लड़की का मुख फीका पड़ रहा था। नेत्रों के

कोटरों पर कालिमा छाई हुई थी और पुतलियों पर धुँधलापन, जैसे उनकी चमक उड़ गई थी और उसकी चपल से चपल दृष्टि भी निर्निमेष मालूम पड़ती थी। एडमिरल पर मस्ती और सरूर सवार था। मुँह पर बहकी-बहकी सी हँसी थी और कालर लटक रहा था। आँखों का रंग कुछ दूसरा ही था। रिचार्ड के अंदर आने पर वे अभिवादन करने के लिए उठकर खड़े नहीं हुए और वहीं बैठे-बैठे अपना पाइप भूमते हुए हाथ से हिला दिया और इस प्रकार डिक का स्वागत किया। ईस्थर ने उनकी इस हालत की तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

"सुनो भाई, मैं गिरजे गया था। मैंने अपना वादा पूरा किया और तुम्हें भी वहाँ देखा था पर तुमने मुझे नहीं देखा। और वहाँ मैंने एक बड़ी ख़ूबसूरत औरत देखी—और अगर कहीं यह गंजी खोपड़ी और सफ़ेद बाल नहीं होते और यह और वह—लो मैं क्या कह रहा था, भूल गया ख़ैर, कुछ बात नहीं। आज मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं। आज मैं बस बात ही बात करना चाहता हूँ। कोई सुननेवाला हो, चाहे बहरा ही हो वह।"

इसके बाद दो घंटे तक जो कुछ हुआ, उसका वर्णन संक्षेप में ही करना ठीक होगा। एडमिरल का रंग-ढंग बहुत अजीब था, हालाँकि बहुत बुरा नहीं। अपनी बेटी की उपस्थिति का उन्हें ध्यान था, इसलिए वे ज़रा ज़बान सँभालकर बात कर रहे थे। ऐसे दृश्य का आनंद डिक किसी अन्य अवसर पर उठा सकता था। मिस्टर वॉन ट्रॉम्प का अहंकार नशे की भोंक में हवा से बातें कर रहा था। उसमें दम्भ भर गया था। अपने दिल की छोटी से छोटी बात भी इस समय वे कहे डाल रहे थे।

"अब डिक को ही देखो," वे बोले—"कैसा होशियार आदमी है यह—मुझे पहली बार देखकर ही जान गया था और साफ़-साफ़ कह दिया था कि तुम ऐसे आदमी हो और मैंने ज़रा भी तुम्हारी बात का बुरा नहीं माना था डिक। मैं सचमुच बड़ा बना हुआ हूँ—और बिलकुल ढोल हूँ!"

यह सुनकर ईस्थर ने अपनी श्रद्धा और आदर की इन दोनों मूर्तियों—एडमिरल और डिक—को इस नये रूप में देखकर क्या सोचा होगा; यह कल्पना करने की बात है।

और फिर वॉन ट्रॉम्प ने आगे कहा—"किसी भी आदमी को चूसने और लूट लेने में मुझे ज़रा भी हिचक नहीं होती थी तब।"

यह सुनकर डिक उठ खड़ा हुआ और बोला—"अच्छा, अब हम लोगों को सो जाना चाहिए।"

डिक के मुख पर हल्की-सी सहमी हुई मुस्कान थी।

"नहीं, बिलकुल नहीं;" एडमिरल ने ज़ोर से कहा—"मैं ऐसी चालाकियाँ जानता हूँ। ईस्थर यहीं लेट जायगी और हम-तुम कहीं बैठे-बैठे सबेरा कर देंगे।"

यह सुनकर ईस्थर झमककर उठ खड़ी हुई। उसका मुँह तमतमा उठा। दो घंटे से वह अपने देव-तुल्य प्रेमी और पिता की हरकतें देख रही थी। धीरे-धीरे उसका सारा भ्रम मिट चुका था और अब वह अपने ही घर में सो जाने की आज्ञा पा रही थी।—बात करते-करते ही वे अपनी कुर्सी पर ही झूमने लगे थे और अपने पाइप की डंडी के तीन टुकड़े कर डाले थे। ईस्थर उनके सम्मुख जाकर डटकर खड़ी हो गई और बड़े दृढ़ तथा आज्ञा-सूचक स्वर में बोली—"नहीं, मिस्टर डिक यहाँ नहीं सोयेंगे। उन्हें अभी अपने घर जाना होगा और आपको अभी यहीं सोना पड़ेगा!"

पाइप के टूटे टुकड़े एडमिरल के हाथ से छूट पड़े। उन्हें जैसे काठ मार गया। उन पर जैसे बिजली टूट पड़ी। उनके मुँह से आवाज़ भी नहीं निकली। जैसे के तैसे वे अवाक् मुँह खोले बैठे रह गये।

डिक को ईस्थर ने सीधे बाहर दरवाज़े की तरफ़ इशारा किया और वह चुपचाप उसकी आज्ञा मानकर उठकर चल दिया। द्वारी में पहुँचकर उसने देखा कि ईस्थर उसके बग़ल में ही खड़ी है, तब उसने रुककर यह कहने की हिम्मत की—"तुमने बिलकुल ठीक किया!"

"जो मेरे जी में आया किया, ठीक या बे ठीक।" वह बोली—"अब आप यह बतलाइए कि इन्हें चित्रकारी आती है ?"

"बहुत से लोगों को इनके चित्र पसंद हैं," डिक ने कुछ रु धे हुए गले से उत्तर दिया—"पर मुझे नहीं। मैंने कभी नहीं कहा कि मुझे इनके चित्र पसंद आते हैं।" डिक ने तेज़ी से कहा, जैसे वार होने से पहले ही उसने अपने को बचाना चाहा।

"मैं तुमसे सिर्फ़ यह पूछती हूँ कि क्या वे चित्र बनाना जानते हैं या नहीं ! मुझे बहलाइए मत ! मैं बहक नहीं सकती।" ईस्थर ने अपना प्रश्न दोहराया।

"नहीं !" डिक ने धीरे से कहा।

"क्या पसंद करते हैं ?"

"अब तो शायद नहीं।"

"और इस वक्त. शराब पिये हैं ?" उसने घृणा से मुँह सिकोड़-कर कहा।

"आज कोई नई बात है। हमेशा से ही पीते आये हैं !"

"अच्छा, अब जाओ" यह कहकर ईस्थर चलने के लिए मुड़ी; लेकिन फिर कुछ याद करके ठिठक गई और बोली—"मुझसे कल सुबह वहाँ टीले पर मिलो।"

"अच्छा।" डिक ने स्वीकृति दी।

ईस्थर ने अंदर जाकर दरवाज़ा बंद कर लिया और डिक बाहर अंधेरे में खड़ा रह गया। मकान की छत और कार्निस और भी काली दिखाई दे रही थीं—बाक़ी निपट अँधेरा और सुनसान था। खिड़की की सेंद में से उजाले की एक पतली रेखा आ रही थी।

डिक जैसा का तैसा खड़ा था और कान लगाकर पत्ते तक के खड़-कने की आवाज़ सुनने के लिए एकाग्र था। तत्काल ही उसे फ़र्श पर एक कुर्सी के खींचे जाने की आवाज़ सुनाई पड़ी, जिससे उसका

कलेजा मुँह को आने लगा और इस आवाज़ से जो मौन भंग हो गया था और कुछ क्षण पश्चात् फिर चारों ओर छा गया।

इसके बाद उस कमरे में क्या हुआ, यह कहने की बात नहीं है। किंतु जब वह सब कुछ समाप्त हो गया, तब कोई आधे मिनट तक ईस्थर का स्वर साफ़-साफ़ सुनाई पड़ता रहा। इस स्वर के बंद होते ही कुछ भारी और लड़खड़ाते-से पैरों की आवाज़ बैठक को पार करके ज़ीने पर चढ़ती मालूम हुई। बेटी ने अपने बाप को बहला लिया था। वॉन ट्रॉम्प उसकी आज्ञा मानकर सोने चले गये—बस इतना ही बाहर खड़े हुए आदमी को मालूम हो सकता था। फिर भी वह कान लगाये खड़ा ही रहा। भय और संताप उसके हृदय में समाया हुआ था। लेकिन अगर ईस्थर अपने पिता के पीछे-पीछे गई होती, यदि उसने प्रकृति और पुरुष के महान् रहस्य की ओर एक पग भी बढ़ाया होता तो डिक को अपने स्थान पर खड़े-खड़े ही यह भी मालूम हो जाता और अगर वह अपनी जगह से हिली भी नहीं, तो अवश्य ही बेहोश हो गई होगी या मर ही गई होगी।

कमरे की घड़ी की 'टिक टिक' बराबर सुनाई पड़ रही थी, किंतु डिक के लिए समय जैसे स्थिर हो गया था। भावी आशंका का आतंक उसके हृदय में छा गया और जब वह और देर तक इस दुबिधा को नहीं सह सका तब वह दो छलाँग मारकर खिड़की से लगकर जा खड़ा हुआ। खिड़की की चिक पूरी तरह से पड़ी नहीं थी, नीचे से कोई इंच भर वह ऊपर उठी हुई थी, इसलिए शीशे में से सारी बैठक का दृश्य स्पष्ट दिखाई पड़ता था। डिक ने देखा—ईस्थर मेज़ पर बैठी है; हाथ पर ठोड़ी टेके हुए और टकटकी लगाये मोमबत्ती की ओर देख रही है। उसकी भौंहों में कुछ बल पड़ रहे हैं और मुँह कुछ खुला हुआ है। वह ऐसी मूर्त्ति-सी बनी बैठी थी कि डिक को लगा वह साँस भी नहीं ले रही है। डिक के आने से वह तनिक भी हिली नहीं थी। फिर घड़ी ने 'टन-टन' कर ग्यारह बजाये। ईस्थर फिर भी निश्चल निर्निमेष दृष्टि से मोमबत्ती

को देखती बैठी रही। बारह बजे और एक भी, किंतु फिर भी वह जैसी बैठी थी, वैसी ही बैठी रही। डिक भी अपनी जगह से नहीं हिला। डेढ़ बजे के लगभग जब मोमबत्ती जलकर समाप्त होने आई तब वह एकाएक तेज़ी से उठी, अपने चारों ओर देखा और मोमबत्ती को फूँक से बुझाकर अँधेरे में ज़ीने पर चढ़ गई।

डिक फिर अँधेरे में रह गया। इस समय उसकी अवस्था उस मनुष्य की सी थी, जो यह सोचकर ख़ुश होता है कि चलो अब तो जितना कुछ भी दुर्भाग्य को करना था, सो कर चुका।

फिर डिक वहाँ से धीरे-धीरे उस टीले की ओर चल दिया जहाँ ईस्थर ने मिलने का वादा किया था। ठीक-ठीक समय तो उसने बताया नहीं था, फिर भी डिक ने सोचा कि जो भी हो, मुझे उससे पहले पहुँच जाना चाहिए।

जैसे ही वह टीले पर पहुँचा, सवेरा हो गया। सूरज भी निकल आया। नन्हीं दूब और ओस को कँपाती हुई हवा की एक लहर भी बह गई। डिक ने सोचा —"इससे और अधिक बुरा दिन मेरे लिए कौन-सा हो सकता है?"

इसी निर्जन स्थल पर उस दिन प्रातःकाल जो डिक ने ईस्थर को अपने आलिंगन में भरकर चूम लिया था और संपूर्ण 'मिलन' का आनंद लिया था, उसी आनंद के लिए वह इस समय फिर तड़पने लगा।

---

## ७

## ईस्थर चल दी

शायद ठीक दस का घंटा बजा था और डिक कुछ देर ऊँघ चुका था, जब ईस्थर सड़क पर एक पोटली लिये आती दिखाई दी। उस निर्जन में आती हुई पगध्वनि को सुनकर वह सचेत हो गया। किंतु पूरी तरह से अपने आपे में आने के लिए उसे कुछ समय लगा। रात का सारा

दृश्य उसकी आँखों के सामने घूम गया। वह अपनी जगह से जैसे उछलकर उठ खड़ा हुआ और अपनी प्रिया से मिलने के लिए भागा। वह उसके समीप तेज़ी से आई। उसका मुख अब भी पीला पड़ रहा था। वैसे कोई चिंता उसके मुख पर दिखाई नहीं देती थी। अपने प्रेमी को नियत स्थान पर पाकर उसने उत्सुकता, संतोष, हर्ष—कुछ भी प्रदर्शित नहीं किया और न अपना हाथ ही उसे दिया।

"मैं तो आ गया!" डिक ने कहा।

"हाँ, ठीक है," उसने उत्तर दिया और फिर बिना रुके और स्वर बदले ही कहा—"तुम मुझे भगा ले चलो।"

"भगा ले चलूँ?" आश्चर्य से डिक ने पूछा—"कहाँ? कैसे?"

"अभी-अभी," उसने कहा—"जहाँ भी तुम्हारा जी चाहे—बस मुझे ले चलो।"

"कब तक के लिए? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।" डिक ने उलझन में कहा।

पर उसने केवल यही उत्तर दिया—"मैं फिर कभी यहाँ लौटकर नहीं आना चाहती।"

बहुत कड़े शब्द यदि शांतिपूर्वक कहे जाते हैं, तो अपना दुगना प्रभाव डालते हैं। डिक परेशान हो गया। जब उसका आश्चर्य मिटा, तब वह संदेह और संशय में पड़ गया। उसने अपनी प्रिया के रूखे व्यवहार को देखा, जो एक प्रेमी को अत्यंत ही हतोत्साह करनेवाला था, और इस व्यवहार से जो विचार उसके मन में उठे, उन पर वश करके, उसने कहा—"क्या मेरे पास रहना चाहती हो, ईस्थर?"

ईस्थर ने जैसे खीझकर कहा—"बस, मैं चाहती हूँ तुम मुझे यहाँ से ले चलो—एकदम ले चलो।"

परिस्थिति उलझी रही। डिक ने अपने मन से ही पूछा कि मेरी प्रिया अपने होश में है भी या नहीं। उसे भगाकर ले जाने, उससे शादी करने और उसे अपने पास रखने के लिए मेहनत करने—इस सबके

लिए वह प्रस्तुत था, पर वह उसकी ओर से प्रेम का कुछ तो प्रदर्शन चाहता था। वह उन ओछे और बेशर्म पुरुषों में से नहीं था, जो अपनी प्रिया से शादी करने के लिए ही सब कुछ उचित-अनुचित और ज़बर्दस्ती सह लें। वह यह चाहता था कि स्वयं नारी को उसके आलिंगन में आकर बँध जाना चाहिए, यदि आतुरता से नहीं तो कम से कम तबियत से ही और ईस्थर का व्यवहार प्रेम की अपेक्षा निराशापूर्ण अधिक था, जिसे देखकर डिक सन्न रह गया और उसे अक़्ल आ गई।

"रानी, बतलाओ न तुम क्या चाहती हो—मैं वही करूँगा। अपना इरादा ठीक-ठीक बतलाओ, तब तो मैं कुछ सलाह दूँ तुम्हें—लेकिन बिना कुछ सोचे-समझे और पहले से तय किये ही यहाँ से चल देना बहुत बड़ा पागलपन होगा और इससे हम लोगों को कुछ भी फ़ायदा नहीं होगा। मैं तुमसे सच्ची बात कह रहा हूँ और फिर भी समझाता हूँ कि तुम्हारा इस तरह भाग चलना अनुचित है और हम दोनों को ही नुक़सान पहुँचायेगा।"

यह सुनकर ईस्थर ने डिक को रोष-भरी नज़रों से देखा।

"अच्छा तो तुम मुझे नहीं ले चलोगे?" उसने पूछा—"तब मैं अकेली ही चली जाऊँगी।"

और यह कहकर वह चल दी, पर डिक ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया।

"ईस्थर! ईस्थर!" वह चिल्लाया।

"मुझे जाने दो—मुझे छुओ मत! मेरे बीच में बोलनेवाले तुम कौन होते हो? मेरा बदन छूनेवाले तुम कौन होते हो?" ईस्थर ने क्रोधित होकर कहा।

उसकी इस तेज़ी से डिक में पुरुषोचित निर्भीकता भर गई। उसने उसकी कलाई पकड़ ली और कहा—"यह तो तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ और तुम्हें प्यार करता हूँ! तुम कहती हो, मैं तुम्हारी सहायता नहीं करना चाहता। पर ज़रा अपने दिल पर हाथ रखकर

तो पूछो। तुम्हीं मुझे परेशान कर रही हो—नहीं बताती कि क्या चाहती हो। देखती नहीं कि रात भर बैठा-बैठा तुम्हारा इतज़ार करता रहा हूँ यहाँ। मैं तुम्हें मना नहीं करता, पर बात मालूम हो तब तो कुछ करूँ कि वैसे ही। और फिर एक बार कहता हूँ कि सोच-समझकर काम करो, लेकिन अगर तुमने हठ ठान ही ली है, तो फिर यही सही। मैं अब तुम्हारी .खुशामद नहीं करूँगा और यहाँ से तुम्हें एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ने दूँगा।"

ईस्थर ने उसे एक नज़र आपादमस्तक निहारा, जैसे उसे परख रही हो, उसकी बात तोल रही हो।

"अच्छा तो मुझे ले चलो," उसने एक ठंडी साँस खींचकर कहा।

"ठीक," डिक ने स्वीकृति दी—"तब मेरे साथ पहले गाड़ीखाने में चलो। वहाँ से मैं फ़िटन ले लूँ और जंकशन चलूँ। आज शाम को ही तुम लंदन में होगी। मैं सब तरह से तुम्हारा ही हूँ; कुछ कहने से ही और ज़्यादा नहीं हो सकता। ईस्थर, मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे यह शक्ति दे कि मैं हर तरह से तुम्हारी भलाई करूँ, तुम्हारे काम आ सकूँ, तुम्हें सुख दे सकूँ।"

यह कहते-कहते ही वे दोनों चलने लगे और कुछ ही दूर पहुँचे होंगे कि डिक ने देखा कि ईस्थर ही अपना हैंडबेग लिये हुए है। डिक के माँगने पर उसने हैंडबेग उसे दे दिया और जब उसने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया तब उसने उसे पकड़ा नहीं और केवल सिर हिलाकर ओंठ चबाने लगी।

धूप खिली हुई थी और बड़ी भली लग रही थी। ताज़ी हवा के झकोरे उनके मुख चूम रहे थे। उनमें जंगल की हरियाली की गंध भरी हुई थी। जैसे ही वे थाइम की घाटी में उतरकर आगे बढ़े कि झरने की 'कल कल, मधुर हँसी की 'खिलखिल' की तरह, उन्हें सुनाई पड़ी। सामने दूर पहाड़ियों की चोटियों पर ढालों की छाया और धूप जैसे आँख-मिचौनी खेल रहे थे। आज इस प्रातःकाल में पृथ्वी, आकाश, जल

और वायु सभी और दिनों से अधिक सुहावने प्रतीत हो रहे थे। विश्व-सौंदर्य की आत्मा ही जैसे वहाँ स्वच्छन्द विचर रही थी।

इस सुहावने दृश्य में होकर ईस्थर चिड़िया की तरह फुदकती हुई चली जा रही थी, लेकिन बिलकुल मौन। उसकी पलकें भारी हो रही थीं। उसे प्रकृति के इस सौंदर्य का ध्यान तो नहीं ही था, पर साथ चलनेवाले अपने प्रेमी का भी कोई ध्यान नहीं था। वह अपने में ही खोई हुई थी। इधर-उधर गर्दन फेरकर भी नहीं देखती थी और नाक की सीध सीधे सड़क पर चली जा रही थी। किंतु जब वे पुल पर पहुँचे, तब वह रुक गई और नीचे बहती हुई स्वच्छ चपल सरिता की ओर झुक-कर देखा और फिर बोली—"मैं तो नीचे पानी पीने जाऊँगी।" यह कह कर वह सीढ़ियों से नीचे उतर गई और नदी के किनारे पहुँचकर चुल्लू भर-भरकर पानी पीने लगी। फिर अपना मुँह धोया। क्षण भर के लिए तो जल की शीतलता से उसकी मलिनता दूर होती मालूम हुई और चलने से पहले उसने अपने सम्मुख क्षितिज को मिनिट भर तक देखा। पुल पर खड़े हुए डिक ने उसके ओठों पर एक विचित्र हर्ष और विषाद की मुस्कान आती देखी, किंतु सहसा ही वह मिट भी गई और फिर उसका मुख वैसा ही उदास और गंभीर हो गया। अभी रास्ता बहुत तय करना था। उधर ईस्थर के हृदय में क्या भावनाएँ उठ रही थीं, सो कोई नहीं जानता। उसने अपने हृदय-कपाट जैसे ताले से बंद कर रक्खे थे और वह बाहर खड़ा-खड़ा उन्हें खुलवाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था।

जब ईस्थर उसके पास लौट आई, तब उसने पूछा—"कहो अब मन कुछ ठीक हुआ?" पूछने को तो डिक ने पूछ लिया, लेकिन इतनी देर की चुप और तनातनी के बाद उसे अपना ही स्वर कुछ ग़ैर का-सा लगा।

उत्तर देने से पहले ईस्थर ने उसे पलक मारने की देर तक देखा और फिर कहा—"हाँ"

इतने छोटे उत्तर से डिक के उत्साह पर फिर तुषारपात हो गया। उसके शब्द उसकी जीभ पर आते-आते ही खो गये। कोई प्रेम-प्रोत्साहन

न मिलने के कारण उसकी आँखें अब ईस्थर की ओर उठने से भी डरने लगीं।

इसी तरह चुपचाप वे दोनों चलते चले गये और नेज़बी हाउस के पिछवाड़े जा पहुँचे। इस सारे रास्ते में ईस्थर आगे-आगे चल रही थी और डिक उसके पीछे-पीछे आज्ञाकारी सेवक की भाँति चला जा रहा था। किंतु जैसे ही वह गाड़ीख़ाने के नज़दीक पहुँचा, क़दम तेज़ करके वह आगे बढ़ गया। वह चाहता तो यह था कि ईस्थर को सड़क पर ही छोड़ जाये, लेकिन उसके खिंचे हुए बर्त्ताव से वह इतना डर गया था कि उससे कुछ भी कहने को उसका मुँह नहीं खुला। फिर वह उसे अपनी नज़र में ही रखना चाहता था, इसलिए उसे गाड़ीख़ाने में अपने साथ ही लेता गया।

फ़िटन तैयार करने का हुक्म पाने पर कोचवान की भौंहें तन गईं और जब तक उसने फ़िटन तैयार की तब तक वे चढ़ी ही रहीं। वहीं आँगन के एक कोने में कुछ मुर्ग़ी के चूज़े दाना चुग रहे थे। ईस्थर अपनी जगह पर खड़ी-खड़ी उन्हें देखती रही। कोचवान ने समझ लिया कि मास्टर रिचार्ड आज कुछ गहरे में हैं; क्योंकि वे हैंडबैग को जादू की तावीज़ की तरह थामे हुए थे और या तो भूले-भूले-से खड़े रहते थे, या फिर इधर-उधर तेज़ी और मुस्तैदी के साथ चहलक़दमी करने लगते थे। इसके सिवा उनके हाथ भी गंदे हो रहे थे; जैसे कहीं से खुदाई करके लौटे हों। यह देखते-देखते कोचवान का मुँह ऐसा लगने लगा, जैसे वह सीटी बजानेवाला हो। और फ़िटन लेकर डिक मुश्किल से गली का मोड़ पारकर सड़क पर पहुँचा ही था कि उसे कोचवान की सीटी सुनाई पड़ी। सीटी का स्वर खिंचा हुआ, धीमा और कँपता हुआ था। इसके बाद कोचवान दौड़कर घर में पहुँचा और वहाँ यह नई ख़बर नौकरों को सुनाई कि मास्टर रिचार्ड एक ख़ूबसूरत छोकरी को लेकर आये थे और फ़िटन पर घूमने गये हैं। और क्योंकि घंटे भर बाद ही मिस्टर नेज़बी खाना खाने बैठेंगे और तब रिचार्ड की तलाश होगी ही, यह सोचकर कोचवान ने पहले से ही अपना पार्ट खेलने की तैयारी कर ली।

इधर ईस्थर की बग़ल में बिठाये और सोच में निमग्न डिक फ़्रिटन को स्टेशन की ओर हाँके लिये चला जा रहा था। उसे लगा कि उसकी प्रिया उससे दूर हट गई है, पर अभी बहुत नहीं—और उसे समीप लाने के लिए प्यार का स्पर्श और दो मीठे बोल ही बस काफ़ी होंगे। फिर भी मुँह खोलने का साहस उसे नहीं हो रहा था और वह चुपचाप बैठा चला गया, लेकिन जब वह बाग़ के फाटक से निकलकर चहारदीवारी के सहारे गली में मुड़ा, तब उससे रहा नहीं गया। उसने सोचा कि जो होना है, सो अभी निबट जाय हमेशा के लिए।

"रानी! क्यों मारे डालती हो मुझे?" उसने अकुलाकर कहा—"मेरी तरफ़ देखो, कम से कम इंसान समझकर ही दो बातें कर लो।"

ईस्थर ने धीरे से अपना मुख उसकी ओर फेरा और देखा। उसकी दृष्टि में कुछ कोमलता थी। अपनी प्रिया के नयनों की यह सुकुमारता देखकर डिक का मन वश में नहीं रहा। उसने तुरत ही घोड़े की रास छोड़ दी और उसका हाथ पकड़कर दबा दिया। ईस्थर ने कोई आनाकानी तो नहीं की, पर उस स्पर्श से वह स्पंदित नहीं हुई और जब डिक ने उसकी कमर को अपनी भुजा में कसकर उसके ओंठ चूमने के लिए अपने ओंठ बढ़ाये—प्यार से प्रेरित होकर प्रेमी की तरह नहीं, बल्कि हताश मनुष्य की तरह जो अपनी इच्छित वस्तु को पाने के लिए प्राणों की बाज़ी लगा देता है—तब ईस्थर छिटककर अलग हो गई और अपना मुख फेर लिया। उसकी भौंहों में गाँठें पड़ गईं और डिक के मुख को उसने अपने हाथ से अलग हटा दिया।

अब तो डिक के लिए संदेह करने को कोई स्थान ही नहीं रह गया। उसे विश्वास हो गया कि ईस्थर मुझसे घृणा करती है।

"तो तुम मुझे प्यार नहीं करतीं?" डिक ने भी उससे अलग हटते हुए कहा, जैसे वह भी उसके स्पर्श से जल गया हो। किंतु ईस्थर ने कोई उत्तर नहीं दिया, और डिक ने फिर अपनी बात स्वर बदलकर दोहराई।

"क्या तुम मुझे प्यार नहीं करतीं? बोलो, बोलो।" उसके स्वर में तीखापन तो था, किंतु साथ ही कुछ करुणा भी थी।

"मैं नहीं जानती—नहीं जानती!" ईस्थर ने उत्तर दिया—"तुम मुझसे यह सवाल क्यों पूछते हो? मैं क्या जानूँ?—कैसे जानूँ? अब तक सब झूठ ही झूठ रहा है—झूठ! झूठ! झूठ!"

डिक "ईस्थर! ईस्थर!" करके चिल्लाया, जैसे उसके शरीर में कहीं कोई बड़ी कड़ी चोट लग गई हो। थाइमब्री जंकशन पहुँचने तक फिर दोनों चुप रहे।

अब दोपहर के साढ़े बारह बज रहे थे। लंदन से आनेवाली गाड़ी अभी छूटी ही थी और शाम को साढ़े-तीन बजे तक कोई और गाड़ी आने-जानेवाली नहीं थी। पौने चार बजे लंदन जानेवाली 'एक्सप्रेस से 'लोकल ट्रेन' का मेल होता था। इसलिए स्टेशन-मास्टर अपने बाग़ में चला गया था, जो स्टेशन से क़रीब आधे मील पर था। एक ख़लासी ने, जो जानेवाला ही था, डिक की फ़िटन ले ली और रात होने से पहले उसे नेज़बी हाउस पहुँचा देने का वादा कर दिया। स्टेशन पर केवल एक बहरा और खुर्राट बूढ़ा डिक और ईस्थर की ख़ातिर करने के लिए रह गया।

फ़िटन के जाने से पहले ही ईस्थर अंदर स्टेशन पर आकर एक बेंच पर बैठ गई थी। उसके सम्मुख दूर क्षितिज तक निर्जन जंगल फैला हुआ था। दो रेल की पटरियों, डिब्बों के खड़े होने के लिए एक टीन के पटाव और तार के कुछ खम्भों को छोड़कर वहाँ उस दृश्य में कोई अन्य वस्तु ध्यान बटानेवाली नहीं थी। तारों के खटकने और जंगल में चिड़ियों की चहचहाहट के सिवा वहाँ और कोई आवाज़ उस सुनसान को भंग नहीं कर रही थी। दोपहरी बढ़ने की वजह से हवा में भी गर्मी बढ़ गई थी और वह धूप के ताप से हल्की होकर सिहरने लगी थी।

डिक ने ईस्थर के समीप पहुँचकर कुछ रुआसी आवाज़ में कहा—"ईस्थर, मुझ पर दया करो न! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? क्या तुम मुझे माफ़ नहीं कर सकतीं? एक बार तुमने प्यार किया था रानी—अब क्या प्यार नहीं करतीं?"

"मैं कैसे कहूँ ! मैं कैसे जानूँ !" ईस्थर का रूखा उत्तर था—"तुम मेरे लिए बिलकुल झूठे हो—शुरू से लेकर आख़ीर तक—बिलकुल झूठे ! जब तुमने पहली बार कहा कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, तभी से तुम मेरे साथ खिलौने की तरह खिलवाड़ कर रहे हो, या मेरी मूर्खता की खिल्ली उड़ा रहे हो ! कौन-सी बात सच्ची है ? क्या इनमें से एक भी सच्ची नहीं है ? दोनों ही झूठी हैं ? या यह सब उपहास किया था मेरा ? मैं सोचते-सोचते थक गई, लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आता और ऊपर से तुम कहते हो 'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ—जान से ज़्यादा चाहता हूँ !' मैंने तो अपने पापा के दोस्त को प्यार किया था। मैंने तुम्हें कभी प्यार नहीं किया। मैं तुम्हें जानती भी नहीं थी तब तक, जब तक कि वह आदमी मेरे घर आया और तभी मुझे पता चला कि मुझे धोखा दिया है तुमने ! मेरे पापा को मुझे वापस कर दो—जो तुम पहले उनके दोस्त थे, वही बन जाओ— तब फिर प्रेम की बातें कर सकते हो।"

"तो इसका मतलब है कि तुम मुझे माफ़ नहीं कर सकतीं या करना नहीं चाहतीं?" डिक ने पूछा।

"तुम समझते नहीं। तुमने क्या क़सूर किया है जिसके लिए मैं तुम्हें माफ़ करूँ ?"

"तो फिर यह तुम्हारा अंतिम निर्णय है ?" डिक ने पूछा। क्रोध के मारे वह उबला पड़ता था, लेकिन उसे रोकने के लिए वह अपने ओंठ चबा रहा था।

"हाँ, यही मेरा अंतिम निर्णय है।" ईस्थर का उत्तर था।

"तब हम लोग अपने को धोखा दे रहे हैं। हम दोनों ही बनावटी हैं। अब एक क्षण को भी हमें साथ नहीं रहना चाहिए।" रोष में भरे हुए डिक ने कहा—"ग़लत या सही, अगर तुम मुझे अब भी प्यार करती होतीं, तो मैं तुम्हें भगा ले चलता और तुमसे शादी करके तुम्हें सुख देता। लेकिन अब—मैं साफ़ कहता हूँ—तुमने जो कुछ कहा है, वह तुम्हारे लिए शर्म की बात है और मेरा अपमान है ! और तुम्हारे पापा

के लिए निर्दयता है। तुम्हारे बाप यह वह, चाहे जो भी हों, फिर भी तुम्हें उन्हें इंसान समझकर उनके साथ भलमन्साहत का बर्ताव करना चाहिए।

यह सुनकर ईस्थर उबल पड़ी—"क्या कहा ? मैं तो उनके लिए अपना मकान और सब माल छोड़ आई हूँ। उन्हें और क्या चाहिए ? उन्हें तो इतना भी नहीं मिलना चाहिए था। मुझे ताज्जुब है उस आदमी के बारे में। मुझसे बातें करने की तुम्हें हिम्मत कैसे हुई ! उन्हें बस माल की परवा है, सो उन्हें मिल गया और अब मैं उनकी सूरत भी नहीं देखना चाहती।"

"मैं तो समझता था कि तुम पिता लोगों में ख़ास दिलचस्पी लेती हो—जैसा कि एक बार तुम्हीं ने ख़ुद अपने मुँह से कहा था।" डिक ने कहा।

"तो क्या आप यह ताना मार रहे हैं ?" ईस्थर ने जवाब तलब किया।

"नहीं," डिक ने उत्तर दिया—"यही तो मेरी बहस है। उन्हें प्यार करने के लिए तुम्हें कोई भी मजबूर नहीं कर सकता। पर उनका अपमान तो मत करो। वे बेचारे बूढ़े हैं और दुखी भी। अपनी बुआ को चिट्ठी लिखो। उनका जवाब आने पर मैं तुम्हें चुपचाप उनके घर पहुँचा आऊँगा। लेकिन तब तक तुम अपने ही घर रहो। तुम्हारे पास पैसा भी नहीं है, इसलिए तुम अपने मन की नहीं कर सकतीं और जो मैं कहूँ, वही करो। और यह विश्वास रक्खो कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ और कर रहा हूँ वह, ईश्वर ही जानता है, सब तुम्हारी भलाई के लिए है।"

ईस्थर ने अपनी जेब में हाथ डाल लिया था और अब उसे ख़ाली निकालकर कहा—"मुझे तुम्हारा भरोसा था।"

"हूँ ! तब तुमने भरोसा तो ठीक किया था !" डिक ने तीव्रता से उत्तर दिया—"मैं तुम्हें थोड़ी देर के लिए ख़ुश करके अपनी और तुम्हारी ज़िन्दगी दुःखी नहीं बना लेना चाहता। और क्योंकि मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता, इसलिए अब इतना सब बहुत हो चुका और अब तुम एकदम घर लौट जाओ।"

"डिक !" वह सहसा चीख़ पड़ी—"शायद मैं—शायद ठीक वक़्त पर—शायद—!"

पर डिक ने बीच में ही टोक दिया—"अब शायद-वायद कुछ नहीं। मैं जाकर फ़िटन लिये आता हूँ। तुम लौटने के लिए तैयार हो जाओ।"

यह कहकर आवेश में भरा हुआ डिक स्टेशन से चल दिया। इस समय उसके मन में ऐसी ही प्रसन्नता थी, जैसी कि कोई अच्छा काम करने पर मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होती है।

पर डिक के शब्द सुनकर जो रोष की चमक उसके नेत्रों और कपोलों पर आ गई थी, वह उसके पीठ फेरते ही विलीन हो गई और उसे जैसे काठ मार गया। पत्थर की मूर्ति-सी बनी वह निश्चल बैठी रही और जब डिक फ़िटन लेकर लौट आया, तब उसमें बैठकर वह पराजित सैनिक की तरह चल दी। इस समय जो दशा उसकी थी उसे देखकर कहा जा सकता है कि उसकी सबेरेवाली दशा बिलकुल स्वाभाविक थी। उसका मुख सफ़ेद पड़ रहा था। आँखें भावना हीन थीं। उधर घोड़ा अड़-अड़ जाता था। उसे पुचकारते-पुचकारते डिक का मुँह थका जाता था। हताश मन वह अपनी दुखी आत्मा का भार लिये बैठा था। उसे अपने चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई पड़ता था। परन्तु इस अँधेरे में रह-रहकर पश्चात्ताप और लालसा की बिजली कौंध उठती थी। अपना प्यार वह खो चुका था—हमेशा के लिए खो चुका था।

घोड़ा चलते-चलते थकने लगा था। ऐसा मालूम होता था जैसे यह रास्ता कभी तय ही नहीं होगा।

ईस्थर और उसकी टेढ़ी नज़रों से वह अब एकदम दूर, बहुत दूर, भाग जाना चाहता था।

जब ईस्थर का घर समीप आ गया, तब डिक का हृदय फिर मचल उठा। डिक ने भावातुर होकर धीमे स्वर में हिचक-हिचककर कहा—"रानी! मैं तुम्हारे प्यार बिना जीवित नहीं रह सकता।"

शाम के चार बजे तक इन दोनों में बस इतनी ही बात चीत हुई। फ़िटन गली से निकल कर ईस्थर के कुटीर के सामने झाड़ी के पास आ गई थी।

ईस्थर अब भी पहले की तरह ही अकर्मण्य-सी रही। डिक ने ही उसे अपने हाथ का सहारा देकर फ़िटन से उतारा और फिर वह जैसे मशीन की तरह ही बग़ीचे में होकर धीरे-धीरे चली और उसके पीछे-पीछे डिक चला। द्वार के समीप पहुँचते ही उसने अपने पिता का पंचम स्वर सुना और सुना उससे भी तीव्र एडमिरल का स्वर। कुछ लड़ाई सी होती मालूम हुई उसे।

——

## ८

## झगड़ा

परसों से खाने के समय मिस्टर नेज़बी डिक को ग़ायब पा रहे थे। आज जब मेज़ पर वे खाने बैठे, तो उन्होंने डिक के बारे में नौकर से पूछा। नौकर ने उत्तर दिया कि वे आये तो थे, लेकिन घोड़ागाड़ी में बैठकर फिर कहीं चले गये। यह सुनकर मिस्टर नेज़बी को कुछ सन्देह हुआ। उन्होंने नौकर से खोद-खोदकर पूछना शुरू किया और सब बातें जान लीं—कि डिक एक लड़की के पास, जो वेल में रहती है, एक महीने से जाया करता है। लड़की का नाम मिस वॉन ट्रॉम्प है। पापा बूढ़े हैं और ख़ुशदिल, लेकिन अपना पैसा हाथ खोलकर मदिरालयों और वेश्यालयों में ख़र्च करते हैं।

"हे भगवान्! उसकी रक्षा करो।" मिस्टर नेज़बी ने कहा—"रात डिक घर नहीं लौटे और आज गाड़ी में किसी जवान औरत के साथ बैठकर चले गये हैं।"

"जवान औरत या लड़की?" मिस्टर नेज़बी ने साश्चर्य पूछा।

"हाँ, सरकार जवान लड़की।"

"क्या उनके पास सामान था?"

"हाँ, सरकार!"

"अस्तबल में जार्ज से कहो कि घोड़ा कसकर फ़ौरन मेरे पास लाये। और तुम इस खाने को उठा ले जाओ।" कहकर मिस्टर नेज़बी बड़ी शान के साथ उठे और बाहर चबूतरे पर जाकर घोड़े की प्रतीक्षा करने लगे।

घोड़ा तैयार होकर आ गया तो उस पर चढ़कर मिस्टर नेज़बी चल दिये।

जब ये वॉन ट्रॉम्प के कुटीर के सामने पहुँचे तब जार्ज ने घोड़ा रोककर कहा—"यही घर है सरकार।"

"क्या! सो कैसे? मेरी ही ज़मीन पर!" वे क्रुद्ध होकर बोले—"यह ज़मीन तो शायद मैंने किसी म' व्हर्टर या म' ग्लाशन को दी थी?"

"मिस म' ग्लाशन उस जवान लड़की की बुआ हैं शायद!" जार्ज ने उत्तर दिया।

"ओह! धोखेबाज़!" मिस्टर नेज़बी ने कहा—"तब तो मैं अपना किराया भी वसूल करूँगा। अच्छा, लो मेरा घोड़ा सँभालो।"

तीसरे पहर का वक्त था, गरमी बहुत पड़ रही थी। एडमिरल खिड़की के पास बैठे थे। उन्होंने मिस्टर नेज़बी को देखते ही पहचान लिया।

मिस्टर नेज़बी ने दरवाज़े पर आते ही अपना चाबुक फटकारा, जिसे सुनकर एडमिरल बड़े रोब से उठे और आदर के स्वर में कहा—"आइए! मिस्टर नेज़बी हैं न! आइए, आइए!"

मिस्टर नेज़बी ने ऐडमिरल को आपादमस्तक घृणा और रोष भरी दृष्टि से देखा।

"आप मिस्टर वॉन ट्रॉम्प हैं न?" उन्होंने अशिष्टता पूर्वक कहा और एडमिरल ने मिलाने के लिए जो हाथ बढ़ाया था, उसकी उपेक्षा की।

"हाँ, वही।" एडमिरल ने उत्तर दिया—"मेहरबानी करके तशरीफ़ रखिए।"

"नहीं, जनाब!" मिस्टर नेज़बी ने कोरा जवाब दिया—"मैं बैठूँगा नहीं। मैंने सुना है कि आप एडमिरल* हैं?"

* समुद्री सेना में सबसे ऊँचा पदाधिकारी।

"नहीं तो जनाब, मैं एडमिरल तो नहीं हूँ" वॉन ट्रॉम्प ने उत्तर दिया, जो इस भेंट के ढंग को कुछ-कुछ समझने लगे थे।

"तब फिर आप अपने को कहते क्यों फिरते हैं?"

"अगर आप माफ़ करें तो मैं नहीं कहता, लोग कहा करते हैं।" एडमिरल ने बड़ी शान से जवाब दिया।

लेकिन मिस्टर नेज़बी पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा--"आप शुरू से लेकर आख़ीर तक झूठ ही रंग जमाते फिरते हैं। यह घर भी आपने बनावटी नाम से लिया था।"

"यह मेरा घर तो नहीं है। मैं तो यहाँ अपनी बेटी का मेहमान हूँ।" एडमिरल ने उत्तर दिया--"अगर यह मेरा घर होता--"

"अच्छा तब क्या होता?" मिस्टर नेज़बी ने कहा।

उत्तर में एडमिरल ने केवल उनकी ओर बड़ी शालीन दृष्टि से देखा।

"देखिए," मिस्टर नेज़बी बोले--"ये सब बातें बेकार हैं, आप मुझे न बनाइए। इस तरह आपको मैं बचने का रास्ता नहीं दूँगा। अब आप समझे कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ!"

"मैं बिलकुल नहीं समझा कि आप बिना बुलाये किसी शरीफ़ आदमी के घर में कैसे तशरीफ़ ले आये।" एडमिरल ने बड़ी सावधानी से कहा।

"मैं यहाँ बाप बनकर आया हूँ।" कहकर मिस्टर नेज़बी ने मेज़ पर चाबुक दे मारा--"मुझे यहाँ आने का हक़ है। मैं दुनियादार हूँ और ऐसे हथकंडे ख़ूब समझता हूँ। मैं इसे सरासर जालसाज़ी समझता हूँ और इसका भंडा फोड़ कर मैं आपको इसका मज़ा भी चखा दूँगा। आप फ़ौरन इस बात का जवाब दें कि मेरे लड़के को आपने कहाँ ग़ायब कर दिया है।"

"हे भगवान्!" वॉन ट्रॉम्प ने अवाक् होकर कहा--"बस अब बहुत हो चुका। तुम्हारा बेटा? भगवान् जाने वह कहाँ है! उसी के पीछे तो मेरी लड़की घर से ग़ायब है। मैं आपसे पूछता हूँ कि मेरी बेटी कहाँ है। यहाँ आपके आने का क्या मतलब है?"

"मैं कितनी बार बतलाऊँ आपको ?" मिस्टर नेज़बी ने चीख़कर कहा—"घोड़ा-गाड़ी में बिठाकर जनाब की शरीफ़ज़ादी मेरे लड़के को कहाँ ले गई हैं ? समझ लें, आप एक बाप से बात कर रहे हैं।"

"आप अपने पिता होने का बड़ा दम भरते हैं, मिस्टर नेज़बी," उन्होंने कहा—"लेकिन आप यह भूल जाते हैं कि पिता तो मैं भी हूँ। अब मेरी समझ में आपकी बात आ गई है और मैं इसी लिए आपसे भी नफ़रत करने लगा हूँ। मैंने सुना है कि आप कोई कारख़ानेवाले हैं, लेकिन मैं तो कलाकार हूँ कलाकार ! मैंने बड़े-बड़े लोग देखे हैं। बड़ी-बड़ी आलीशान दावतें खाई हैं। मैं आप जैसे रईसों और उनकी शान को हिक़ारत की नज़र से देखता हूँ। जाइए अपना रास्ता नापिए।"

यह कहते-कहते एडमिरल चमक उठे !

बस, ठीक इसी समय डिक भी आ पहुँचा। वह बहुत देर से बाहर द्वारी में खड़ा हुआ था और उसकी बग़ल में ईस्थर भी अनमनी-सी खड़ी थी। डिक ने उसका रास्ता रोक रक्खा था और वह बिना आनाकानी किये रुकी खड़ी थी। उसे अंदर की बातें सुनाई तो पड़ती थीं, लेकिन समझ में नहीं आ रही थीं। उधर डिक का मुँह तमतमाने लगा था। क्रोध के मारे उसकी आँखें अंगारे सी लाल हो गई थीं, और उसके होठ फड़क रहे थे। दरवाज़ा भड़ाक से खोलकर और ईस्थर को अंदर लाकर उसने बड़े तपाक से पूछा—"यह सब क्या झगड़ा है ?"

"ये तुम्हारे पिता हैं क्या डिक ?" एडमिरल ने उससे पूछा।

"हाँ, हैं तो।"

"ओह ! समझा—माफ़ कीजिएगा।" वॉन ट्रॉम्प ने कहा।

"डिक !" मिस्टर नेज़बी ने एकाएक चीख़कर कहा—"अभी कुछ बिगड़ा तो नहीं न ? मैं तुम्हें बचाने के लिए भागा चला आ रहा हूँ। चलो, चलो—यहाँ से एकदम मेरे साथ चल दो।"

यह कहकर उन्होंने अपने दोनों हाथ उठाकर डिक को घूरा।

"अपने हाथ अलग रखिए।" डिक ने झिड़ककर कहा, पर गुस्ताख़ी से नहीं; क्योंकि वह क्लेश सहते-सहते चिड़चिड़ा हो उठा था।

"नहीं, नहीं," पिता ने कहा—"अपने पापा से दूर मत भागो। बेटा, मान जाओ और जो कुछ भी सख़्ती मैंने तुम्हारे साथ की है, वह तुम्हारी भलाई के लिए ही तो। बाप कहीं बेटे का बुरा चेत सकता है? सोचो तो सही, मैंने तुम्हें गोद में ले-लेकर पाला-पोसा है और आज इतना बड़ा किया है।" कहते-कहते मिस्टर नेज़बी रुक गये, क्योंकि उन्हें किसी की सुबकी सुनाई पड़ी। डिक तो निश्चल खड़ा सुन रहा था। उन्होंने फिर कहना शुरू किया—"आओ चलो, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, जब तक मैं ज़िन्दा हूँ। मैंने दुनिया बहुत देखी है। मैं बड़ा दुनियादार आदमी हूँ। यह छोकरी तेरा कुछ नहीं कर सकती। इन बाप-बेटियों को कुछ रुपया देकर राज़ी कर लेंगे। बस, तुम चलो अब।"

डिक आगबबूला हो उठा था—"पापा, ज़रा ज़बान सँभालकर बात कीजिए। आप इस लड़की की बेइज्ज़ती क्यों कर रहे हैं!"

"तब फिर तुम्हें अपने बाप और इस बीबी में से एक का साथ देना है।" मिस्टर नेज़बी ने कहा।

डिक तिलमिला गया। ज़ोर से बोला—"उसे क्या कह रहे हैं आप? वह कौन है मेरी?"

धैर्य और सहनशीलता मिस्टर नेज़बी के गुण नहीं थे। वे चीख़कर बोले—"मैंने कहा तुम्हारी बीबी--बीबी! और चाहता तो कहता कि—!"

"यह सरासर झूठ है!" डिक ने धीरे से कहा। फिर कुछ साहस बटोरकर बोला—"मैं—मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ।"

कुछ देर तक सब चुप रहे।

फिर मिस्टर नेज़बी ने काँपती हुई आवाज़ में कहा—"मैं तो यह चला। तुम अपने इन दोस्तों के साथ रहो। मैं तुम्हें बचाने के लिए आया था, पर देखता हूँ कि तुम ख़ुद ही फँसे रहना चाहते हो।

तू मुझे प्यार तो करता ही नहीं था कभी, लेकिन आज तो मेरे लिए काल भी बन गया ! जा, भगवान् माफ़ करेंगे तुझे ! मैं तो जा रहा हूँ ।"

यह कहकर वे तो चले गये और पीछे रह गये तीनों जनों ने गली में उनके घोड़े की टापों की आवाज़ सुनी ।

ईस्थर अभी तक बराबर चुप खड़ी रही थी और अब भी चुप रही ।

एडमिरल ने बीच में दो-एक बार बोलना चाहा था, पर रुक-रुक गये थे । लेकिन अब बोले—"भई डिक, हो तुम बहादुर आदमी ! और यद्यपि मैं तुम बाप-बेटों के मामले में बोलना नहीं चाहता; लेकिन फिर भी यह ज़रूर कहूँगा कि तुमने अपने पापा के साथ कुछ ज़्यादती की !" फिर खिसिर-खिसिर हँसी हँसकर बोले--"पैदा तो तुम बड़े रईस के घर हुए थे, लेकिन आज हमारी ही तरह तुम भी मज़दूर हो । मैं तो यह कहता हूँ कि आदमी को काम करना चाहिए—बस काम ! तुम्हारे हाथ-पैर सलामत रहें और काम करने की तबीयत, फिर क्या है थोड़े दिनों में ही मालामाल हो जाओगे ।"

अब डिक ज़रा अपने आपे में आया । उसने ईस्थर का हाथ पकड़ लिया और उसकी ओर कातर होकर देखा ।

"अच्छा, तब बिदा !" वह बोला ।

"हाँ !" ईस्थर ने उत्तर दिया । उसका स्वर जैसे नितांत शून्य था—उसमें कोई भावना नहीं थी । उसने डिक की ओर देखा भी नहीं ।

"हमेशा के लिए !" डिक ने आगे कहा ।

"हाँ, हमेशा के लिए !" ईस्थर ने मशीन की तरह ही जैसा का तैसा दोहरा दिया ।

"मैं बड़ी मुसीबतों में फँस गया, वरना मैं तुम्हें दिखला देता कि मैं नालायक़ नहीं हूँ और तुम्हें कितना प्यार करता हूँ ! पर यह सब होना नहीं था और मैं सब कुछ खो बैठा हूँ !"

यह कहकर डिक ने उसका हाथ छोड़ दिया, पर बराबर उसकी ओर देखता रहा; लेकिन वह मुड़कर चल दी ।

"ईस्थर! ईस्थर? कहाँ जाती है बेटी? आख़िर इस सब पागलपन का मतलब क्या है?" वॉन ट्रॉम्प ने चिल्लाकर कहा।

"जाने दीजिए," डिक ने कहा और उसे जाते हुए देखता रहा पर उसके मन में कुछ विचित्र-सी अनेक भावनाएँ उठ रही थीं। वास्तव में वह उस परिस्थिति में पहुँच गया था जब कि मनुष्य का दुर्भाग्य सबसे अधिक प्रबल होता है।

"वह मुझे प्यार नहीं करती," डिक ने ईस्थर के पिता से कहा।

"यही तो मैं भी सोचता था; लेकिन मैंने उसे समझा दिया था। डिक, तुम बड़े अभागे हो, डिक! उफ़! इससे मुझे भी उतना ही दुःख हो रहा है, जितना तुम्हें है। मैं तो दुनिया में दूसरों को सुखी देखने के लिए ही पैदा हुआ था। हाय!"

"आप भूलते हैं," डिक ने ज़रा तीखेपन से उत्तर दिया,—"अब तो मैं बिलकुल ग़रीब हूँ!"

यह सुनकर वॉन ट्रॉम्प ने अपनी उँगलियाँ चटकाईं।

"चुप भी रहो!" वे बोले—"हम सबके लिए ईस्थर के पास काफ़ी माल है।"

डिक ने आश्चर्य से एडमिरल को देखा।

"अच्छा, तो अब मैं जाता हूँ।" डिक ने कहा।

"जाते हो? कहाँ?" वॉन ट्रॉम्प ने ज़ोर से पूछा,—"यहाँ से तुम एक क़दम भी नहीं हटा सकते। तुम्हें अब यहीं रहना होगा! और रहकर कुछ धंधा करना होगा। किसी के प्राइवेट सेक्रेटरी होने की कोशिश करो। न हो अख़बार में विज्ञापन निकलवा दो और जगह मिल जाने पर जाकर काम करने लगो और मौज करो। लेकिन जनाब तब तक झूठी शान-शौक़त को ताक़ में उठाकर रख दो और पापा वॉन ट्रॉम्प के पास रोटी खाओ। वे अभी तक दूसरों के सिर खाते रहे हैं।"

"ख़ूब!" डिक ने ख़ुश होकर कहा—"आप सबसे अच्छे रहे।"

"डिक, बेटे" एडमिरल ने आँख मारकर कहा—"तुम अब समझे कि मैं सबसे बुरा नहीं हूँ!"

"तब फिर"—डिक ने कहा और रुक गया; फिर बोला—"लेकिन ईस्थर" और फिर रुककर बोला—"सच्ची बात यह है कि आपकी बेटी आपके पास से भागी जा रही थी—मैं किसी तरह फुसलाकर लौटा लाया हूँ !"

"क्या घोड़ा-गाड़ी में ?" आश्चर्य-चकित एडमिरल ने पूछा।

"हाँ।"

"लेकिन वह किससे डरकर भागी जा रही थी ?"

इस सवाल का जवाब देने में डिक को बड़ी मुसीबत मालूम पड़ी।

"क्यों" उसने आख़िर जवाब दिया—"आप ज़रा कुछ सनकी हैं न।"

"अजी जनाब, मैं उसके साथ ऐसा ही वर्ताव करता हूँ जैसे कोई डिप्टी कलक्टर करता होगा।" एडमिरल ने किंचित् फूलकर कहा।

"अच्छा—लेकिन—आप शराब भी तो पीते हैं।" डिक ने कहा।

"हाँ, मैं तो जब से आया हूँ तभी से समझ रहा हूँ कि मैं इस लड़की की आँखों में काँटे की तरह खटकता हूँ।" एडमिरल ने कहा—"और वैसे मैं कहीं भी चार भले आदमियों के साथ बैठ सकता हूँ—शराब पीकर दंगा थोड़े ही करता हूँ। मैं तुम्हीं से पूछता हूँ कि आख़िर ऐसे कितने बाप होंगे, जो रुपया होते हुए भी मनहूस-सी सूरत बनाये बैठे रहते हों ! अगर वह इसी लिए भागती है तो बला से, भाग जाय।"

"नहीं आप समझे नहीं," डिक ने उत्तर दिया—"उसके भी तो कुछ अपने अरमान—"

"भाड़ में गये उसके अरमान !" वॉन ट्रॉम्प ने चीख़कर कहा—"मैं उसके साथ भलाई करता हूँ और उसका बाप होते हुए भी जो वह चाहती है, कर लेने देता हूँ। दूसरे, मैंने देखा था कि लड़की अच्छी है, इसलिए सोचा कि अब हमेशा के लिए इसी के पास रह जाऊँगा और डिक, मैं तो तुमसे कहता हूँ कि यह लड़की जब तुम्हारी और अपने पापा की सगी नहीं हुई तो और किसी की क्या होगी—यह मर ही जाय तो अच्छा है।"

"पर ऐसी बुरी बात आप अपने मुँह से क्यों कहते हैं?" डिक ने कहा।

"मैंने कभी किसी को नहीं सताया, अपनी बात पर अड़ सकता हूँ; लेकिन किसी को सताता नहीं हूँ!" एडमिरल ने कहा।

"ख़ैर, भगवान् आपका भला करे—मुझे तो बिदा दीजिए।" डिक ने अपना हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ाकर कहा।

एडमिरल ने डिक को रोकने के लिए सभी देवी-देवताओं की शपथें दिलाईं पर वह न रुका। तब एडमिरल ने कहा—"डिक! तुम हो स्वार्थी कुत्ते! अपने पुराने दोस्त एडमिरल को भूले जा रहे हो! तुम उसे अकेला छोड़कर नहीं जा सकते।"

लेकिन डिक फिर भी नहीं ठहरा और किसी तरह अपना पीछा छुड़ाकर वहाँ से थाइमबरी में भागा।

——

## ९

## फिर वही सम्पादक

लगभग एक सप्ताह बाद।

मिस्टर नेज़बी अपने कमरे में विचारमग्न बैठे थे कि ठिगने क़द का मरियल-सा एक आदमी किसी ज़रूरी काम से मिलने आया।

"मिस्टर नेज़बी, इस धृष्टता के लिए क्षमा कीजिए।" उसने कहा—"मैं यहाँ आपके पास केवल अपना कर्तव्य पालन करने के लिए आया हूँ। मैं 'थाइमबरी स्टार' का सम्पादक हूँ।"

मिस्टर नेज़बी ने झुँझलाकर ऊपर नज़र उठाई—"मैं समझता हूँ कि कोई ऐसी बात तो है नहीं कि मेरी आपकी बहस हो।" उन्होंने कहा।

"हाँ, लेकिन मुझे केवल एक बात कहनी है—आपको एक सूचना देनी है। कुछ दिन पहले, क्षमा कीजिएगा हम लोगों के बीच कुछ मतभेद हो गया था......"

"हाँ, हाँ। तब क्या आप माफ़ी माँगने आये हैं?" उन्होंने कड़ककर पूछा।

"नहीं तो, मुझे एक बात बतलानी है। उसी दिन प्रातःकाल आपके सुपुत्र मिस्टर रिचार्ड—

"उसका नाम भी मत लो मेरे सामने!"

"फिर भी मुझे कहना ही पड़ेगा।"

"आप सरासर ज़्यादती कर रहे हैं!"

तब सम्पादक ने कहा—"उसी दिन सवेरे मिस्टर रिचार्ड मेरे पास डंडा लेकर आँधी की तरह पहुँचे। पर उन्होंने मुझे दया करके छोड़ दिया, नहीं तो मेरा कचूमर ही निकाल देते। और अगर आप उन्हें वहाँ आग-बबूला होते देखते तो अवश्य ही आपको अपने पुत्र पर अभिमान होता। मुझे स्वयं वह बहुत पसंद आया था और इसी लिए मैं आपके पास आया हूँ।"

"तो इसका मतलब है कि मैंने उसे ग़लत समझा था?" मिस्टर नेज़बी ने पूछा—"वह अब है कहाँ? बता सकते हैं आप?"

"हाँ, वे थाइमबरी में बीमार पड़े हैं।"

"आप मुझे वहाँ ले चल सकते हैं?"

"हाँ, हाँ।"

"हे भगवान्, वह मुझे माफ़ नहीं करेगा क्या?" पिता ने कहा।

इसके बाद सम्पादक के साथ वे अत्यन्त शीघ्रता-पूर्वक थाइमबरी पहुँचे।

× × × ×

दूसरे दिन चारों तरफ़ यह समाचार फैल गया कि मिस्टर रिचार्ड का अपने पिता के साथ समझौता हो गया है और वे नेज़बी हाउस में वापस लौट आये हैं। लेकिन उनकी तबियत अब भी ख़राब है, और मिस्टर नेज़बी उनकी शुश्रूषा तन-मन-धन से कर रहे हैं। यह समाचार बिलकुल सच्चा था; क्योंकि पिता दिन-रात रोगी की शय्या के समीप बैठे रहते थे और घुल-घुलकर बातें करते थे। और उनके हृदयों पर वर्षों से घिरे हुए अवसाद के बादल कुछ घंटों में ही उड़ गये और उनके हृदय फिर स्वच्छ आकाश के समान ही निर्मल हो गये और मानवता के नाते यह आशा की जा सकती है कि सदैव के लिए।

उन्होंने परस्पर जो अनेक लम्बी-लम्बी बातें कीं, वे देखने में व्यर्थ मालूम हो सकती थीं, किन्तु वास्तव में उनका प्रयोजन उन दोनों के परस्पर समझौते के लिए था।

आख़िर एक मंगल के दिन, जब पानी बरस रहा था, मिस्टर नेज़बी कुटीर की ओर जानेवाली गली में जाते दिखाई दिये।

अपना रोब रखने के लिए वृद्ध सज्जन ने अपनी मुद्रा गंभीर बना ली थी। इसी मुद्रा में वे कुटीर के द्वार पर पहुँचे, जैसे पादरी किसी का मृत्यु-संवाद देने आया हो।

एडमिरल और उनकी लड़की दोनों ही अन्दर घर में मौजूद थे और आगन्तुक को देखकर उन्होंने स्वागत की अपेक्षा आश्चर्य अधिक प्रदर्शित किया।

"जनाब!" उन्होंने वॉन ट्रॉम्प से कहा—"मैंने सुना है कि आपके साथ मैंने कोई बहुत बड़ी बुराई की है।"

ईस्थर के गले में कुछ अटका-सा और उसने अपने हाथों से अपने हृदय को दबाया।

"हाँ, की तो है आपने; बस इतना ही काफ़ी है"; एडमिरल ने उत्तर दिया—"लेकिन मैं आपसे सहूलियत के साथ बातें करने को तैयार हूँ, क्योंकि मैंने सुना है कि मेरे दोस्त डिक से आपकी सुलह हो गई है। लेकिन मैं आपको यह भी बता देना चाहता हूँ कि इस लड़की से भी आपको माफ़ी माँगनी है।"

"लेकिन मैं तो उससे माफ़ी से भी ज़्यादा कुछ माँगने का साहस करना चाहता हूँ।" मिस्टर नेज़बी ने कहा—"मिस वॉन ट्रॉम्प, मैं बड़ी मुसीबत में था, इसलिए तुम्हारे विरुद्ध अगर कोई बुरा शब्द मेरे मुँह से निकल गया हो, तो मैं उसके लिए दिल से माफ़ी माँगता हूँ। तुम्हारे बारे में मैंने अपने बेटे से बहुत कुछ जान लिया है अब, लेकिन वह आजकल बहुत बीमार है; जैसा कि डाक्टरों का ख़याल था, वह अभी तक अच्छा नहीं हुआ है, और मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक तुम हमारी मदद नहीं

करोगी, तब तक उसका बचना मुश्किल है। आओ, उसे माफ़ कर दो। मैं भी तो उससे नाराज़ था, लेकिन मेरी ही ग़लती थी। तुम भी मेरी ही तरह भूलती हो, और अपने सिर्फ़ दो मीठे बोल से तुम मेरी और उसकी जान बचा लोगी और ख़ुद ही सुखी होगी।"

ईस्थर उठकर बाहर की तरफ़ चली; लेकिन दरवाज़े तक ही पहुँच पाई होगी कि रोने लगी।

"ख़ैर, ठीक है," एडमिरल ने कहा—"मैं औरत के दिल को समझता हूँ। अच्छा, तो अब आप मेरा स्वागत स्वीकार कीजिए मिस्टर नेज़बी।"

मिस्टर नेज़बी का जी हल्का हो चुका था। अब वे नाराज़ नहीं हो सकते थे।

"बेटी!" उन्होंने ईस्थर से कहा—"रोती क्यों है?"

वॉन ट्रॉम्प ने प्रस्ताव किया--"अच्छा तो यही है कि यह अभी जाकर उसे देख आये।"

"मैंने अभी तक कहा नहीं," मिस्टर नेज़बी ने उत्तर दिया—"लेकिन यही तो मैं भी कहना चाहता था, क्योंकि इसी में इन लोगों को आसानी से मौक़ा—"

"हाँ, हाँ, यही तो ठीक भी है।" एडमिरल ने अपनी उँगलियाँ हिलाते हुए कहा—"जाओ बेटी, जल्दी से तैयार हो जाओ।"

ईस्थर ने आज्ञा पालन की। कपड़े पहनकर वह डिक से मिलने चली गई।

उसके जाते ही मिस्टर नेज़बी ने पूछा—"कहीं फिर तो नहीं भाग जायगी?"

"नहीं, नहीं, ऐसा तो नहीं," एडमिरल ने कहा—"लेकिन हाँ, है बेशक बड़ी बेतुकी लड़की।"

"लेकिन भई, मुझसे तो ऐसे आदमियों से पटती नहीं।" मिस्टर नेज़बी ने मन में कहा।

और शायद यही कारण है कि आज नेज़बी डॉवर हाउस में पालने में एक नवजात शिशु झूल रहा है और इँगलैंड के समुद्र-तट पर वॉन ट्रॉम्प बड़े ठाट-बाट से रहते हैं और 'थाइमबरी स्टार' की छब्बीस प्रतियाँ प्रति-दिन नेज़बी-हाउस में आती हैं।